

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180946

UNIVERSAL
LIBRARY

GUP-24-44-69-5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/C54B

Accession No. H3080

Author

चोपडा मोहन

Title

बाहे

This book should be returned on or before the date last marked below

वा हे

मोहन चोपड़ा

नव साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली-१

प्रथम संस्करण

१ ६ ५ ६

दो रुपया चार आना

Checked 196६

नव साहित्य प्रकाशन, ६२७६ मुलतानी ढांडा, नई दिल्ली-१ द्वारा प्रकाशित
तथा सूरज मल, ८३६३ सब्जी मण्डी, दिल्ली द्वारा कम्पोज होकर
श्री लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, सब्जी मण्डी, दिल्ली से मुद्रित ।

मोहन राकेश को

जिसके क्रहक्रहों से मैं डर जाता हूँ ।

स्पष्टीकरण--

मेरा ख्याल है इस पुस्तक को पढ़ते समय कई-एक पाठक चौंक पड़ेंगे क्योंकि मैंने कई स्थानों पर साफ़ २ और खरी २ बातें लिखी हैं। मैं जहाँ स्पष्ट कर देना उचित समझता हूँ कि मैंने जान-बूझकर उस भिन्न को परे ढकेल देने की चेष्टा की है जो लेखक के यथार्थ चिन्तन में दीवार बनकर आ खड़ी होती है—और वह भिन्न है स्त्री और पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों में उन चीजों का ब्योरा न देना जो मध्यवर्गीय नैतिकता की दृष्टि से बर्जित समझी गईं हैं। मेरा यह अभिप्राय नहीं कि लेखक अश्लील हो जाए। अगर वह कुछ सुलभा हुआ है तो वह अश्लील हुए बिना ही अपनी कथावस्तु को यथार्थ रँगों में पेश कर सकता है और अगर इस पर भी पाठक चौंक पड़ें तो लेखक को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि नैतिकता का जो रूप आज हमारे सामने है वह भी जरा ऊट-पटांग सा है और हमारे आज के कई-एक कथाकार जो अपने को यथार्थवादी घोषित करते हैं नैतिकता के उस रूप को उघाड़ने की बजाए उस पर पर्दा डालने हैं। जिस हौवे से वे स्वयं डरे २ रहते हैं वही हौवा उन्होंने अपने पाठकों के दिलों पर उतार दिया है !

इस पुस्तक में पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों को लेकर जो चर्चा की गई है उसके पीछे एक विशिष्ट पृष्ठ भूमि है और यह बात समझ लेने पर सुखी और स्वस्थ वैवाहिक जीवन बताने वाले पाठकों को वह चर्चा अखरेगी नहीं, मगर साथ ही उन पाठकों को निश्चय ही पसन्द आएगी जो वैसी ही घृणित परिस्थिति में आ पड़ें हों। इस उपन्यास के पति-पत्नी शरत और श्यामा साधारण होते हुए भी कुछ अंशों में 'प्रतीक' चरित्र हैं क्योंकि वे दोनों विपरीत से आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी कारण उन दोनों का अन्तर्संघर्ष जरा मनोरंजक और नाटकीय हो गया है। दोनों के अन्तर्संघर्ष का

(ख)

अपना २ क्षेत्र है भले ही शरत का श्यामा की अपेक्षा बड़ा हो। शरत सिर्फ पुरुष ही नहीं, सिर्फ पति ही नहीं, वह एक कवि भी है जो वर्तमान 'मेकैनीकल' समाज-व्यवस्था में बुरी तरह तिलमिला रहा है और दुर्भाग्य से वह जिस परिस्थिति में है, इससे छूट नहीं सकता। फिर भी मुझे जितना शरत प्रिय है उतनी ही श्यामा प्रिय है। उनका मनोविश्लेषण करने में मैंने व्यंग्य और संवेदना दोनों से काम लिया है और यह सच है कि अन्ततः श्यामा उसे co-existence का सिद्धांत अपना लेने के लिए विवश-सा कर देती है—लेकिन शरत की जो ट्रजेडी है उसका समाधान? मैंने जान-बूझकर ऊपर वाला वाक्य अपूर्ण रहने दिया ताकि इसके आगे जो प्रश्न चिह्न है वह जितना मेरे दिल में खटकता है, वैसे ही आपके दिलों में भी खटकना शुरू कर दे।

११ अप्रैल १९५६

मोहन चोपड़ा
दयानन्द कालेज, हिसार।

श्यामा देखने में काफी अच्छी थी। उसका कद न तो ज्यादा लम्बा ही था और न ज्यादा ठिगना ही। उसका चेहरा गोल था और रंग खिलता हुआ। शादी के बाद वह कुछ मोटी भी हो गई थी और इस कारण उसकी स्वाभाविक ठोड़ी के नीचे एक दूसरी ठोड़ी बनने की कोशिश में थी। उसकी आंखें काली काली मगर छोटी थी। उसके चेहरे में सब से मासूम चीज उसकी नाक थी जो उसके हाथ के अंगूठे से ज्यादा बड़ी नहीं थी। उसके ओंठ संगतरे की फांकों की तरह थे और सम्भवतः वे उतने रसीले भी हों। बात करते वक्त एक ललित अदा से उसे अपनी गरदन में खम पैदा करना आता था। उसकी कलाईयाँ गोल-मटोल और मांसल थीं और इस पर सुनहरी रंग के बाल थे। उसकी अंगुलियों की पकड़ काफी मजबूत और सशक्त थी। उसके चेहरे पर तीन जगह काले तिल थे। एक तिल उसकी दाईं गाल से थोड़ा ऊपर और आँख से नीचे था, दूसरा उसके निचले ओंठ की बाईं ओर और तीसरा उसी ओंठ के दाईं ओर और ठोड़ी के पास। उसकी आवाज़ कद्रे भारी थी।

रात के ग्यारह हुए थे मगर श्यामा को नींद नहीं आ रही थी। पलंग में लेटे हुए वह बार बार करवटे बदलती थी। कभी वह सूनी छत को घूर घूर कर देखने लगती और कभी अपने पति शरत को जो थोड़े फासले पर स्टडी-टेबल पर झुका हुआ कुछ लिख रहा था। उसके दिल में एक अजीब तरह की खल-बली-सी मची हुई थी। उनकी शादी हुए कुछ मास हुए थे और वह अभी तक शरत के व्यक्तित्व को समझने में असमर्थ थी। वह सिर्फ इतना ही जान पाई थी कि शरत एक आर्टिस्ट है और वह कभी कभी मूड में आकर फिलासफी भी बघारने लगता है। लेकिन उसका हृदय इस तथ्य को स्वीकार करने में बाधें

राजी नहीं होता था कि ऐसा व्यक्ति दूसरों से भिन्न क्यों हो और यह भी कि वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति उदासीन क्यों हो जो एक विवाहित आदमी के लिए अनिवार्य हो जाती है। उसे सहसा महसूस हुआ कि वह अपनी शादी से पहले कभी इतनी पराजित और दलित नहीं हुई थी जितनी अब है !

उसके अर्न्तसंघर्ष में उस समय एक और अजीब तरह की निराशा आ मिली थी... एक ऐसी निराशा जो प्रत्येक स्त्री को सचमुच उस पुरुष से होने लगती है जो वासना के क्षणों में अपनी पराजय मान लेता हो और प्रत्येक बेहूदगी करने पर उतारू हो जाता हो मगर ज्यों ही वह चिन्तन करने लगे तब वह कुछ ऐसी अप्राप्य, दूरस्थ और अजनबी-सी वस्तु बन जाए कि स्त्री उत्कट निराशा से भर कर छटपटा उठती है और तब उसकी चेष्टा होती है कि वह उसे चिन्तन की बुलन्दी से उतार कर और उसकी दूरस्थ गहनता के पर्दे को चाक कर उसे समतल पर ले आए। इस निराशा से भर कर उसने रुष्ट-सी मुद्रा बना कर कहा—

“अब सो क्यों नहीं जाते ? पता नहीं अब तो ग्यारह भी बज चुके हैं।”

शरत ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—

“ग्यारह बज चुके हैं तो फिर क्या हुआ ? ये तो हर रोज़ बजते हैं।”

श्यामा ने उसे अपने पास बुलाने के लिए दूसरा तीर छोड़ा। वह सर्दों की ठिठुरन का अभिनय करते हुए बोली—

“तुम्हे सर्दी लग जाएगी। आज बहुत सर्दी है। मुझे तो लिहाफ़ में भी पाला लग रहा है।”

उसके शब्दों में एक न्योता था जिसे शरत बखूबी समझता था। उसने कविता लिखना छोड़ दिया और वह अचकचाया-सा उसकी तरफ देखने लगा। श्यामा भी बितर बितर मुस्कराती हुई आँखों से उसकी तरफ देख रही थी। शरत के भीतर कहीं निचली तहों में हल्की कुरेदन-सी हुई जो कुछ ही क्षणों में एक फुँगी बनकर उसके खून में दौड़ गई और उसकी रग रग को तड़पा गई। उसकी आँखों के सामने कुहासा-सा छा गया और वह श्यामा के पलंग के पाम इस अंदाज से चला आया जैसे नींद में चल रहा हो। वह उसके साथ

जा बैठा । थोड़ी देर बाद श्यामा उसके बाजू पर छुटकी काटती हुई बोली—

“तुम तो मुझे खा जाओगे ?”

शरत ने तमक कर उत्तर दिया—

“खाती तो स्त्री है पुरुष को ! सभी फिलासफ़र यही कहते हैं ।”

“यह झूठ है ।” श्यामा ने हँसते हुए उत्तर दिया ।

“शायद !”

“और क्या कहते हैं तुम्हारे फिलासफ़र ?” श्यामा उसे उकसाते हुए बोली । वह अपने बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहती थी ।

“कहते हैं वासना स्त्री की आवश्यकता है और पुरुष की कमजोरी !”

श्यामा ने उत्तर दिया—

“अब तो तुम्हें कोई एतराज नहीं होना चाहिए ।”

“किस बात का ?”

“तो तुम मानते हो न वासना पुरुष की कमजोरी है ।”

शरत खीझ-सी महसूस करते हुए बोला—

“हां मगर स्त्री की आवश्यकता !”

वह उसके बालों में अंगुलियाँ फेरने लगा । श्यामा ने उसे अपनी बांहों में भर लिया और प्रतिहिंसा से भर कर उसके ओठों का चुम्बन लिया जो व्यग्र से भर कर उसके विश्रवामों का उपहास उड़ाया करते थे । उसने उसकी आँखों को चूमा जो क्रोध से भर कर बड़ी ही डरावनी हो जाती थी । उसने उसकी आँखों की भ्रवों को चूमा जो तिरस्कार से तन कर खड़ी हो जाती थीं । उसने उसके समूचे वजूद को अपनी बांहों में भर लिया जो उसके चिन्तन के क्षणों उसके लिए रहस्यमय और अप्राप्य-सा हो जाता था ।.....

कुछ देर बाद शरत उपेक्षा से उस से परे हट गया और ऐसी खोयी खोयी नजरों से श्यामा को देखने लगा जैसे वह उसे बिल्कुल न जानता हो जैसे वह किसी अजनबी को घूर घूर कर देख रहा हो । उसकी हालत बड़ी ही विचित्र थी । वह अपने ओठों पर जमे हुए थूक को अपनी कमीज की आस्तीन से पोछता हुआ बोला—

बाहे

“कई लोग कहते हैं वासना सुख है मगर एक क्षण ऐसा होता है जब वह राख हो जाती है।”

श्यामा की मानसिक स्थिति काफी शांत थी। शरत का तीखा व्यंग्य सुन कर भी उसे खीझ या झुल्लाहट नहीं हुई। वह बहुत ही नम्र लहजे में बोली—

“अब सो जाओ। नींद तो आ रही होगी तुम्हे?”

शरत अपने को कोसता हुआ बोला—

“मैं कितना बेवकूफ हूँ!”

“क्यों?”

“मैं बहुत अच्छी कविता लिख रहा था। अब मेरा ख्याल है उसे कभी पूरा नहीं कर सकूँगा।”

“कल कर लेना।”

शरत ने उत्तेजित होकर कहा—“कल? वह कल आज से भिन्न नहीं होगा। कल भी दफ्तर की फाईलें होंगी, बेतुकी बातें होंगी और तुम्हारी शरपिंग होगी! मेरा ख्याल है मेरी जिन्दगी में ऐसा कल नहीं आएगा जिसे मैं अपने ढंग से बिता सकूँ और जिसमें कुछ जी सकूँ। मेरे लिए जिन्दगी अब यही है कि मैं हर रोज़ अतीत की झूठन बेलता रहूँ।”

श्यामा ने उत्तर देना उचित न समझ अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसने सोचा शरत खुद ही बकभक कर चुप हो जाएगा।

शरत ने बत्ती बुझा दी और अपने पलंग पर आ लेटा। वह भी चाहता था कि सो जाए और भूल जाए.....।

एम० ए० कर चुकने के बाद जब शरत सैक्रेट्रियेट में एसिस्टेंट हो गया । लाला सुख दयाल जो वहाँ ग्रैंडर सैक्रेट्री थे शरत की सूरत और सीरत को देखकर रीझ से गए थे और एक दिन उन्होंने शरत को एकांत में बुलाकर उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की थी और उसे अपनी लड़की श्यामा से ब्याह करने के लिए राजी कर लिया था । वैसे उनके अपने वर्ग में लड़कों की कमी नहीं थी मगर उनके दहेज के तकाजों इतने बड़े होते थे कि लाला सुख दयाल अपनी मासिक तनख्वाह का प्रयाप्त अंश शराब और क्लबों में गँवा कर इतनी पूँजी जमा नहीं कर पाये थे कि वह उन तकाजों की पूर्ति कर सकते । अपने अनुभव की पैनी दृष्टि से उन्होंने शरत के अन्दर एक भावी उच्च अफसर हो जाने की सम्भावनाओं को ताड़ लिया था और शरत ने उस प्रस्ताव को इसलिए मजूर किया कि बहुत ही भद्र होने के कारण उसके लिए सिवाय ब्याह के और कोई भी दूसरा रास्ता नहीं था जिससे वह किसी औरत का संपर्क पा सके । तब तक उसके जीवन में किसी भी युवती का प्रवेश नहीं हुआ था क्योंकि वह बेहद शर्मीला था । वह छायावादी कवियों की तरह स्त्री को वस्तु-जगत की नहीं बल्कि भाव-जगत की चीज समझता था । यही वजह थी कि जो 'दो-चार युवतियाँ उसकी तरफ खिंची आईं', वे उसे प्रेम करने की बजाए श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगीं । यह तो उसकी बदकिस्मती थी कि तब तक उसका किसी भी ऐसी युवती से सामना नहीं हुआ था जो उसकी भूलों को सुधार देती और उसकी मनगढ़ंत कल्पना की तस्वीर पर अपने यथार्थ की स्याही पोत देती । यह सच बात है स्त्री अपनी तरफ से अपना रहस्य खोलना नहीं चाहती मगर जो आदमी उसके रहस्य को खोल देता है वह उसके आगे माथा टेक देती है

और जो ऐसा नहीं कर पाता और उल्टे उस रहस्य को अपनी कल्पना से बोझ बना देता है तब स्त्री उत्कट खीझ से भर कर उसे श्रद्धा की नजर से देखने लगती है। यही ट्रेजेडी शरत के साथ हुई थी ! वह बेहद शरीफ़ था। लेकिन छः महीने पहले जब उसे नौकरी मिली और नौकरी मिलने के थोड़े दिन बाद शादी का प्रस्ताव आया, स्त्री के बारे में उसका दृष्टिकोण कुछ हद तक वास्तविक हो गया था। वह भी ब्याह चाहता था। वह अपने व्यक्तित्व की सीमाओं को समझता था और उसके भीतर वह वासना भी थी जिसे उसने कई सालों से उपेक्षित रख छोड़ा था लेकिन उन दिनों वह पूरे वेग के साथ मचलने लगी थी भले ही अब वह वासना फुसफुसी और बे-मजासी हो गई थी।

वे दिल्ली शहर के उस हिस्से में रहते थे जो सब्जी मंडी के नाम से प्रसिद्ध है। चूँकि शरत शरणार्थी था इस कारण उसने अपनी शादी से पहले ही इस जगह एक तीन कमरों वाला फ्लैट अलाट करवा लिया था। यह फ्लैट दूसरी मंजिल पर था और इसमें एक छोटा-सा सेहून भी था जो गर्मियों में सोने के काम आता था और सर्दियों में धूप सेकने के। इस मुहल्ले में अधिकांश शरणार्थी ही रहते थे। शरणार्थी परिवारों के मर्द लोग तो दिन भर अपने छोटे-मोटे कामों में व्यस्त रहते मगर उनकी औरतें बाहर गली में चारपाइयाँ डालकर या दरवाजों की दलीजों पर पीड़ियाँ रखकर चरखा काततीं और सूत के टेरन घुमाया करतीं। वहाँ दिन भर छाबड़ी व खोंचे वालों का ताँता लगा रहता और बच्चों का रीरियाना व शोर एक सैकण्ड के लिए बन्द नहीं होता था। श्यामा जिस दिन से यहाँ आई थी बहुत ही छटपटा रही थी। उसे ऐसा महसूस होता जैसे वह कश्मीरी गेट की सुहावनी फ़िजा से निकाल कर कैद में डाल दी गई हो। वाकई इस जगह एक अजीब-सा शोर था और एक ऐसी तल्खी थी जो रूह को बेचैन करने लगती थी। यह वहम भी उसके दिल में बैठता जा रहा था कि यहाँ आकर उसका स्वास्थ्य 'दिनोदिन' गिरता जा रहा था।

यहाँ रहकर शरत ने जो दोस्त बना लिये थे, वे भी श्यामा को पसंद नहीं थे। जहाँ भर की धूल अपने पैरों से घसीट कर उन्होंने उसके कीमती कालीनों और सोफों का सत्यानाश कर डाला था। वे शरत से रुपये और कपड़े ले जाते और वापिस करने का नाम नहीं लेते थे। वे बेतिहाश सिग्रेट फूँकते, क़हक़हे उछालते और शैतान की आंत-सी लम्बी बहसों में उलझ जाते। वे थे भी बाहें

ऊटपटांग किस्म के ! वे न सिर्फ अपनी शकलों से ऊटपटांग दिखाई देते, उनकी आदतें भी अपनी मसाल आप थी । सुखदेव जिसे शरत काफी मानता था और उसे आर्टिस्ट कहा करता, बहुत मोटा था । जब वह हँसता तो उसके गले से लटक रही मांस की थैली अजीब ढंग से फुदका करती । उसकी हँसी की आवाज़ 'हैं-हैं' से शुरू होकर कहकहे तक पहुँचते पहुँचते गुर्राहट में बदल जाती । वह अपने चेहरे से ज़रा भी सम्य दिखाई नहीं देता था । शरत का दूसरा दोस्त कामरेड दीदी था । उसका वास्तविक नाम क्या था श्यामा को आज तक मालूम नहीं हो सका था । वह लँगड़ा था । जब वह हँसता तो ऐसे लगता जैसे कही धमाका पैदा हुआ हो । वह शरत को पढ़ने के लिए अजीबोगरीब किताबें दिया करता जिनके नाम एक दम क्रांतिकारी होते और ऐसे नाम श्यामा ने आज तक नहीं सुने थे । शरत का तीसरा दोस्त बाजारी पेंटर था । उसका नाम बनवारी था । उसके लम्बे लम्बे बालों के पट्टे उसकी गद्दी तक आते थे और उसके मुह पर चेचक के बेशुमार दाग थे । श्यामा ने देखा था इन में एक भी ऐसा नहीं था जिसे कपड़े पहनने या सम्य ढंग से बात करने का सलीक़ा आता हो । सुखदेव खुला-सा पाजामा और बंगाली अंदाज़ का कुर्ता पहनता था । कामरेड दीदी के पास एक पुरानी पैट-सी थी, उसके बूटों के जबड़े हर चौथे रोज़ खुल जाते थे । पेंटर बनवारी पोशाक के मामले में और भी ज्यादा ऊटपटांग था । वह पाजामे के साथ फौजी जैकेट पहनता था, जो सम्भवतः उसने किसी कबाड़िये की दुकान से खरीदी थी ।

इनके अलावा शरत का एक दोस्त और था कैलाश ! जिसे श्यामा ने आज तक ज़रा भी पसन्द नहीं किया था हालांकि वह बहुत अच्छे कपड़े पहनता था । क्नाटप्लेस में फ्लैट लेकर रहता था और चुस्त लहज़े में अंग्रेजी बोलता था । श्यामा समझ गई थी इस व्यक्ति ने अपने को नैतिक रूप से गिरा लिया है । शरत जब कभी उसे मिलने के लिए क्नाटप्लेट जाता, कभी ऐसा नहीं हुआ था कि कैलाश उसे अपनी जेब से बीयर या विसकी न पिलाए और श्यामा इस करतूत के लिए उसे क्षमा नहीं कर सकती थी । उसने यह भी सुन रखा था कि कैलाश की कई-एक सहेलियाँ हैं जिनके साथ उसका रोमांस था !

पौथे रोज़ जब शरत कैलाश को मिलने के लिए कनाटप्लेस गया तो उस बक्त शाम ढल रही थी। वह बेहद खुश था और उसके ओठ जो पहले अन्त-चुभन से भिचे हुए रहते थे इस समय चौड़ी सजीव मुस्कान से फैल गए थे और वह अपने वातावरण को ऐसी स्नेहशील नज़रो से देख रहा था जैसे वह वहाँ पहली बार आया हो और इसका पूर्ण परिचय जान लेना चाहता हो। हालांकि वही दुकानें थी, वही बरामदे थे और वही लोग थे। स्त्रियों की साड़ियों का अंदाज़ भी वही था, लिपस्टिक का रंग भी वही था, मदों की टाईयों की गिरह भी वही थी और उनके कालरों की स्टार्च भी वही थी जिन्हें वह कई बार देख चुका था। लोग बरामदों में निरर्थक चक्कर लगा रहे थे। वह भी उनमें जा मिला। बिजली के तेज़ कमकमे, लश-लश करती हुई राजसी दुकानें, खुशबुओं के भभाके, नपी-तुली मुस्कराहटें और उन्मत्त-सा शोर...यह सब शरत को विचित्र-सा लगा। कोई खूबसूरत-सा चेहरा बिजली की तेज़ी के साथ उसकी आँखों को चौंधाता हुआ गुजर जाता या उसका कंधा किसी हुसीना के कंधे से छिल जाता और तब बहुत ही शोख 'एक्सयूज मी' के स्वर!.. बरामदों के बाहर गुलाकार सड़क पर हरी-नीली रौशनियों के साए में दौड़ती हुई कारों के समूह, प्रकाश के चित्ते और गतिमान परछाईयाँ... ये भी आज शरत को विचित्र-से लगे। वह पूरा चक्कर लगाकर फिर उसी जगह आ गया जहाँ से वह चला था। वह सिंधिया-हाऊस की ओर जाने लगा। चौराहे के पास आकर उसे एक-दो मिन्ट के लिए रुक जाना पड़ा क्योंकि कारों और बसों की एक लम्बी-सी कतार उसके सामने थी और बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता सरक रही थी। फिर चौराहे के एक कोने से लाल रंग बाहें

की बत्ती जल पड़ी और वह सड़क को पार करके दूसरी तरफ चला आया । वह अभी कुछ कदम आगे गया ही था कि सामने से कैलाश आता दिखाई दिया । उसके दाएं हाथ में 'श्री कासल' सिग्रेटों का टिन था और दूसरे में कोई पुस्तक थी । उसने मिलते ही शरत के वैवाहिक जीवन पर हल्का-सा कटाक्ष किया—

“आज अकेले ही घूम रहे हो ? तुम्हें अपनी जिम्मेवारियों का एहसास होना चाहिये ।”

शरत ने उसके हाथ से सिग्रेटों का टिन छीनते हुए कहा—“मैं तुम्हें ढूँढ रहा था । यह पुस्तक कैसी है ?”

‘बायरन की डान जूआन ! मेरा ख्याल है अंग्रेजी कवियों में शैक्सपीयर को छोड़ अगर कोई पुरुष कवि हुआ है तो वह बायरन है । भई मैंने पूछा था आज अकेले ही घूम रहे हो ? क्या बीबी से कोई फतंगड़ हुआ है ?”

शरत ने ज़रा मुस्करा कर उत्तर दिया—“भगड़ा-फतंगड़ तो चलता ही रहता है आज वह अपने पिता के घर गई है ।”

कैलाश ने परिहास किया—“भई ये रोज-रोज के फतंगड़ अब खत्म हो जाने चाहिएँ, नहीं तो तुम तबाह हो जाओगे ।”

“मैं तबाह हो चुका हूँ । मेरी कृतित्व-शक्तियों को कोढ़-सा लग गया है ।”

इस पर कैलाश जोर जोर से हँसने लगा ।

शरत ने ज़रा बोखलाए हुए स्वर में पूछा—“क्यों-क्यों ? इसमें हँसने की कौन-सी बात है ?”

कैलाश ने उत्तर दिया—“हम ने आज कल प्रेमियों का प्रलाप सुना था । पतियों का नहीं । और पतियों का प्रलाप एक बहुत ही बेहूदा-सी चीज़ है ।”

शरत सिग्रेट जलाकर और जानबूझ कर अपने पर व्यंग्य करता हुआ बोला—“पति का प्रलाप बेहूदा-सी चीज़ है...मैं जानता हूँ ऐसा क्यों है ?”

“क्यों ?”

“मेरा ख्याल है ब्याह जैसा छिलछिला और सस्ता-सा अनुभव और कोई

नहीं हो सकता ।”

“भई शरत इतनी शिद्दत से मत सोचा करो । बीमार पड़ जाओगे । चलो किसी जगह बैठें । बरामदे में इस तरह खड़े होकर सभ्य आदमियों का रास्ता रोकना ठीक नहीं ।”

शरत ने ज़रा खुलते हुए कहा—“मैं इन लोगों में नहीं हूँ ।”

वे मैट्रो में चले आए । सीड़ियाँ चढ़ते वक्त शरत को एकबारगी ख्याल आया कि वह फिर उन्ही लोगों के मध्य बैठने जा रहा है जिनके साथ वह कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहता । परिस्थिति की विवशता ने उसे गेजेटिड आफ्रीसर बना दिया था...मगर न मालूम क्यों अपने आर्थिक वर्ग के लोगों से मिलते वक्त उसे विचित्र जुगुप्सा-सी होती थी और वह बोर-सा महसूस करने लगता था । वहाँ कैब्रे हो रहा था । आरकैस्ट्रा पर कोई हवाई धुन चल रही थी । चन्द ही मिन्टों के अन्दर शरत ने एक बीयर की बोतल खाली कर डाली । कैलाश कैब्रे में शरीक हो गया । उसने बाल-डांस के सब पैतरे सीख रखे थे और वह एक अपूर्व कुशलता से अपनी टांगों को मटका सकता था । शरत ने देखा था कैब्रे के वक्त प्रत्येक युवती की यही खाहिश होती थी कि कैलाश ही उसका पार्टनर हो क्योंकि उसकी कमर में हाथ डालकर नाचने का कैलाश का अपना ही विशिष्ट अंदाज़ था । इनमें कई एक तो एंग्लो-इंडियन युवतियाँ थीं जो रंग-बिरंगे स्कर्ट पहने क्लबों या होटलों में आती थीं और जिन की तल्व-मीठी चुस्कियाँ ले लेकर अंग्रेजी में गिटमिट करती थीं । इनके इलावा कई-एक अघेड़ उम्र अफ़सरो की युवा पत्नियाँ थीं जो संभवतः अपने कामुक जीवन से संतुष्ट नहीं थीं । इस समय उसे कैलाश का थिरकना बहुत अच्छा लग रहा था । वह उसे अपनी तुलना में रख कर परख रहा था... वह कितना स्वतन्त्र है । उसे जीविका कमाने का फ़िक्र नहीं और न भविष्य की चिंता है । उसके पास मृत पिता द्वारा छोड़ी हुई लाखों की पूंजी है और कितनी विचित्र बात है, वह चाहता है कि इस पूंजी को एयाशी में फूँक कर मुक्त हो जाए और साधारण लोगों की तरह जिन्दगी व्यतीत करे । यह सोचकर शरत किंचित श्रद्धा से उसकी तरफ़ देखने लगा । कैलाश की बाहों

बाहें

में अब दूसरी युवती थी । धीमी-धीमी रौशनी होने के कारण वह उस युवती का चेहरा नहीं देख सकता था । उसने बीयर की दूसरी बोतल मंगवाई और जब इसे आधी पी चुका और उसे उन्माद की एक विचित्र हिलोर-सी आई तो उसे महसूस हुआ वह अपने वातावरण से कहीं बहुत ऊपर उभरने लगा है, इस से दूर हटकर किसी धुंधली-सी फिज़ा में तिरोहित होने लगा है । आरकैस्ट्रा के स्वर सागर-तट से टूटती हुई फेन के से अस्फुट सुनाई देने लगे । लोगों के चेहरे और भी धुंधले पड़ गए और सामने छोटे-से दायरे में घूमने हुए जोड़े झिलमिलाती हुई परछाइयों से अधिक भर नहीं थे । शायद एक घण्टा बीत गया । बीयर का उन्माद टूटने लगा और इसके टूटते ही शरत के भीतर खिन्नता-सी पैदा होने लगी और उसे महसूस होने लगा कि वह गलत जगह पर आ गया है...वह गलत आदमियों के बीच घिरा हुआ बैठा है और इस वातावरण में एक ऐसी विजड़ता है जो दम घोटने वाली है । ये हसियों के छनाके और कहकहे भूठे हैं...ये चमकदार पेंडुलियों की नुमायश भी भूठी है और सिक्कों के इवज़ खरीदी हुई यह मोहर बन्द बोतलों की मस्ती भी भूठी है । उसकी नज़रें आसपास बँटे हुए लोगों के चेहरों पर पड़ी । अब वह उनके चेहरों को देख सकता था और मद्धिम रौशनी के बावजूद उनकी भंगिमाओं को पढ़ सकता था । उन चेहरों पर एक अजीब-सी मनहूसियत थी जो भूख और घृणा से पैदा होती है ..उनके ओंठों पर एटीकेट के वही घिसे पुराने शब्द थे जिन्हें छोटे सिक्कों की तरह बार बार उछाला जाता था और रौंघा जाता था और वे सब एक तरह से विवश थे ..और वे लोग अपने-अपने वर्तमान के कठोर लोह के हाथों में जकड़े हुए थे । शरत सोचने लगा उसकी आर्थिक या सामाजिक स्थिति कैसी भी हो वह इन लोगों का जीवन-मान कभी स्वीकार नहीं करेगा चाहे उसकी पत्नी श्यामा उसका जीना दूभर कर दे यह नौकरी जो श्यामा के पिता ने उसे अपने रसूख से दिलवाई है वह किस दिन इस से अस्तीफा दे देगा.. इस नौकरी का एहसास एक तरह की मेख है जो उसके सीने में पेवस्त हो चुकी है । उसे इस मेख को निकाल देना चाहिए वह भूभूते-भूभूते टूट जाएगा मगर समझौता नहीं करेगा ।

जब कैब्रे खत्म हुआ तो कैलाश उसके पास आ बैठा और वह अपनी गीली नजर उस पर डालता हुआ बोला—“अब तबीयत तो ठीक है ?”

“कैलाश” शरत कहने लगा—“समझ नहीं आता मैंने उस औरत से शादी क्यों की ? हम दोनों में सिवाए शारीरिक असमानता के और कोई चीज भी समान नहीं । वह बिल्कुल व्यवहारिक-सी औरत है और इस कोशिश में है कि मुझे भी अपने जैसा बना ले । यह ठीक बात है इसके लिए वह मेरे से ज्यादा तर्क भी नहीं करती । मैं ही उसे तर्क में उलझाने की कोशिश करता हूँ । अपने आदर्शों को लेकर उसे लम्बे-चौड़े उपदेश देता हूँ और वह औरत चुपचाप सुनती रहती है और कई बार तो वह बहुत ही विनम्र हो जाती है । मुझे उसकी विनम्रता से खोफ आता है । वह सम्भवतः चाहती है कि वह इस विनम्रता की आड लेकर मेरे दिल में घुस जाए और फिर इसे धीरे-धीरे कुरेदना शुरू कर दे । वह मुझे आमूल सुधार देना चाहती है ।”

कैलाश ने उसे टोक कर अपने व्यंग्य का तुन्का जोड़ा—

“सुधार ? यह तो हर औरत चाहती है ।”

शरत उसके उत्तर से जरा उत्साहित हो कर बोला—“वह चाहती है कि मैं अच्छे से अच्छे कपड़े पहनूँ, क्लब जाया करूँ, अफसर लोगों के साथ मेल-जोल रखूँ और दूसरे चौथे रोज़ टी-पाटियों वा रात्रि-भोजनों का प्रबन्ध किया करूँ क्योंकि वह समझती है, मेरी पोजीशन वाले सभी इसी ढंग से रहते हैं । जब मैं दफ्तर से लौटता हूँ वह मेज़ पर चाय सजाकर मेरी प्रतीक्षा किया करती है फिर वह चाहती है कि मैं उसके साथ सैर करने या शॉपिंग करने जाऊँ । वह नहीं चाहती कि मैं कुछ लिखूँ या पढ़ूँ क्योंकि मेरी पोजीशन वाले लोग ऐसा नहीं करते । वे शाम को क्लबों में चले जाते हैं और वहाँ जाकर रम्मी या ब्रिज खेलते हैं और अपनी पत्नियों के साथ स्कवैश पीते हैं और मेरा विश्वास है वे अपनी जिन्दगियों से पूर्णतः संतुष्ट हैं हालांकि वे लोग सिरफ़ कल या परसों वाली चीजों को दोहराते चले जाते हैं और उनके लिए सिरफ़ इतनी ही नवीनता होती है कि वे अपने लिए कोई नया सूट या साड़ी बनवा लें या नया स्कैंडल सुन लें या कोई नई पिक्चर वगैरह देख लें...और इस सब बाहें

के बावजूद भी वह और चाहती है कि मैं इस कठघरे में बन्द हो जाऊँ और घुट-घुटकर मर जाऊँ। वाकई इस से मेरा कितना सुधार हो जाएगा...।”

शरत कहता-कहता रुक गया। उसके ओंठ आत्म-कुढ़न से भिच गये थे। वह और भी उत्तेजित होकर बोला—“कैलाश ! मुझे तुम सब लोगों से नफ़रत है।”

कैलाश ने पूछा—“क्यों ?”

“तुम्हारे जैसे लोगों ने जिन्दगी की तस्वीर को कितना कुरूप बना दिया है। तुम लोगों ने पूजा और शक्ति के वे चमत्कार पैदा किये हैं कि हम जीना चाहते हैं मगर नहीं जानते जिया कैसे जाए ? हम अपनी इच्छाओं के मार्ग पर स्वच्छंदता से चल नहीं सकते। तुम लोगों ने हमारे दिलों के प्रकाशमान सत्य को छीन लिया है।”

“शरत तुम इतनी शिद्दत से मत सोचा करो। बीमार पड़ जाओगे। तुम बिल्कुल सिनिक होते जा रहे हो।”

“हाँ मैं सिनिक हूँ।”

“तो चलो कहीं भोजन कर लें। अपने मन का उबाल तुम खाने के बाद निकाल लेना।”

“अब मैं कुछ नहीं खाऊँगा। घर जाकर सिरफ़ सो जाना चाहता हूँ।”

“तो उठो। मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में छोड़े आता हूँ।”

शरत उठ खड़ा हुआ और कैलाश के पीछे पीछे चलने लगा।

घर आकर उसने देखा श्यामा अपने पिता के घर से लौट कर अभी नहीं आई थी। उसने मंहु से खाना मांगा और कपड़े बदल कर स्टडीटेबल पर आ बैठा और जो कुछ उसके मन में आया लिखता रहा।

कोई एक घण्टा बाद श्यामा भी आ गई। शरत ने पलकें उठाकर निमिष भर के लिए उसकी तरफ देखा मगर कुछ बोला नहीं हालांकि वह भीतर ही भीतर कुछ बोलने के लिए छटपटा रहा था। उसके हृदय का कुछ अंश बड़ा ही अपराधी, पापी और लज्जित-सा महसूस कर रहा था। मगर वह चुप रहा और सकुचाई नजरो से श्यामा की क्रियाओं को देख रहा था। वह कपड़े बदल रही थी। कपड़े बदल चुकने के अनन्तर वह अपने पलंग में जा लेटी। बीस मिनट गुजर गए। शरत अपने भीतर एक सिहरन-सी महसूस करता हुआ उसके पलंग के पास आ गया और नमी से उसका कन्धा छूते हुए बोला—“श्यामा।”

“क्या ?” श्यामा की आवाज में इस प्रकार की ध्वनि थी जैसे वह अभी तक जाग रही थी और शरत द्वारा छेड़े जाने की प्रतीक्षा में थी। जब शरत आगे कुछ बोला नहीं तो वह खीझ से बोली—“मुझे छेड़ना मत। आज मैं अस्वस्थ हूँ।”

शरत के आत्म-सम्मान को धक्का-सा लगा। अगर कोई और अवसर होता तो वह उसी क्षण क्रोध से भुनभुनाता हुआ उसके बिस्तर में जा घुसता। इस क्षण वह असाधारण तौर पर शांत था। वह अपनी स्थिति को स्पष्ट करता हुआ कहन लगा—“मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ।”

“इस वक्त।”

“क्यों ?”

“मैं थकी हुई हूँ। मुझे नींद भी आ रही है। ग्यारह तो बज गए।”

शरत जरा गम्भीर होकर बोला—“वक्त तो चलता ही रहता है शमी और हम इन्सान इसकी तेज धारा में बह कर न जाने कहाँ से कहाँ तक पहुँच जाते हैं। लेकिन फिर भी हमारे अन्दर यह इच्छा बनी रहती है कि हम वक्त की धारा के आगे असमर्थ न बन जाएँ। रात के ग्यारह तो रोज ही बजते हैं मगर आज की रात हमारे लिए बड़े महत्व की रात है। क्या हम जो बीत चुका है उसकी दुखद बातों को भुलाकर नई जिन्दगी शुरू नहीं कर सकते? मेरा ख्याल है हम ऐसा कर सकते हैं।”

“सच?”

“मुझ पर विश्वास करो मैं झूठ नहीं कहता। शमी! केवल तुम ही मेरे जीवन में पहली औरत हो जिसे मैं ने पहला प्यार दिया और जिस स्त्री को पुरुष ने अपना पहला प्यार दिया हो उस स्त्री का महत्व पुरुष के दिल में कितना होता है वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता! शमी! तुम्हें उस पुरुष के प्यार का सम्मान करना चाहिए।”

श्यामा ने उत्तर दिया—“मैं सम्मान कब नहीं करती? मैं तो चाहती हूँ तुम सीधी राह पर आ जाओ।”

शरत इस अपमान को भी चुपचाप पी गया। उसने सोच रखा था, श्यामा चाहे हजार गिले-शिकवे करे वह कोई हुज्जत नहीं करेगा। वह बोला—“मैं गलत राह पर नहीं हूँ...चलो, मैं एक मिनट के लिए मान लेता हूँ कि मेरी राह गलत है और इस राह पर चलते हुए मैं उन सुखों से वंचित रह जाऊँगा जिन्हें हमारा वर्ग बड़ा ही आवश्यक समझता है। मगर सुनो, जिस राह पर चलते हुए व्यक्ति की आत्मा को संतोष मिलता है वही राह उसके लिए ठीक है। मैं दूसरों के जीवन-यापन से उलझना नहीं चाहता क्योंकि जीवन की असंख्य राहें हैं और हर राह में सुख की नई-नई अनुभूतियाँ हैं और नए-नए संघर्ष हैं और यह बिल्कुल अजीब-सी बात है कि हम किसी मनोविकार में आकर अपना दृष्टिकोण दूसरों पर थोप देना चाहें। मैं स्वयं इस भूल का शिकार हुआ था। मैं ने तुम्हें अपने आदर्शों में गढ़ देने की कोशिश की। यह

मेरी सरासर भूल थी ..।”

वह टहलते-टहलते बोल रहा था । अपनी बात का अनुमोदन पाने के लिए वह सहसा ठिठक गया और पूछ बैठा—“तुम सुन रही हो न ?”

श्यामा की आँखें बन्द थीं । शायद उसे भपकी आ गई थी । उसने तंद्रिल सी आवज में कहा—“हूँ ।”

शरत को बहुत गुस्सा आया । वह जहाँ खड़ा था उसके पाँव के करीब खाली दूध का गिलास पड़ा था । उसके जी में आया कि वह गिलास को ठोकर दे मारे या जोर-जोर से चिल्ला उठे । पहले अवसरों पर वह अपने क्रोध की असमर्थता इसी तरह व्यक्त किया करता था । मगर इस वक्त वह अन्दर ही अन्दर गुस्से के पेचोताप खा कर रह गया । फिर वह किसी अस्पष्ट भावना से चलता हुआ बाहर सेहन में आ गया और बहुत देर तक अर्धरात्रि के तपस्वी मौन आकाश को देखता रहा जो लाखों सितारों के घावों को अपने मीने में छुपाए चुपचाप पड़ा था...।

अगले दिन इतवार था और उसे दफ्तर नहीं जाना था। कोई साढ़े आठ बजे के करीब जब उमकी आंख खुली, श्यामा चाय लिए उसके सिरहाने खड़ी थी। उसने चाय ले ली। चाय की प्याली उसने जल्दी-जल्दी पी डाली। नींद की खुमारी में उसके हृदय की ग्रंथी जो दब-सी गई थी अवसंज्ञा के छंटते ही वह सजीव हो उठी। उसे ख्याल आया कि पिछली रात इस ग्रंथी को वह काफी हद तक स्पष्ट कर सकता था मगर जिस ढंग से उसने श्यामा को समझाना चाहा वह ढंग एक तरह से गलत था और उसने वक्त भी ठीक नहीं चुना था। श्यामा थकी हुई थी और उसे नींद आ जाना स्वाभाविक ही था। यह ख्यामखाह क्रोध से भर कर छटपटाता रहा और मुमकिन है इस क्रोध का कुछ अंश उसकी बातों में आ गया हो। इस कारण श्यामा ने उत्तर देना मुतासिब न समझा हो और जानबूझ कर चुप्पी साध ली हो। आज वह दूसरे ही ढंग से अपने आप को स्पष्ट करने की चेष्टा करेगा।

उसके तकिए के पास श्यामा के जूड़े से रजनीगंधा के दो-चार फूल मसले पड़े थे। उसने वे उठा लिये और सूंधा। उनकी खुशबू मर चुकी थी। उसने बड़े आदर से उन्हें चाय की प्लेट में रख दिया। तभी उसकी नज़र मेटलपीस पर रखे हुए महात्मा बुद्ध के बस्ट पर पड़ी जो प्लास्टर आफ पैरिस का बना हुआ था और जो उसे कैलाश ने दिया था। बुद्ध की आंखें अर्धमिलित थीं और उसके ओंठों पर बड़ी ही शांत मुग्ध मुस्कान खेल रही थी और उसकी मुखाकृति में कुछ ऐसा भाव था जिसमें मानवी संघर्षों से ऊपर उठा देने की स्नेहल प्रेरणा थी। शरत कुछ क्षणों तक इस बस्ट को देखता रहा। तभी रसोई में बरतनों के गिरने का जोर-से छनाका हुआ और इसके साथ ही

श्यामा की चीख की सीमा तक उठी हुई बोझल चुभती आवाज ! वह मुँह से उलझने लगी थी । फिर एक दम चुप्पी नीरवता ! शरत ने सिग्रेट के लिए तक्रिए के नीचे हाथ पसारा । डिब्बिया खाली थी । वह खाली माचिस की तीलियाँ जला कर तमाशा देखता रहा ।

उसी क्षण श्यामा अंदर आई । उसके हाथ में मक्खन लगे टोस्ट का बड़ा सा टुकड़ा था जिसे वह खाने खाते चली आई थी । वह शरत से कहने लगी — “यह पहाड़िया किमी काम का नहीं । काम करने इसके हाथ टूटने हैं मगर खाने को इसे दस-दस रोटियाँ चाहिए और कटोरा भर सब्जी । मेरा ख्याल है यह पहाड़िया हफ्ते के अंदर ही रमोई के बरतनों का सफाया कर देगा... तुम देख लेना ।”

शरत ने शरारतन् कहा — “मैं देख लूँगा ।”

“क्या देख लोगे ?”

“यही कि वह कैसे हमारे बरतनों का सफाया करना है । उसे मालूम होना चाहिए ये बरतन मुफ्त नहीं आते । उसे अपने कर्तव्य का एहसास होना चाहिए ।”

“तुम्हारी बातों से थोड़े ही होगा ? जाकर उसके मुँह पर दो-चार चांटे जड़ दो न ?”

“चांटे ? मैं उसके मुँह पर ऐसे जोर-जोर से चांटे लगाऊँगा कि उसे नानी याद आ जाएगी । नानी, मां की मां को कहते हैं न ?”

श्यामा बनावटी रोप से बोली—“जाओ हटो । तुम तो मसखरा बन रहे हो ।”

शरत पलंग से उतर कर दाई ओर दीवार के साथ टगी हुई अपनी पतलून की जेबें टटोलने लगा । इस वक्त उसे सिग्रेट पीने की बड़ी ही उत्कण्ठा हो रही थी । श्यामा ने पूछा—

“क्या ढूँढ़ रहे हो ?”

उत्तर मिला—“एक चीज जो मैं जानता हूँ वहाँ नहीं मगर फिर भी ढूँढ़ने से तस्कीन होती है ।”

बाहें

जब वे नाश्ता करने के लिए मेज पर आ बैठे तो श्यामा ने पूछा—“आज खाने में क्या हो ?”

शरत की मानसिक विक्षिप्तता पहले से भी बढ़ आई थी। वह बोला—
“मटर पनीर, आलू गोभी, भैंगन का भुर्त्ता, मेथी वाले परांठे, दही और गाजरपाव। अगर साथ में किशमिश वाला पलाव भी हो तो हर्ज नहीं। आदमी को हमेशा ही मजेदार डिशेंज खानी चाहिए, क्योंकि इस जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। मेरा मतलब है मौत का कोई भरोसा नहीं। भूखे रह कर या थोड़ा खाकर आदमी को नींद कम आती है या नहीं भी आती और वह ख्वाम-खाह सोचना शुरू कर देता है, जो स्वास्थ्य के सिद्धान्तों से एकदम उल्ट चीज है और जो चीज उल्टी है वह निष्प्रयोजन है। जैसे मेज उल्टी हो उस पर किताब रख कर पढ़ा नहीं जा सकता। चारपाई उल्टी हो तो उस पर सोया नहीं जा सकता। अगर बाईसिकल, कार या बस उल्टी हो तो कहीं जाया नहीं जा सकता। शमी ! आज मजेदार-सा लंच होना चाहिए जिसे खा कर मुझे नींद आ जाए और मैं भूल जाऊँ कि मैं हूँ। वह अन्नपूर्णा की भोजन-सूची होगी जहाँ ?”

श्यामा असमंजस में उसकी बातें सुनती रही कि शरत उपहास कर रहा है या गम्भीर है। वह ठीक निर्णय न कर सकी। शरत ऊटपटांग बोलता रहा और श्यामा अपने माथे पर खीझ से भवें तनकर चुपचाप सुनती रही।

थोड़ी देर बाद शरत बोलते-बोलते स्वयं चुप हो गया। एक बार फिर वह पेंट की जेब टटोलने लगा। यद्यपि वह प्रकृत रूप से हँस रहा था उसके अन्दर कोई चीज टूट रही थी ..रोरही थी !

खाने के बाद वह फिर स्टडीटेबल पर आ बैठा। श्यामा बरामदे में अपनी साड़ियाँ प्रेस करने में जुट गई। शरत कुछ लिखने की बजाए कागज पर आड़ी तिरछी तस्वीरें बनाता रहा।—औरत का चेहरा, गाय के मींग, सूर्यमुखी का फूल, चाद और तारे, महात्मा बुद्ध का सिर, आग के शोले और फनियर सांप ...और यह सब तस्वीरें एक-दूसरे में गड़मड़ हो गई थी। पूरा चित्र बना चुकने के बाद वह इसे दीवार के साथ टिका कर इसका परीक्षण करने लगा। उसने स्वगत कहा—‘यह तस्वीर प्रयोगवादी शैली की शानदार कलाकृति हो सकती है।’ फिर उसने वह तस्वीर फाड़ दी और इसके बीसो टुकड़े करके कूड़े वाले कनस्तर में फेंक दिए और वह इसी शैली का दूसरा चित्र बनाने में जुट गया।

श्यामा अपना काम खत्म करके कम्बल लेकर पलंग में आ लेटी। उसने पूछा—“कल रात पीकर आए थे?”

“क्यों?”

“बड़ी अजीब-अजीब बातें कर रहे थे?”

शरत ने जरा तमक कर कहा—“कौन सी बात अजीब लगी थी?”

श्यामा बोली—“मुझे तो अब याद नहीं कि तुम क्या कह रहे थे? लेकिन तुम्हारे कहने का ढंग था कुछ अजीब! ...ऐसा लगता था जैसे फिलासफी कर रहे हो।”

शरत अपने भीतर तलखी-सी अनुभव करते हुए बाला—“वह मेरी सरासर बेवकूफी थी। मैंने तुम्हें पूछा था जो बीत चुका है उसकी दुःखद बातों को भुला कर नई जिन्दगी शुरू नहीं कर सकते? वास्तव में मुझे यों कहना चाहिए था कि जो बीत चुका है उसकी मैं क्षमा चाहता हूँ आगे से ऐसी गुस्ताखी नहीं बाँहें

होगी । तब फिलासफी न होकर सच्चाई होती जिसे समझने के लिए तुम्हें व्यर्थ की माथापच्ची न करनी पड़ती क्योंकि उस तरह बात का महत्व नहीं रहता । हम जो अपने को लेखक समझते हैं बड़े ही ऊटपटाँग किस्म के इन्सान होते हैं । हम छोटी-छोटी बात को तरह-तरह के रूपकों और अलंकारों से सजा कर सुनाना चाहते हैं और तब सुनने वाले को खाम-खाह की परेशानी-सी होने लगती है । अगर मैं कहूँ कि दो और दो चार नहीं होते तो तुम यही कहोगी न कि मुझे उतना भी गणित नहीं आता जितना पहली श्रेणी में पढ़ने वाले पाँच वर्ष के लड़के को कंठस्थ याद होता है और इस तरह मैं एक बहुत ही मामूली-सी सच्चाई का उपहास करने लगता हूँ । है न ?”

“हँ ।” श्यामा ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया ।

“ये मामूली-सी सच्चाइयाँ वास्तव में बड़े काम की चीज हैं और इनके बिना हमारी जिंदगी दूभर हो जाए । आदमी को कला और सौंदर्य नहीं चाहिए । इनसे नमक-रोटी के मसाले में अड़चन आ जाती है । आसमान में चाँद नई दुलहन की तरह लगता है, फूल हवा की गोद में झूलते हैं और उनकी मुस्कराहट तितली के पंखों में नई स्फूर्ति भर देती है...यह सब कहने की क्या जरूरत है ? क्यों शम्मी, मैं ठीक कहता हूँ न यह सब कहने की क्या जरूरत है ? यह जो हमारा पेट है वह न तो चाँदनी का दूध पी सकता है और न ही फूलों को रोटी समझ कर खा सकता है । हम लोग बड़े भूख हैं जो पेट को अपने साथ चिपटा कर भी पेट की शान में अनाप-शनाप बकने लगते हैं और यही वजह है कि हमें अक्सर बदहजमी की शिकायत रहने लगती है । हम अभिशप्त हैं क्योंकि हम पेट से ऊपर मन की बात सोचने लगते हैं । मन जो स्वभाव से बड़ा चंचल है और पेट की तरह स्थूल वस्तु नहीं । इसीलिए हम अभिशप्त हैं ...।”

श्यामा ने उसे सहानुभूति पूर्ण लहजे में समझाने की चेष्टा से कहाँ—
 “अब बस करो शरत ! बोलते-बोलते तुम्हारा दिमाग थक गया होगा । अब सो जाओ । दोपहर के वक्त भी कभी आराम कर लिया करो ।”

“क्या सेहत के लिए जरूरी है ? हाँ ! हाँ !” शरत अट्टहास करके हँसने लगा ।

यह दो दिन बाद की घटना है। शाम के सात हुए थे मगर अँधेरा खूब फैल चुका था। शरत मार्केट से घरेलू किस्म की चीजें खरीदने गया हुआ था। वास्तव में उनके पास काम-काज के लिए मुँड़ भी था मगर श्यामा को यह मंजूर नहीं था कि शरत के होते हुए मौदा-सल्फ खरीदने का काम मुँड़ करे क्योंकि वह मुँड़ की ईमानदारी पर शक करनी थी। शरत के जाने के बाद वह कुर्सी खींचकर खिड़की के सामने आ बैठी जहाँ से वह बाहर का दृश्य दूर तक देख सकती थी। उस खिड़की के आगे कोई आध फर्लांग दूरी तक एक-मंजिला मकानों की मुढेरे थीं और इनके आगे भोंपड़ों की झलक दिखाई देती और इन से भी परे रेल की पटरियों का विच्छा हुआ जाल-सा दिखाई देता, जहाँ हर वक्त या तो इंजन शंटिंग करते रहते या माल गाड़ियों के डिब्बों को आगे-पीछे धकेला जाता। शाम के वक्त वहाँ बीसों हरे और लाल रंगों की बत्तियाँ टिमटिमाने लगती। इस समय यह सब देखते हुए श्यामा को अजीब-सा लग रहा था। उसे उन रंग बिरंगी बत्तियों का वहाँ होना पसंद था लेकिन फिजा में इतने ज्यादा धुएँ को देखकर उसका दम घुटने लगा। धुआँ अधिक होने की एक वजह यह भी थी कि शरणार्थी औरतें लकड़ी के कोयले वाली अँगीठियाँ जलाने की बजाय उपलों से सुते हुए तंदूर जलाती थी और सर्दी के कारण धुआँ ऊपर न जाकर नीचे ही नीचे लहराने लगता था। उसे लगा कि अब उसे खाँसी आ जायेगी। कुछ क्षण वह इसकी प्रतीक्षा भी करती रही मगर उसे खाँसी नहीं आई। उसने वह खिड़की बन्द नहीं की। वह देख रही थी और कुछ मोच भी रही थी।

शरत जैसा भी है वह उसे प्यार करती है। शरत का साँवला रंग, उसका लम्बा छेरेरा जिस्म, उसके बारीक तीखे नख-शिख जो कलापूर्ण थे। ये सब बाहें

उसे बहुत ही पसन्द थे। उसे उसकी बातें करने का अन्दाज भी बहुत अच्छा लगता था। उसके चेहरे पर नन्हे-मुन्ने बालकों जैसी अबोधता थी और उसकी आँखें-बड़ी बड़ी और भूरे रंग की थीं। उसकी अँगुलियाँ लम्बी और बहुत ही नफासत से गड़ी हुई थीं। उसकी तबीयत होनी थी कि वह उन अँगुलियों को चूम-चूम ले। उसकी कमर चीते की कमर की तरह पतली थी। इस से भी ज्यादा वह शरत को इसलिए भी प्यार करती थी कि शादी से पहले वह बिल्कुल अछूता रहा है और वह उसके जीवन में पहली स्त्री है जिसे उसने स्त्री के रूप में देखा है। यह अनुभूति उसके लिए कितनी संतोषजनक थी ! उसकी मनस्थली पर ब्याह के प्रारम्भिक दिनों के सीन उभर आये। वे डलहौजी गए थे। शरत की आँखें जैसे उन्माद की पीनक में डूबी हुई रहती थीं। वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर मालगोड की सैर करने निकलता था। वह कहा करता 'श्यामा तुम्हारे जिस्म में सोंधी मिट्टी की खुशबू आती है।' एक बार वे पचपुले का प्रपात देखने गए थे। शरत एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर बन्दर की तरह कूद जाता और पानी में झुक कर छीटे उँढेलने लगता। भरने की ओट में जामुनी रंग के फूल थे जिन्हें वह तोड़ लाया था और वे फूल उसने उसके जूड़े में खोस दिए थे और उसके ओठों को चूम लिया था। श्यामा को सहसा महसूस हुआ कि शरत वासना को चाहे कितना ही झुठलाने लगे वह इस तथ्य को समझ गई है कि वह मूलतः वासना-प्रिय जीव है और स्त्री को यह जानने में देर नहीं लगती ! वह आँखों में चमक लाकर अपने बारे में सोचने लगी। कई बार न जाने उसे क्या हो जाता है कि वह शरत के प्रति अपने सारे शिकवों को भूल जाती है और वह उसे इस ढंग से प्यार करने लगती है जैसे वह उसकी पत्नी नहीं, प्रेयसी हो। उन क्षणों में वह उसके व्यक्तित्व की उश्चुंखलता को प्यार की नजरो से देखने लगती है। उस वक्त उसकी वासना प्रतिहिंसक नहीं होती। वह नहीं चाहती कि शरत को नीचा दिखाकर अपनी विजय उस पर प्रमाणित कर दे और तब वह उसका आत्म-विरोध देख सके और उसका छटपटाना देख सके। उन क्षणों में शरत की कवित्वमयी भाषा किलनी प्यारी लगने लगती है...।

तभी खटका हुआ और उसने सुना कि शरत किसी फिल्मी गाने का टप्पा गाते हुए सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। यह सोच कर कि शरत ने जीने वाली बत्ती नहीं जलाई होगी और वह कहीं अंधेरे में गिर न पड़े, वह तेजी से उठी और कमरे के साथ जो जीने तक पहुँचने के लिए ढ्योड़ी थी वहाँ जाकर बत्ती जला दी और फिर वह वहाँ खड़ी हो शरत को सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखने लगी। शरत फिल्मी टप्पा छोड़ कर मिर्जा गालिब का शेयर गुनगुनाने लगा—

“आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक”

श्यामा इस शेयर का अर्थ नहीं समझती थी लेकिन शरत का यों गुनगुनाते हुए दाखिल होना बिल्कुल ऐसे ही था जैसे हमारी फिल्मों में प्रेमियों का अपनी प्रेयसियों के घर प्रविष्ट होना दिखाया जाता है उस स्थिति में जब प्रेयसी के माँ-बाप या बड़ा भाई वहाँ न हो। यह कल्पना करके श्यामा के संगतारों की फाँकों जैसे ओठों पर मुस्कराहट आ गई। जब शरत सीढ़ियाँ चढ़ चुका तो श्यामा ने उसके हाथ से चीजों के बंडल लेकर स्वयं उठा लिए और वह उसे रास्ता दिखाते हुए बोली—

“आज खाने के साथ मैंने पुडिंग तैयार किया है।”

शरत खोया-सा आवारगी के स्वर में बोला—“किस कमबख्त को आज भूख है !”

“जब तुम्हें भूख लगे खाना, उसी वक्त खायेंगे।” श्यामा ने एक बंडल को खोलते हुए उत्तर दिया।

“सुनो।” शरत सिरफ़ इतना ही कह कर चुप हो गया।

श्यामा ने कुछ क्षणों तक प्रतीक्षा करने के बाद पूछा—“क्या ?”

“तुमने चीजों की जो सूची कागज़ पर लिख कर दी थी वह कागज़ मैं न जाने किस मूढ़ में आकर चबाने लगा और उसे चबा चुकने के बाद मुझे ख्याल आता है कि मैंने उसे थूक दिया था। जो चीज़ें मुझे थोड़ी बहुत याद रही थीं सिरफ़ वही ला सका हूँ।”

कोई और अवसर होता तो श्यामा को बाकई गुस्सा आ जाता। वह उसे

कोसते हुए कहती ऐसी लापरवाही भी क्या हुई। जिम्मेवार आदमियों को ऐसी बात शोभा नहीं देती। मगर थोड़ी देर पहले वह जो बातें सोच रही थी उसकी सुखद अनुभूति अभी तक उसे गुदगुदा रही थी। वह उसकी भूल को क्षमा करती हुई बोली—“जो चीजें रह गई हैं वे फिर आ जायेंगी मगर शरत मुझे तुमसे एक बात कहनी है।”

“कहो।”

“मैंने कई बार देखा है कि सड़क पर चलते हुए भी तुम सोचमग्न रहते हो। तुम जानते ही हो यहाँ कितना ट्रैफिक है !”

“कौन कमबख्त यहाँ रहना चाहता है।” शरत आवेश में आकर बोला—

“मैं तो चाहता हूँ किसी ऐसी जगह चला जाऊँ जहाँ इतना शोर न हो, इतना ट्रैफिक न हो, इतनी सड़कें न हों और इतने लोग न हों। मुझे लगता है यह शहर एक चक्की है जिसके दो पाटों के बीच लाखों लोग दिन रात पीसे जाते हैं। ये मन्हूस एक-रूप ईंटों के ढेर जिन्हें लोग बिल्डिंगज़ कहते हैं, कारावास की तरह हमें जकड़ने के लिए खड़े हैं। मैं सच कहता हूँ इन्हे देखकर मुझे कई बार अजीब-सी दहशत होती है। इस शहर की काली पथरीली सड़कों पर घूमते हुए मुझे महसूस होता है, मैं मकड़ी के जाले में एक अबोध मक्खी की तरह उलझ गया हूँ। ये जो चलते-फिरते लोग हैं मुझे अपनी इच्छा से चलते हुए दिखाई नहीं देते..लगता है वह पीछे से धक्का खाकर आगे को लुढ़क रहे हों या मुश्की चूहों की तरह वे एक बिल से निकल कर दूसरे बिल में जा छिपते हैं। उनकी आँखों में भूख जलती है...रोटी की भूख, पूँजी की भूख और वासना की भूख ! शमी ! इस शहर में मुझे भी एक दिन इसी भूख से तड़प-तड़प कर मर जाना होगा।”

श्यामा शरत की कुर्सी के बाजू पर आ बैठी और उसके बालों को सहलाने लगी। उसके दिल में वैसी ही ममता उमड़ आई जो एक माँ को अपने रोग-ग्रस्त बच्चे के सिरहाने बैठने पर होती है। उसने उसका वह नर्म-नर्म घुँघराले बालों वाला सिर अपनी छाती से सटा लिया और उसके रोम-रोम में एक ऐसी पुलक भर गई जिसका स्वाद उसके लिए एकदम नया और अछूता-सा था। वह कितनी देर इस पुलक का मजा लेती रही...

एक दिन जब श्यामा अपने घर वालों से मिल कर लौटी, उसने शरत को बताया कि उन्हें 'बी' क्लास क्वार्टर मिल गया है। शरत को तो कभी ख्याल ही नहीं था कि ऐसी बात हो सकती है। जब उसने सुना वह सचमुच सक्ते में आकर अपनी पत्नी श्यामा को धूर-धूर कर देखने लगा। वह बोला—

“यह सब गोलमाल क्या है ?”

“गोलमाल कुछ नहीं। बाबू जी ने अपने रसूख से दिलवा दिया है।”

शरत ने व्यंग्य से अपने ओंठों को काटकर कहा—“हाँ, बड़े बा-रसूख आदमी हैं। उन्हें अपनी लड़की की पोजीशन का कितना ख्याल है ? गेजेटिड अफसर की लड़की और गेजेटिड अफसर की पत्नी इस घटिया से मकान में कैसे रह सकती है ? क्यों यही बात है न ?”

“सिरफ़ मेरे लिए नहीं !” श्यामा ने जान-बूझ कर अपूर्ण-सा उत्तर दिया ताकि इसका बाकी अंश शरत अपने आप समझ जाए।

शरत उत्तर में जोर से क़हक़हा लगाकर हँस पड़ा। फिर वह सहम्रा गंभीर हो गया और वे अजीब-सी नज़रों से कमरे की दीवारों को देखता हुआ बोला—“क्या तुम बता सकती हो वह बी क्लास क्वार्टर जो मुझे तुम्हारे बाबू जी के सौजन्य से मिला है कहाँ है और कैसा है ?”

श्यामा ने बताया वह लोदी कालोनी में है और लोदी कालोनी दिल्ली की सब से खूबसूरत कालोनी है और वहाँ सब अच्छे-अच्छे लोग रहते हैं। उस फ्लैट में चार कमरे हैं। फलश है और शावर-बाथ भी। अन्त में उसने कहा कि शरत का दफ़तर वहाँ से बिल्कुल पास है।

“खूब !” शरत ने श्यामा का व्योरा सुन चुकने के बाद इतना ही कहा ।

श्यामा की भीहें खीझ से सीधी होते-होते रह गईं । कुछ सोच कर उसने अपने को प्रकृतिस्थ कर लिया । वह अपनी बात को ज़रा प्रभावोत्पादक बनाने की चेष्टा से करुण लहजे में बोली—

“यह भी कोई जगह है जहाँ हम रह रहे हैं ? बिल्कुल उज्जड़ और गँवार-से लोग हैं जहाँ ! तुमने देखा ही है कि यहाँ के पड़ोस में मेरी एक भी सहेली नहीं । सहेली बनना तो कुजा वे औरते मेरे कपड़ों को घूर-घूर कर देखती हैं और...”

शरत ने उसे टोक कर कहा—“शमी ! अगर तुम मेरे साथ रहना चाहती हो तो तुम्हें अपने वर्ग-संस्कारों से मुक्त हो जाना चाहिये । तुमने जितनी भी बातें कही हैं उनमें तुम्हारी स्थिति का घमड़ बोलता है ।”

श्यामा को लगा उसे कुछ और ही कहना चाहिये था, जिससे वह शरत पर प्रभाव डाल सकती थी । वह इसी को अपने ज़हन में सोच कर बोली—

“और देखो न यहाँ जितना शोर और कोलाहल सा मचा रहता है उसमें रह कर तुम कुछ लिख भी तो नहीं सकते हो और नीचे सड़क पर इतना ट्रैफिक है कि आदमी उसे देख कर पागल हो सकता है । वे बड़ी-बड़ी ट्रामें यों दनदनाती हुई चलती हैं कि इसकी आवाज़ को सुनकर ऐसे लगता है जैसे भूचाल आ गया हो ...।”

सुनते समय शरत को सहसा ख्याल आया कि श्यामा ने कितनी यथार्थ उपमा दी है । वह कह रही थी—

“इसीलिए तो मैं कहती हूँ शरत वहाँ बहुत अच्छा रहेगा । वहाँ तुम्हें मन-माफिक एकान्त भी मिल सकेगा जो लिखने के लिए जरूरी समझा जाता है...”

एक पल के लिए श्यामा ने उसके चेहरे को पढ़ना चाहा । उसे ढाढस हुई कि शरत गम्भीर सी मुद्रा बना कर उसे सुन रहा था । श्यामा ने जैसे ट्रम्प कार्ड छोड़ा—

“वहाँ मुझे भी एक-दो सहेलियाँ मिल जाएँगी और मैं तुम्हारे चिन्तन या लिखने में बाधा नहीं बनूँगी।”

जब वह कह चुकी तो वह मुस्करा कर शरत की तरफ देखने लगी। शरत न मालूम कहाँ देख रहा था अलबत्ता उसकी नज़र श्यामा के चेहरे पर गड़ सी गई। श्यामा ने जैसे सहम कर अपनी नज़र नीची कर ली। शरत के ओठों में हल्की सी जुम्बश पैदा हुई और वह इस अन्दाज़ से बोला जैसे वह श्यामा को नहीं अपने को कह रहा हो—

“ठीक है मुझे वहाँ चले जाना चाहिये। शमी सच कहती है वहाँ उसे एक-दो सहेलियाँ मिल जायेगी और तब वह मेरे लिखने में बाधा नहीं होगी... तब वह मुझे अपनी अस्तित्व की खूँटी के साथ बाँधना नहीं चाहेगी। उसने जो एकान्त वाली बात कही है वह भी सच है। यहाँ वाकई कितना शोर है जो जेहन पर हथौड़े की तरह गिरता है और तब मैं कुछ भी सोच नहीं सकता... महमूस नहीं कर सकता। उस शोर को सुनकर ऐसा लगता है कि किसी ने जैसे मेरी रूह में गरम-गरम सीसा पिघला कर डाल दिया हो और तब कितनी तल्खी होती है...”

फिर वह एकदम अपने को स्वस्थ करने की नीयत से अपने को झटका देकर कहने लगा—“शमी ! तुम एक चीज़ भूल गई हो जो यहाँ मुझे बहुत खटकती है !”

“क्या ?”

“मक्खियाँ ! लुटा की इस सृष्टि को मैं आज तक नहीं समझ सका हूँ। ये मक्खियाँ यहाँ इसलिए हैं कि यहाँ बहुत गन्दगी है, मकानों के बाहर कूड़ा-करकट के ढेर सड़ते रहते हैं और उन्हें साफ़ करने के लिए भंगी सिरफ़ एक चार आते हैं। ..शमी ! मुझे याद है तुमने एक दिन कहा था शाम के समय औरतें कोयले वाली अँगोठियाँ न जलाकर उपलों के तन्दूर जलाती हैं और इससे सारा वातावरण धुआँ-धुआँ-सा हो जाता है और तब तुम्हें खाँसी आने लगती है ?”

बाहें

] ३७

श्यामा जो कुछ कहने की प्रतीक्षा कर रही थी, उत्साहित होकर बोली—
“आज कल मुझे बहुत खाँसी आती है।”

शरत ने उत्तर दिया—“हम यह मनहूस जगह छोड़ देंगे। चलो तैयार हो जाओ। हम अभी लोदी कालोनी जाकर अपना क्वार्टर देख आते हैं। मेरे अन्दर अभी इतना विश्वास नहीं कि कुरूपता की पृष्ठ-भूमि पर सौन्दर्य का चिन्तन कर सकूँ।”

अगले दिन इतवार था। शरत ने जल्दी ही निश्चय बना लिया कि शाम होने से पहले-पहले लोदी कालोनी वाले क्वार्टर में चले जाना है। वह क्वार्टर इतना साफ-सुथरा लगता था जैसे आज ही बना हो। फर्श इतना चिकना था कि वह इस पर दो बार फिसलते-फिसलते बचा। उसने शावर-बाथ के नीचे खड़े होकर इसका मुआयना करना चाहा और उमका सिर यख पानी की फुहार से कपकपा उठा। वैसे उसे वह क्वार्टर पसन्द आया था। सुबह तड़के उठकर चीजें इकट्ठी करने वा बांधने में श्यामा का हाथ बटाता रहा। जब नौ बजे तो वह अपने महफिल वाले दोस्तों से मिलने के लिए गली कसाबां की तरफ चल पड़ा जो सदर बाज़ार के पास थी। उन तीनों के पास सिरफ एक ही कमरा था जहाँ वे सोते थे, पढते थे, नहाते थे और खाना बनाते थे। एक दूसरे पर फबतियाँ कसी जातीं लेकिन बड़े-बड़े राजनैनिक और साहित्यिक मसलों का भी कचूमर निकाला जाता। सुखदेव गप्प लगाने और फबती कसने में अपना जोड नहीं रखता था। वह बेशर्मी की हद तक साफ-साफ और खरी-खरी बात कह देता था लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह अश्लील बकता था। वह सदा दूर की कौड़ी लाता और उसकी सूझ पँती थी। हर समय पान चबाते रहने के कारण उसके ओंठ सुखे और दाँत स्याह हो गये थे और वह बातें भी ढीले मुँह से करता था जिन्हें सुनकर सुनने वाले को अपने आप हँसी आ जाती। कामरेड दीदी तर्क करना जानता था और इस कारण उसे ज़रा गम्भीर होना चाहिये था लेकिन वह ज़रा भी गम्भीर नहीं था और वह साधारणतया अपने ही व्यंग्य पर ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़ता लेकिन यह बात जरूर थी कि उसका व्यंग्य चाकू की धार की तरह तीखा होता।

बाहें

वह अपने को प्रोफेशनल व्यंग्यकर्ता घोषित करता था क्योंकि वह यहाँ दिल्ली से प्रकाशित होने वाली किसी पत्रिका में उपसम्पादक था और जिसका दफ्तर चावड़ी बाज़ार में था। पेंटर बनवारी को भी बेतुकी हाँकने का शौक था। वह अपने कल्पित रोमांसों की डीगें मारा करता जिसके लिए उसे खूब छेड़ा जाता। वह फिल्मी गीत गुनगुनाया करता और उसके दाएँ कान में गुलाब के इतर की फुरेरी ठुंसी हुई रहती। इस महफिल में शरत को किसी से कम छेड़ा नहीं जाता था।

जब शरत वहाँ पहुँचा सुखदेव खटिया पर आलती-पालती मारे बैठा था। उसने कपड़े उतार रखे थे और वह अपने मोटे जिस्म पर कड़वे तेल की मालिश कर रहा था। वह शरत को देखते ही बोला—

“आओ भई शरत ! इधर हमारे अड्डे पर कैसे भूल पड़े ? क्यों कुशल तो है ?”

“सब कुशल है। मगर मैं पूछता हूँ कि यह मालिश का हिसाब-किताब कब से शुरू किया है गुरुजी ? पहले भी भगवान् की दया से इतना मोटापा है जिसे देख ऊँट का भी घुटना टूटे। हा ! हा !”

हँसते वक्त शरत को महसूस हुआ कि उसके भीतर का कँवारा शरत फिर से जी उठा है। कामरेड दीदी अंगीठी जलाने की कोशिश में था और बनवारी सुखदेव के पास खटिया के पाए पर बैठा था। उसने अपनी आधी दाड़ी बना ली थी और आधी पर साबुन लगा हुआ था। शरत के आक्षेप पर सुखदेव जोर-जोर से हँसने के मिस हिनहिनाने लगा और उसके गले से लटक रही मांस की थैली ब्लैडर की तरह फुदकने लगी। कामरेड दीदी ने शरत से कहा—“अभी कुछ मिन्टों में चाय तैयार हुई जाती है। हम तुम्हें एक प्याली दे सकेंगे।”

“मैं चाय पीकर आया हूँ। अलबत्ता.....।”

उसे बीच में ही टोक कर कामरेड दीदी खटाक् से बोला—“अलबत्ता एक प्याली और पी लेना इस से बदहजमी नहीं होती।” फिर उसने जोर से कहकहा लगाया।

शरत ने पूछा—“क्या बात ?”

“तेरे आने से पहले यहाँ मजेदार बहस चल रही थी । यह पाजी बनवारी कहता है कि जो लोग साहित्य और कला पैदा करते हैं वे स्त्री ज्यादा हैं और पुरुष कम । यह कहता है कि जितनी भी ललित कलाएँ हैं वे स्त्रीयता की अभिव्यक्ति हैं । तभी तो.....” कामरेड दीदी अपने आकार से ज्यादा बज्जनी कहकर हावा में उछालता हुआ बोला—“इस भूतनी की शक्ल देखो दिनोंदिन बिल्कुल औरतों की तरह निकलती आ रही है और किसी दिन यह पूरी औरत बन जाएगा और अपने कूल्ह मटका-मटका कर चला करेगा ।”

सुखदेव ने अपने नाक के नत्थनों में तेल से मनी हुई उँगली फेरते हुए कामरेड दीदी के अंतिम वाक्य की वैकरणिक शुद्धि करते हुए कहा—“चला नहीं करेगा, चला करेगी ।”

शरत ने बहस को चमकाने की नीयत से कहा—“देखा कामरेड सुखदेव की सूझ कितनी पैनी है !”

“और यह भी देखो,” कामरेड दीदी शरत को आँख मार कर बोला—“इतना मोटा होने के बावजूद भी इसकी सूझ कितनी पैनी है ।”

सुखदेव को बहुत गुस्सा आया लेकिन वह अपने दूसरे नत्थने में तैल से मनी हुई अँगुली डाल चुका था । वह गुनगुनी आवाज़ में कामरेड दीदी को गालियाँ देने लगा । शरत मारे हँसी के लोट-पोट हो गया ।

इस समय भी बनवारी ने अपने दाएँ कान में इतर की फुरेरी ठोस रखी थी । सुखदेव उसके कान से फुरेरी निकालता हुआ बोला—“ला इधर यह इतर की फुरेरी हम भी सूँघ लें । क्यों बे कामरेड वह कहावत कौन सी है...?”

“कौन सी ?”

“वह किसी ने कहा है न कि जिसने हिना का इतर नहीं सूँघा.....आगे क्या है ?”

“उसकी माँ ने अभी उसे जना ही नहीं ।” कामरेड दीदी ने उसकी वाक्य-पूर्ति कर दी ।

“तो इसका मतलब यह है ।” सुखदेव ने बनवारी को छेड़ते हुए कहा—

बाहें

“यह भूतनी का बनवारी लाल ही जना है, बाकी जिन्होंने हिना का इतर नहीं मँधा वे सब बे-जने है।”

बनवारी गुस्से से भुनभुनाता हुआ दरवाजे की दलीज पर आ बैठा और जल्दी-जल्दी दाढ़ी बनाने लगा जो अवशेष रह गई थी। कुछ क्षणों तक चुप्पी छाई रही। शरत ने देखा कि उसके करीब ही जो मेज पड़ी थी, उसपर किताबें, मंगनरों के बामी छिलके, डबल रोटियों के टुकड़े, हजामत के ब्लेड, जुराबे और जूते का सिरफ एक पैर आपस में बुरी तरह गुथमगुथथा से हो गए थे। कामरेड दीदी जो अँगीठी जलाने की कोशिश में व्यर्थ ही फूँके मारे जा रहा था, झुल्लाकर बनवारी से बोला—

“अपने से यह आग नहीं जलती। दौड़ कर किसी लड़की को बुला ला।”

“मगर अलादीन का चिराग कहाँ?” बनवारी ने दार्शनिकों की सी संजीदगी में उत्तर दिया।

सुखदेव उन्हें डांटते हुए इस बार ढीले मुँह से बोला—“तुम्हें हजार बार कह चुका हूँ कि भूतनी के जनो इस घर में किसी लड़की-वडकी का नाम न लिया करो। जहाँ मन के कंवारे मगर लँगोट के ढीले लोग हरते हैं, मे देखता हूँ कैसे आग नहीं जलती।”

वह तैल की शीशी को पटक कर अँगीठी के पास चला आया। दो-चार फूँके मारने के बाद वह आग जलाने में कामयाब हो गया। फिर उसने गर्वपूर्ण ढंग से घोषणा की—“आग ऐसे जलाई जाती है।”

कामरेड दीदी ने नया शोशा छेड़ते हुए कहा—“मगर दिल की आग गुरु जी?”

“इसका नुस्खा बनवारी को आता है।”

वे हँसने लगे। शरत ने कई बार देखा था कि उनके ये ऊटपटाँग दोस्त हँसीके आवेश में आकर कमरे का चीजें उठा-उठा कर एक-दूसरे पर फेंकते थे और उछल-कूद करते थे। वे भगड़ते, गालियाँ देते मगर कुछ देर बाद सुलह कर लेते। उनका आपसी व्यवहार खुरदरा होता मगर उसमें हृदय का मैलापन नहीं होता था। उसमें दोस्ती का स्वाभिमान रहता था और उस स्वाभिमान

की स्वीकृति भी . जैसे उनका अपना एक छोटा सा परिवार हो मगर जिसकी जड़ें मानवीयता के अन्दर बहुत दूर तक चली गई थी। जब वे चाय पीने लगे तो शरत ने उन्हें बताया कि लोदी कालोनी में उसे एक नफीस सा क्वार्टर मिल गया है और आज ही वहाँ शिफ्ट कर जाएगा। जब उन्होंने उसके निर्णय को सुनकर नाक-भौं सुकेंड़ लिए और उनके ओठ तिरस्कार से फैलने लगे तो शरत ने मानसिक रूप से अपने को तैयार कर लिया कि अगर उन्होंने व्यग्य किया तो वह इसका उत्तर व्यग्य में ही देगा। वह इतना कमजोर नहीं कि किसी से दब जाए। पहले मुखदेव ने ताना दिया—

“अब साला बुजर्वा हो गया है। कामरेड, तुम इसकी पोशाक देख सकते हो।”

शरत ने अपने उत्तर में असर लाने के लिए स्थिर भाव से कहा—“बुजर्वा इसलिए बुजर्वा नहीं कि वह पोशाक पहनता है। पोशाक तो व्यावहारिक सी चीज है। उसका बुजर्वा होना उसकी मानसिक स्थिति पर है।”

मुखदेव हँसने लगा। इस बार शरत ने उसकी फुदकने वाली मांस की थैली की ओर नहीं देखा। कामरेड दीदी ने तुनका लगाते हुए कहा—“मैं तुम्हें नेक सलाह दूँगा तुम कविता-अविता लिखना छोड़कर बच्चे पैदा करो और दबू पतियों का सा सुखी और स्वस्थ जीवन व्यतीत करो।”

शरत चुप हो गया। उसे इतना व्यग्य नहीं आता था कि कामरेड दीदी को काट सके। वह अपने को कोमता हुआ बोला—“कौन कमबख्त कहता है कि मैं कवि हूँ।”

“हम तो एक अर्म से तुम्हारे मुँह में यही मुनते आए हैं।”

शरत को लगा कि कामरेड दीदी का व्यग्य बर्दाश्त से बाहर होता जा रहा है। वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। वह चाहता था कि कोई उसे रोक ले लेकिन किसी ने उसे रोका नहीं। उस समय शरत भूल गया कि इस जगह वह ऐटीकेट नहीं चलता जो दूसरी जगह वह सोचा करता था। खोटे सिक्के की तरह उछाला जाता है।

उस कमरे का जीना उतर कर जब वह नीचे आया, उसे अपने व्यवहार पर बाहें

अत्याधिक खेद हुआ । वह चाहता था कि इसी क्षण जाकर उन से क्षमा माँग ले । . क्षमा ! जहाँ दोस्ती का स्वाभिमान हो वहाँ क्षमा माँगने का क्या काम ? उमे लगा कि वह बिन्कुल व्यवहारिक लोगों की तरह सोचने लगा है । फिर उसने उनके क़हक़हों की आवाज सुनी जो सम्भवतः उसी के पीछे उछाले जा रहे थे । शरत मुस्कराता हुआ वहाँ से चल पड़ा ।

लोदी कालोनी वाले क्वार्टर में आ कर शरत उन चार कमरों में से एक कमरा संपूर्णतया अपने लिए रिज़र्व कर लेना चाहता था जिसे वह अपना स्टडीरूम बना सके और इसे अपने ढंग से वह जैसे भी संवार सकता हो संवार ले। उस कमरे की खिड़कियाँ सड़क की तरफ खुलती थी और उस सड़क के आगे खुला सा मैदान था और इस से भी परे लोदी बाग के पेड़ों के झुरमटों से घिरे हुए ऊँचे ऊँचे ऐतिहासिक गुम्बद दिखाई देते थे। शरत ने सोचा कि वह अपनी स्टडी-टेबल खिड़की के समक्ष रख कर और लिखने समय बार-बार अपनी नज़रें उठाकर उस सीन को देखा करेगा और यह सीन सीमित होते हुए भी नीले आकाश की कितनी असीमता को छिपाए हुए है। उस हिस्से में एक भी ऊँची इमारत नहीं थी जो उसकी उन्मुक्त, सतत उड़ान भरने वाली नज़रों को पछाड़ दे। दूर परे उन पेड़ों के झुरमटों के कदमों में सड़क की पतली-सी सुरमई रेखा थी जिस पर रेंगती हुई कारों और बसों की आकृतियाँ नन्हे-नन्हे प्लास्टिक के खिलौनों जितनी थी। उनके पहियों की खड़खड़ाहट और हार्न की चिलचिलाती आवाज़ें यहाँ नहीं पहुँचती थी। वैसे उसके आस-पास भी किसी तरह का कोलाहल नहीं था जो वह सब्जी मंडी में सुना करता था। यहाँ सिरफ हल्की-हल्की भिनभिनाहट-सी हो रही थी जैसे मधु-मक्खियाँ अपने छत्ते पर बैठी हों। उसे लगा वह जैसे गरजते हुए तूफान से निकलकर समुद्र के प्रशांत तट पर आ गया हो। उसे लगा जैसे वह बिल्कुल छोटे-से कस्बे में आ बसा हो, जहाँ जिंदगी कितनी धीमे धीमे चल रही थी !

वह खुशी से भ्रमता हुआ गुसलखाने की तरफ चला आया। उसे अभी उस घर की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान नहीं हुआ था। श्यामा जो बरामदे में बाहें

खड़ी थी हँसते हुए बोली—

“मैं यहाँ खड़ी हूँ। तुम कहाँ जा रहे हो।...मुनो तुम्हारा कपड़ों वाला टंक आ गया है। तुम टाई लगा लो और मेरे साथ चलकर पड़ोसियों से मिल लो। यह काम बेहद जरूरी है। सामान की निगरानी के लिए, मैंने मुझ को कह दिया है।”

“चलते है पहले ज़रा सामान लगाने की व्यवस्था तो कर ले।”

“इस के लिए हमें तरुअदद करने की जरूरत नहीं। मैंने तुम्हारे चपरासियों को सारी व्यवस्था समझा दी है कि सामान कैसे रखना है और कौन-कौन से कमरे में रखना है।”

शरत ने देखा आसपास क्वार्टरों में रहने वाले लोग जो उसके पड़ोसी थे बार-बार खिड़कियों से सिर निकाल कर व दरवाजों के सामने आकर उन्हें देखने लगते थे और वे अपने चेहरों पर विद्रूप-सी मुस्कराहट लाकर पीछे हट जाते थे। जो स्त्रियाँ थी वे अपनी तरफ से बहुत ही शर्मा कर पर्दों को तनिक सा हटा कर भाँक लेती थीं और फिर ठहाका मार कर हँस पड़ती थी। शरत को यह बहुत बुरा लगा। वह तल्ल होकर बोला—

“आखिर यह क्या बदतमीजी है?”

श्यामा ने पूछा—“क्या?”

शरत श्यामा को कोसता हुआ कहने लगा—“यह कितनी विचित्र बात है जो मैं देखता हूँ वह तुम्हें दिखाई नहीं देता। तुम जिन पड़ोसियों से मुझे मिलाना चाहती हो वे कितने बदतमीज हैं। वे हमें ऐसे देख रहे हैं जैसे हम चिड़ियाघर के जानवर हों! मैं उन्हें मिलने नहीं जाऊँगा।”

श्यामा बोली—“तुम तो आते ही भगडा लेकर बैठ गये। वे लोग हमें इसलिए देख रहे हैं कि वे हमें मिलने के लिए उत्सुक हैं। वे भी तो तुम्हारी ही तरह पोजीशन वाले लोग हैं। अब देर न करो। टाई बाँध लो और मेरे साथ चलो।”

शरत हँसने लगा। श्यामा ने पूछा—

“हँसते क्यों हो?”

“क्या बिना टाई लगाए उनसे परिचय नहीं हो सकता ? मैं तुम्हारा अभिप्राय समझ तो गया हूँ लेकिन मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं आया। बहुत ही ओछा-सा लगा है।”

श्यामा ने रूआसी आवाज में कहा—“तुम्हें मेरी कोई भी बात अच्छी नहीं लगती। मैं इस समय भगड़ा नहीं करती। मैं इतना ही कहती हूँ कि चल कर पड़ोसियों से मिल ले। हमें यहाँ आए दो घंटे हो गए वे क्या सोचते होंगे ?”

“क्या ?”

श्यामा को लगा शरत उसे चिढ़ाने पर तुला हुआ है। वह अपने क्रोध को अन्दर ही अन्दर पीते हुए बोली—“वे यही सोचते होंगे कि हम लोग कितने असम्भव हैं।”

“वे मेरे बारे में बिल्कुल ठीक सोचते हैं और तुम्हारे बारे में बिल्कुल ग़लत। तो मेरी सलाह मैं तुम पड़ोस की स्त्रियों को मिल आओ। रहे मर्द लोग उनसे मिलना या न मिलना मेरा निजी दृष्टिकोण है। वैसे दफ़्तर में मैं हर रोज़ सात घंटे इसी तरह के लोगों में रहता हूँ जो पहले ही मेरे लिए बहुत हैं। मेरा ख्याल है इतना मुन लेने के बाद तुम मुझे अपने साथ ले जाने के लिए परेशान नहीं करोगी ?”

“जैसी तुम्हारी मर्जी !”

शरत ने कहा—“मैं ज़रा मार्केट तक हो आऊँ वहाँ बसों का अड्डा है। जाकर पता लगाना चाहता हूँ कि बसों के नम्बरो और रूटो, का क्या हिसाब-किताब है !”

श्यामा ने उसे टोका नहीं। चले जाने दिया।

मार्केट वहाँ से ज्यादा दूर नहीं थी। मार्केट की रूप रेखा उसे बहुत पसंद आई। जहाँ कोई घुमाव-फिराव नहीं थे और न ही वे गोल-गोल दायरे थे जो क्वाटप्लेस में थे। दुकानों की सिरफ दो पाले थी जो आमने-सामने थी और इनके दरमियान बहुत बड़ा हरी-हरी दूब से बिछा हुआ प्लाट था। यहाँ आस-पास के घरों के बच्चे गेद वा बालून उछाल रहे थे, घुवा छोकरे दो-दो या तीन-तीन की टोलियाँ बनाकर गप्पबाजी कर रहे थे या चहक रहे थे और जो बूढ़े लोग थे वे बैचों पर सिर झुकाये बैठे थे और सोच-मग्न थे। दुकानों के साथ वाले बरामदों में कधे भिड़ाने वाली बात नहीं थी। यहाँ बहुत ही कम तमाशबीन थे। शरत ने देखा यहाँ वे सब दुकाने हैं जो उसकी पान खाने से लेकर हजामत बनवाने तक की सभी समस्याओं को समेट सकती हैं। उसने कुछ ही मिंटों में बसों के नम्बर और रूट अपनी छोटी-सी डायरी में नोट कर लिए। यह ठीक था, यहाँ भी बस में बैठने के लिए क्यू बना कर खड़ा होना पड़ता था लेकिन ऐसी आशका नहीं थी कि बस में जगह न मिले। उसके देखते-देखते भिन्न स्टैंडो पर जो लम्बे-लम्बे क्यू लगे थे वे मिंटों में खाली हो गए। फिर और क्यू लग गये और अगली बसों की प्रतीक्षा करने लगे। लोग शहर की तरफ भाग रहे थे और वह शहर से निकल आया था। उसे चाय पीने की उत्कंठा हुई और वह एक समीपवर्ती रैस्तेरा में चला गया। इस रैस्तेरा में उसे परा या आधा सैट चाय लेने की बंदिश नहीं। सिरफ दो आने में उसे चाय की गरम-गरम प्याली मिल सकती थी। चाय के दो-चार घूंट पीकर उसे अपने बारे में एक ख्याल सूझा कि वह अब तक दो तरह के जीवन में रहा है कभी जन-समुदाय का चिन्तनशील अंग बन कर और कभी बिल्कुल

४८]

तटस्थ या अन्तर्मुख होकर। वह ऐसा अहवादी नहीं कि समुदाय का तिरस्कार करने लगे और ऐसा निर्व्यक्तिक भी नहीं कि समुदाय में अपने को खो दे। तब उसने सोचा इस नए घर में आकर उसे मन-माफिक एकान्त मिल जायेगा और वह एकाग्रचित्त होकर लिखेगा। उसे वह मानसिक विक्षिप्तता नहीं होगी जो आज तक उसके विचारों को छिन्न-भिन्न करती रही है। आज तक तो यही हुआ था, कितनी ही कवित्वमयी अनुभूतियाँ उसके भीतर चिंगारियों की तरह दो क्षण टिमटिमाईं, मुस्कराईं फिर स्वाह में विलीन हो गईं। अब वह इन अनुभूतियों को विलीन नहीं होने देगा। उन्हें सुन्दर रूपकों और छंदों में परो कर हमेशा-हमेशा के लिए अमर कर देगा। वह चाहे तो व्यंग्य भी लिख सकता है। कामरेड दीदी ने उसे बताया था कि आज की सदी में सिवाए व्यंग्य के और कुछ नहीं लिखा जा सकता क्योंकि विज्ञान ने पुरानी मान्यताओं पर मनुष्य का विश्वास छीन लिया है और नई मान्यताएँ पैदा करने वाली मनुष्यता युद्धों की आग में भुलस चुकी है। आज के सदी में जिदगी की जो उपहासजनक तस्वीर है वह सिर्फ व्यंग्य में ही आंकी जा सकती है। उसने यह भी कहा था कि हमारे देश में व्यंग्य की बहुत जरूरत है क्योंकि जहाँ इतने पाखंड और वहम हैं जिन पर बड़ी ही करारी और निर्मम चोटे लगाने की जरूरत है। शरत सोचने लगा वह जिन कोमल तंतुओं से बना है वे एक कवि के हो सकते हैं व्यंग्यकर्त्ता के नहीं। अगर वह व्यंग्यकर्त्ता करता होता तो उसके लिए वर्तमान उलझनें न होती। अगर होती तो वह उनका बहुत पहले कर सकता था।

दो घंटे बाद वह लौटा। सामान कमरों में रखा जा चुका था। वह सीधा उस कमरे में गया जिसे उसने अपना स्टडी रूम बनाने का विचार किया था। कमरे की दलीज़ पर कदम रखते ही वह ठिठक गया और गुस्से के मारे उसके दिमाग का रेशा-रेशा भिन्ना उठा। श्यामा ने उस कमरे को अपनी व्यवस्था के अनुसार डाईनिंग रूम बना लिया था। शरत मुड़ा तो उसने देखा श्यामा मुस्कराती हुई उसकी तरफ चली आ रही थी। वह बोली—

“बहुत देर लगा दी ! कहाँ चले गये थे ? मैं तो चीजें संभालते-संभालते ..।”

शरत ने उसे टोक दिया—“शट अप !”

“क्यों ? भगड़े वाली क्या बात है ?”

“श्यामा, लगता है तुम मेरे पीछे जैसे हाथ धोकर पड़ गई हो !”

“क्यों ?”

“मेने तुम्हें कहा नहीं था यह कमरा मेरा स्टडी होगा ?”

“कब कहा था ?”

शरत को याद आ गया उसने अपना निश्चय श्यामा को नहीं बताया था । उसने सिरफ सोचा भर था । उसके क्रोध का उफान उतर गया और वह खेद प्रकट करता हुआ बोला—“तब गलती मेरी है । मैंने तुम्हें अनजाने तैश में आकर शट-अप कह दिया । खैर यह कमरा स्टडी बनेगा, डाईनिंग रूम नहीं क्योंकि मैं अपने लिए एक ऐसा कमरा चाहता हूँ जहाँ मैं एकान्त में कुछ सोच सकूँ और लिख सकूँ ।”

श्यामा ने उत्तर दिया—“लेकिन इतने कमरे कहाँ हैं ? तीन कमरे ड्रायंगरूम, स्लीपिंगरूम और वार्डरूम बना लिये गये हैं । एक डाईनिंगरूम भी तो होना चाहिए था । तुम खुद सोच लो यहाँ आकर डाईनिंगरूम का होना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है !”

शरत को दोबारा गुस्सा आने लगा । वह छटपटाते हुए बोला—“तुम्हारे लिए जो महत्वपूर्ण है वह मेरे लिए नहीं और जो मेरे लिए है वह तुम्हारे लिए नहीं । अगर डाईनिंगरूम रखने का बहुत शौक है तो इसे बरामदे में बना लो ।”

श्यामा ने उसे एक सुझाव दिया—“ऐसा नहीं हो सकता कि तुम अपना स्टडी-टेबल स्लीपिंगरूम में रखवा लो ।”

“नहीं ।”

“क्यों ?”

“लेटी हुई औरत के पास बैठकर मैं चिन्तन नहीं कर सकता । सज्जी मंडी वाले मकान में रह कर मुझे इसका कड़ा अनुभव हो चुका है । फिर वह मेरी कबज्जोरी और तुम्हारी आवश्यकता वाली बातें नए सिरे से शुरू हो

जाएँगी । मैं सोने वाले कमरे में उसी समय आना चाहता हूँ जब मुझे सख्त नींद आ रही हो ।”

श्यामा आँखें तरेरती हुई बोली—“तुमने मुझे गलत समझा ! मैं ऐसी नहीं हूँ ।”

“मुझे तो अपनी कमजोरियों का पता है । मैं इसे छिपाने की कोशिश नहीं करता । खैर यह बहस बहुत ही फजूल किस्म की है । तुम्हें याद होगा तुमने ही तो कहा था कि मुझे यहाँ लिखने के लिए मन-माफिक एकांत मिल जायेगा और तुम उस एकांत में बाधा नहीं बनोगी ।”

“तो फिर जैसा चाहो कर लो ।” इतना कह कर श्यामा दूसरे कमरे में चली गई ।

शरत मुँह को बुलाकर अपना स्टडीरूम बनाने में जुट गया ।

उसी रात शरत ने अपना स्टडीरूम तैयार कर लिया। स्टडी-टैबल और बाजू वाली कुर्मी उसके पास पहले ही थी। किताबों के लिए कोई अलमारी या रैंक नहीं था। उसने मार्केट जाकर बेंत के बने हुए सस्ती कीमत के दो रैंक खरीद लिए। खूब मेहनत से अपनी किताबों को भाड़ा और पोंछा और ऐसा करते समय उसे लगा जैसे वह अपने पुराने मित्रों से दोबारा मिल रहा जिनसे वह कुछ अर्से के लिए बिछुड़ गया था। कमरे की दीवारों का सूनापन हटाने के लिए उसने दो-चार भारतीय और ब्रिटिश कवियों की तस्वीरें भी टांग दी। उसने खाना भी बहुत कम खाया। वैसे भी श्यामा की अपेक्षा बहुत कम खाता था और चर्बी पैदा करने वाली चीजें बिल्कुल नहीं खाता था और उसे बहुत खीझ होती थी जब श्यामा उसके द्वारा टोके जाने के बावजूद भी उन्हें खाते समय परहेज नहीं करती थी। श्यामा ने उसे बता दिया था कि यदि वह उसके कहने पर चले तो सूख कर आधी रह जाए। मगर आज शरत ने उसे टोका नहीं क्योंकि वह बहुत जल्दी में था। उसकी मनोवस्था उस मुसाफिर की मानंद थी जिसकी गाड़ी प्लेटफार्म से छूट चुकी है और वह दौड़ कर उस में बैठ जाना चाहता हो। श्यामा ने उसे समझाते हुए कहा कि खाना खाने में जल्दी नहीं बरतनी चाहिए। ऐसा करने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। शरत ने कोई उत्तर न दिया। श्यामा ने अभी मुश्किल से आधा खाना खाया होगा कि शरत हाथ धोने के लिए उठ बैठा। जाने से पहले उसने श्यामा से इतना ही कहा कि थोड़ी देर बाद वह मुंडू के हाथ उसे काफी की एक गरम-गरम प्याली भेज दे।

वह स्टडीरूम में आ बैठा, सिग्रेट सुलगा ली और सोचने लगा। उसने अपने

सामने बढिया-सा चिकने पन्नों वाला स्फेद पड खोल रखा था और दूसरे हाथ में पैसिल थी जिसका सुरमा बहुत ही बारीक और नोकदार बना लिया था। उसका विश्वास था सुन्दर अनुभूतियाँ वैसे ही सुन्दर कागज पर और सुन्दर ढंग से लिखी जानी चाहिए। उसकी सिप्रेट खत्म हो गई। फिर उसने दूसरी जलाई .. फिर तीसरी। वह एकाग्रचित्त होकर कुछ महसूस करना चाहता था लेकिन उसकी अंतर्चेतना जैसे काठ हो गई थी। वह खिड़की से बाहर देखने लगा। सर्द अंधेरे के आवरण में तारे मंद-मंद झिलमिल रहे थे। दिन भर हजारों कदमों और मोटरों के टायरों से रौंधे जाने वाली लोदी रोड निढाल और मनसान पड़ी थी। बिजली की बत्तियाँ शराबी की आँखों की तरह घूर-घूर कर देख रही थीं। बाहर बिल्कुल सन्नाटा था मगर वह इतना ज्यादा था कि शरन के विचारों को सम्भन देने की बजाए उन्हें विचलित कर देता था। एक अजीब तरह की विरूपता उस सन्नाटे में आ मिली थी। शरत यह सब देखने-देखते सोचता जाता था लेकिन अभी तक वह अपनी कविता की एक भी पंक्ति लिखने में समर्थ नहीं हो सका था। कई बार ऐसा हुआ कि उसे अनुभूति की प्रकाश डोर मिल जाती। वह ऊपर उठने लगता मगर अगले ही क्षण कोई चीज उसे अपनी तरफ खींचने लगती और उसके दिमाग में बहरीली भिड़ें शू-शू करना शुरू कर देती। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया उसे यकीन होता गया कि कवित्व लिखना उसके बूते से बाहर है। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया उसके भीतर उन भिड़ों का ज़हर फैलने लगा और उसे अपने ऊपर ग्लानिजनक क्रोध आ रहा था। .. वह व्यंग्य लिखने लगा। उसका पैसिल वाला हाथ जो पहले आड़ी-तिरछी लकीरे खींच रहा था एक झटके के साथ तन गया और अक्षर लिखने लगा...अक्षर जो लावे की तरह उबल रहे थे और जल रहे थे ..अक्षर जो ज़हर में बुझे हुए थे और तलवार की काट लिए हुए थे...अक्षर जो सिर्फ तोड़-फोड़ करना जानते थे और मनुष्यता की सिर्फ उपहासजनक तस्वीर थे। इस के लिए शरत को प्रयास करने की जरूरत नहीं थी। उसके मस्तिष्क में विचारों के समूह के समूह उमड़ते चले आ रहे थे और उसका हाथ उन्हें तेज़ी से घसीटता जा रहा था। वह इसी

भोंक में कई घंटे लिखता रहा ।

जब वह उठा उसके जहन पर जो विजड़ता का गुबार-सा था वह बिल्कुल छंट गया था लेकिन उसके हृदय में तीखी जलन सी हो रही थी ।

वह स्लीपिंगरूम में चला आया । श्यामा सो रही थी । टेबल लैम्प की हल्की-हल्की रौशनी में उस पर गिर रही थी । शरत उसके चेहरे को देखने लगा जो बिल्कुल संतुष्ट और शांत था और जहाँ उसके अर्न्तसंघर्ष की परछाई तक न थी । उसके चेहरे से हटकर उसकी नजरें उसकी छाती पर आ गिरी । उसके ब्लाऊज का ऊपरी हिस्सा अपने आप खुल गया था जिसके नीचे उसकी माँसल उष्णता हिलोरें ले रही थी । फिर शरत की नजरें उसके पेट पर आ गिरीं । उसने देखा उसके पेट का वह भाग जहाँ परिधान नहीं था पिघले हुए याकूत की मानंद चमक रहा था । शरत उसे कई क्षणों तक देखता रहा । फिर वह अपने पलंग की तरफ चला आया । सहसा उसकी पाँव की ठोकर से तिपाई पर रखा हुआ पीतल का फूलदान झनझनाता हुआ बोल उठा । श्यामा हड़बड़ा कर उठ बैठी । उसने पूछा :

“कोन ?”

“मैं हूँ शमी ।”

“तुम कब आए हो ? कितने बजे हैं ?”

“दो ।”

“हे राम ! तुम तो पागल हो जाओगे !”

“अब तुम सो जाओ शमी, मुझे बुलाओ नहीं बहुत नींद आ रही है ।”

लाख प्रयत्न के बावजूद भी शरत नए वातावरण से बच नहीं सका । वहाँ पहुँचने के पहले दिन से ही उसे टी-पाटियों और रात्रि-भोजों के न्योते आने लगे । इन न्योतों में कितना मैत्री-भाव था इसके लिए उसे प्रमाण ढूँढने की जरूरत नहीं थी । ये फार्मल व्यवहारिक से न्योते थे जो शिष्टाचार के नाते भेजे जाते थे और शरत इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं था कि न्योता भेजने वाले न्योता पाने वालों से उन न्योतों के रिटर्न की भी अपेक्षा रखते हैं । पहले दो-चार दिन तो शरत कोई न कोई बहाना तराश कर टाल-मटोल करता रहा । इस टालमटोल की सिर्फ यही वजह नहीं थी कि उसे उनके बुर्जवा जीवन-यापन या तौर-तरीकों से नफरत थी, यह भी कि वह उनके समक्ष केवल एक कर्मचारी होने की हैसियत से नहीं जाना चाहता था । वह कुछ भी है और यह कि वह कुछ और भी है शरत जानता था इसे उसके पड़ोस में रहने वाले न तो समझ सकने की योग्यता रखते हैं और न ही इसे कबूल करने के लिए तयार होंगे क्योंकि वे तो ऐसे नहीं हैं । तब अनिवार्य बात है इस तरह के बनावटी मेल-मिलाप से एक तरह की गलतफहमी पैदा हो जाने का डर है जो शरत उन्हीं लोगों के भले या नुकसान के लिए पदा करना नहीं चाहता था । शरत श्यामा से कहने लगता वे लोग जिस हाल में हैं, मस्त हैं । उस से मिलकर यदि वे लोग उसे अजीब-सा या बेढंगा-सा समझने लगे तो ऐसी भर्त्सना को सुनकर वह निश्चय ही अपने को कचोचने लगेगा या सभवतः उन्हीं में से एक-दो मनचले व्यक्ति उस से प्रेरणा लेकर अपनी-अपनी परिस्थिति से बगावत कर दें तब उनकी पत्नियों के लिए कितनी विचित्र समस्या हो जाएगी ! वह उसे कहता, मेल-मिलाप वही अच्छा है जो दिलों

बाहें

का हो । ..मगर टालमटोल और बहाने ज्यादा देर तक नहीं चल सकते थे । अगले इतवार उसने एक जगह से न सिर्फ चाय का न्योता स्वीकार कर लिया बल्कि चाय पीने के उपरांत उसने वहाँ जितने भी अतिथि लोग आए थे उन सब को रात के भोज का न्योता दिया । अतिथियों की संख्या बीस से कम नहीं थी । श्यामा उसके साथ ही थी । जब उसने अपने पति को इतने लोगों को एकसाथ न्योता देने की घोषणा करने हुए सुना वह सचमुच सकते में आ गई ।

श्यामा का सकते में आ जाना इसलिए नहीं था कि उसे इस किस्म की फार्मेल्टीज से घृणा थी । वह तो एक अर्से से उस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी जब उसे भी पार्टियों के प्रबन्ध में अपना विशिष्ट कला-कौशल दिखा सकने का अवसर मिलेगा जो कला-कौशल उसने अपने पिता के घर खूब अच्छी तरह से सीख लिया था । उसके पिता अपनी सामाजिक स्थिति को समझते हुए आए दिन पार्टियों का बंदोबस्त किया करते थे और श्यामा अपनी देख-रेख में उनका प्रबन्ध किया करती थी । उसी के आग्रह के फलस्वरूप शरत ने अपनी बेरुखी को तोड़ दिया था । वह जानती थी ये पार्टियाँ और रात्रिभोज उनके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं सिर्फ इसलिए नहीं कि ऐसा उनकी सामाजिक स्थिति का तकाजा था । सिर्फ इसलिए भी नहीं कि शरत का अपनी तरह के लोगों से मेल-जोल बढ़ेगा । इसमें उसका कुछ वैयक्तिक स्वाभिमान भी था । ऐसे मौकों पर उसे अपने व्यक्तित्व को ... अपने सौंदर्य को एक-साथ बहुत सी स्त्रियों की तुलना में रख कर जांचने और परखने का स्वर्णिम क्षण मिल जाता था और अपने को किसी भी अंश में उन स्त्रियों से न्यून न समझ कर उसे गर्व मिश्रित आनन्द का अनुभव होता था । वे स्त्रियाँ भी उस जैसी बातें करती थीं । वे उस से ज्यादा खूबसूरत भी नहीं थीं फिर भी उनके वैवाहिक जीवन में कोई भी समस्या नहीं थी । यह सब सोचकर शरत का उसके प्रति कटु व्यवहार और भी अखरने लगता और जब से वह यहाँ आई थी यह धारणा उसके भीतर पक्की होती जा रही थी कि शरत बिल्कुल बेवकूफ है !

चाय पीकर जब वे लौट रहे थे तो श्यामा ने कहा—

“यह तुमने क्या किया ? इकट्ठा बीस आदमियों का न्योता दे दिया ।”

शरत बोला—“मैं ने सोचा रोज-रोज की झंझट में यही अच्छा है कि उन सब को एक बार बुला लूं । जो आगे होगा आगे देखा जाएगा ।”

“मगर हमारे पास इतना बंदोबस्त कहाँ है ?”

“जितने डोंगे और प्लेटें और चाहिएँ किराए पर बाजार से मंगवाए जा सकते हैं ।”

“वह तो हो जाएगा । मगर इतने सारे लोगों के लिए पकवान तैयार करने को कितने बड़े-बड़े बरतन चाहिए और कितना तख्तादद चाहिए । सिर्फ एक तो मुझ है हमारे पास । वह अकेला क्या कर सकता है ? शरत यह सचमुच तुमने मूर्खता कर डाली ।”

शरत कुछ सोचता हुआ बोला—“तो चलो इस डिन्नर को कैसल कर दें ।”

“कैसे कैसल कर दे ? ऐसी प्रथा यहाँ नहीं है । तुम्हें यह सब पहले ही सोच लेना चाहिए था ।”

शरत अपनी भूल पर मुस्कराता हुआ कहने लगा—“काफी दिलचस्प-सी समस्या पैदा हो गई है । मगर सुनो ऐसी समस्याओं को समेटने में तुम मुझ से ज्यादा समझदार हो । मेरा विश्वास है कि तुम्हें कोई न कोई तरकीब जरूर मिल जायेगी ।”

श्यामा दो-एक मिन्ट सोचने का पोज बनाकर कुछ सोचती रही । उसे एक तरकीब सूझ गई । वह शरत से बोली—“अब यही हो सकता है आधे पकवान घर पर तैयार कर लिए जायें और आधे होटल से मँगवा लिए जायें । उन्हें बैठाने के लिए दो-चार सोफे और चाहिएँ वह हम साथ 'वाले वार्टर से मँगवा लेंगे ।”

“डाईनिंग चेयरज़ की भी तो जरूरत होगी ?”

“उनकी कोई जरूरत नहीं । आजकल बूफे डिन्नर का रिवाज़ है ।”

“तुम्हारी तरकीब मुझे बहुत पसन्द आई है ।”

इतना कह कर शरत कुछ और सोचता हुआ मुस्कराने लगा ।

उस रात श्यामा बेहद खुश थी। उसने अपनी सब से कीमती साड़ी पहन रखी थी और उसका मेक-अप भी बस देखने लायक था। शादी के बाद उसकी एक साध जो अभी तक उसके दिल में तिरस्कृत सी पड़ी थी आज वह पूरी होने जा रही थी। उसके सामाजिक जीवन का वह एक तरह से प्रारम्भ था और उसे लगा कि लम्बे संघर्ष के बाद आखिर विजय उसी की हुई है और उसने शरत को अन्ततः सत्मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया है जो वह देर से चाह रही थी और जो उसका कर्तव्य भी था। वह इसलिए भी खुश थी कि अच्छा हुआ शरत का अपने ऊटपटांग दोस्तों से पिंड छूट गया है जिन्हें न तो ठीक ढंग से बोलना आता था और न ही कपड़े पहनना आता था। अब वे महफिलें भी नहीं थी जो उसकी नींद हराम कर देती थी। अब शरत के बिल्कुल नये दोस्त होंगे जो प्रमुख कर्मचारी हैं और जिनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति काफी संतोषजनक है। श्यामा खुश थी .. बेहद खुश ! रात्रि-भोज शुरू होने वाला था और अतिथि करीब-करीब आ चुके थे और ड्रायंगरूम में बातों और कहकहों का हंगामा-सा मच गया था। श्यामा खुशी से डोलती हुई चिड़िया की मानिद इधर-उधर फुदक रही थी।...

शरत उन्हीं लोगों के दरमियान घिरा हुआ बैठा था। उसने भी अपना सब से बड़िया सूट पहन लिया था मगर श्यामा के आग्रह करने पर भी उसने अपने बालों में कंधी नहीं की। उन्हें वैसे ही बिखरे-बिखरे और परेशान से रहने दिया। उसकी यह पुरानी आदत थी कि अपनी वेष-भूषा में कोई चीज़ अधूरी छोड़ जाता था। चोटी से लेकर ऐड़ी तक डेंडी बने रहने वालों से उसे बड़ी कोफ़्त होती थी.. मगर कोफ़्त उसे अब भी हो रही थी। वह बातें कर रहा था। कभी-कभी कहकहा भी लगा देता था मगर उसकी तबीयत होती

थी वह व्यंग्य करे और उसके कहकहे अट्टहास के रूप में दनदनाते हुए निकले। वह कोई उपद्रव भी करना चाहता था क्योंकि आध घंटे के भीतर ही उसने अपने अतिथियों के बारे में एक ऐसी चीज जान ली थी कि उसका मन खट्टा होने लगा। वे लोग अपना-अपना दफतर यहाँ भी ले आए थे। उनकी फाइलें यद्यपि यहाँ नहीं थीं मगर वह उन्हीं की बातें कर रहे थे। वे प्रमोशंज और तरक्कियों की बातें कर रहे थे। उनमें गुटबंदी भी थी और यह गुटबंदी उनके दफतर से होती हुई खाने की मेज पर भी आ पहुँची थी। ऐसा लगता था जैसे वेछोटे-छोटे द्वीप हों जिन्हें उपेक्षा का सागर काट रहा हो। एक गुट वाला दूसरे गुट वाले से पहने तो बात ही नहीं करता था अगर विवश होकर उसे बात करनी भी पड़ती थी तो बहुत ही तने हुए, व्यंग्यात्मक लहजे में। उनकी बातें सुनकर शरत को मजा भी आ रहा था मगर अर्न्तजलन भी हो रही थी।

उस समुदाय में एक-दो व्यक्ति ऐसे भी थे जो शरत के अकस्मात् ऐसिस्टेंट से सुप्रिन्डेंट बनाए जाने वाली घटना को जानते थे। शरत प्रतीक्षा में था कि वे लोग अगर सीधे ढंग से नहीं परोक्ष रूप से जरूर छेड़खानी करेंगे और तब स्थिति कितनी उपहासजनक हो जायेगी। तब उसे भी आक्षेप करना होगा। वह चाहता था कि वह भाग जाए या वह कोई उपद्रव कर बैठे ताकि वे व्यक्ति उसे बेवकूफ समझ ले और वे आक्षेप करना एक मिरे से भुला दें।... फिर शरत ने सोचा मुमकिन है यह सब उनके मन का फतूर ही हो! वह शांत होकर बैठा रहा और उनकी हँसी के कहकहों के साथ मुक्त भाव से हँसता रहा।

भोज की समाप्ति के बाद वे लोग थोड़ी देर के लिए दोबारा ड्रायंगरूम में आ बैठे। श्यामा अब भी खुश थी। उसका भोज सफल रहा। खाने के समय किसी भी अतिथि ने नाक-भौ नहीं चढ़ाई। उन्होंने अपनी भूख से कुछ ज्यादा ही खाया और पनीर के कोफते उन्होंने सचमुच बहुत ही पसंद किए जो श्यामा ने अपने हाथ से तैयार किए थे। कई स्त्रियों ने उससे उस पकवान का नुस्खा भी पूछा जो श्यामा ने हँसते-हँसते बता दिया।

दोबारा बातें होने लगीं और कहकहे लगने लगे । एक कर्मचारी ने छुटकी लेते हुए कहा—

“हम ने सुना है शरत साहब एक आर्टिस्ट है ।”

दूसरे बोले—“क्या वाकई ?”

“बेशक ।”

“पति के आर्टिस्ट होने से पत्नी को यह मौज रहती है ।” दूसरे सज्जन वहाँ बैठी हुई महिलाओं को सुनाने की चेष्टा से बोले—“वह अपनी साड़ियों के रंगों की पसंद अपने पति से करवा सकती है ।”

तब जोर से कहकहा पड़ा और वह कहकहा शरत की छाती में शूल की तरह चुभ गया । इसी बीच एक महिला ने कहा—“तभी तो मिसेज शरत की साड़ियों के रंग इतने खूबसूरत होते हैं !”

पहले व्यक्ति ने कहा—“मेरा ख्याल है जब हमें अपनी पत्नियों के लिए साड़ियाँ खरीदने की जरूरत आ पड़े तब शरत साहब से भशवरा लिया जा सकता है ।”

श्यामा हँसती हुई बोली—“जरूर ! इन्हें कोई एतराज नहीं होगा ।”

अपनी पत्नी के अनायास बीच में आ पड़ने से शरत तिलमिला उठा । वह बोला—“मैं ऐसा दबू नहीं हूँ कि अपनी पत्नी की साड़ियों के रंग पसन्द करता फिरूँ ।”

सिरफ़ श्यामा को ही नहीं और भी जितने लोग वहाँ थे उन्हें शरत का उत्तर बेहूदा-सा लगा । शरत का आक्षेप सुनकर न तो उन लोगों के चेहरों पर पीलापन आया और न ही उनकी रीढ़ की हड्डी ही कसमसाने लगी । वे लोग ढाठता से एक-दूसरे को देखकर मुस्कराने लगे । एक सज्जन जो अभी तक चुप बैठे थे कहने लगे—

“सुखी और स्वस्थ वैवाहिक जीवन के लिए दबू होकर ही गुजारा चलता है । यह मैं अपने पन्द्रह साल के अनुभव से कह सकता हूँ ।”

• शरत व्यंग्य से अपने ओंठों को काटकर रह गया । उसने सोचा इन लोगों से बहस करना फ़ज़ूल है । थोड़ी देर बाद बातों का शोर शांत हो गया और एक-एक करके मेहमान विदा होने लगे ।

शरत अब नियमपूर्वक लिखने लगा। रात के नौ बजते ही वह अपने स्टडीरूम में आ जाता और उतनी देर तक लिखता रहता, जब तक कि उसके मस्तिष्क की शिराएँ नींद से बोझिल न हो जाती और उसकी अँगुलियों की पोरें थकन से कराहने न लगती। वह व्यग्र लिखता था और बहुत प्रयत्न के बावजूद भी वह ऐसी मानसिक स्थिति बना नहीं पाता था जिससे कविता को उतार सकना सम्भव हो सके। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए उसे कविता से चिढ़ आने लगी और वह समझने लगा कि यह सिर्फ बहकी हुई भावुकता के सिवा और कुछ नहीं। जहाँ व्यंग्य की पहुँच हो सकती है वहाँ कविता नहीं पहुँच सकती और वह खाह-म-खाह आज तक झक मारता रहा। यह ठीक है कि व्यंग्य में जिदगी का संपूर्ण सत्य नहीं समझा जा सकता मगर जितना भी समझा जा सकता है वह संपूर्ण है। दूसरी ओर कविता तो एक सिरे झूठ है और जो इस झूठ को जरा खूबसूरती से बोल सके वह एक महान् कवि है। इस तरह के तक से वह अपने को संतुष्ट करने लगता।

एक दिन वह कामरेड दीदी को मिलने के लिए चावड़ी बाजार की तरफ चला आया। जब वह उसके दफ़्तर की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, कामरेड दीदी के हँसने की आवाज़ आ रही थी। ऊपर जाकर उसने देखा कि वह किसी युवक के साथ बातों में मसरूफ था।

कामरेड दीदी ने कहा—“आओ भई शरत इधर कैसे भूल पड़े?”

“मिसेज के साथ चाँदनी चौक आया था। सोचा तुम से मिलता जाऊँ।”

“तो बैठो कुर्सी हाज़िर है। मैं दो मिन्ट में इन महाशय जी से निपट लेता हूँ।”

वह युवक शरत की उपस्थिति से बुरी तरह भँपने लगा। अपने लम्बे-लम्बे बालों के कारण वह कोई आर्टिस्ट दिखाई देना था और उसके चेहरे के नख-शिख औरतों से मिलते जुलते थे। कामरेड दीदी उसे कहने लगा—

“मैं ने आपकी कविता पढ़ ली है और आपने देखा ही होगा उसे पढ़ते समय मुझे कितनी हँसी आ रही थी। आप शायद यह समझ रहे हैं कि मैं आपको कम्पलीमेंट दे रहा था। तो अर्ज यह है भाई साहब आपकी कविता एकदम ‘राट’ है। हमारी पत्रिका में यह नहीं चल सकती।”

भेप के मारे उस युवक की कानों की लूइयाँ सुर्ख हो गईं। वह बुझे हुए स्वर में बोला—“आप शायद नहीं जानते इस पर मैं ने कितनी मेहनत की है?”

कामरेड दीदी ने तड़ाक से उत्तर दिया—“कैसे जान सकता हूँ?”

“आप बता सकते हैं इस में क्या दोष है?”

“आप कभी फुसंत के समय आइए। आप देख तो रहे हैं कि मैं किस कदम मसरूफ हूँ।”

वह युवक पिट्टेहुए बच्चे की तरह रुआ-सा मुँह लेकर चला गया। उसके जाते ही शरत ने कहा—

“तुमने बेचारे का अपमान कर दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था।”

“भई मैं ज़रा स्पष्टवादी हूँ। खरी-खरी बात कहे बिना रह नहीं सकता। हा! हा!” वह जोर-जोर से हँसने लगा।

शरत भी हँसने लगा। मगर उसकी हँसी इतनी खोखली थी कि कामरेड दीदी हँसते-हँसते सहसा रुक गया और वह धूरता हुआ बोला—“भई क्या बात है?”

“क्या?” पूछते समय शरत के ओठों पर तल्ख-सी मुस्कराहट थी।

“तेरी हँसी को क्या हो गया है? पहले तू हँसता था तो यूँ लगता था जैसे चांदी के घुंघरू बज रहे हैं और अब तू हँसता है तो ऐसा लगता है कि तेरे पपड़ाए ओठों से अभी खून निकलने लगेगा! और तेरा यह चेहरा भी तो

पहले जैसा चेहरा नहीं रहा । कितना पीला हो गया है और आँखें अन्दर को भँसती जा रही हैं । ऐसी कौन-सी विपत्ता आ पड़ी है ?”

शरत् ने इसका उत्तर नहीं दिया । कुछ क्षण बाद उसने पूछा—“चलो कही चलें जहाँ बहुत शोर हो ।”

“क्यों ?”

“मैं अपने एकांत से बोर हो चुका हूँ ।”

कामरेड दीदी कुछ न समझता हुआ बोला—“तो चलो काफी-हाऊस चलते हैं ।”

कितने ही दिनों बाद शरत काफी हाऊस आया था। वही वातावरण था जिसका वह एक मुदत से अभ्यस्त रह चुका था मगर आज उसे वह बिल्कुल नया-नया लगा। वह शोर चाहता था और शोर की वहाँ कमी नहीं थी और इतना शोर था कि उसे कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती थी। लगता था जैसे टीन के छज्जे पर मूसलाधार बारिश गिर रही हो या बहुत-सी बिल्लियाँ लकड़ी के तख्ते पर अपने नुकीले नाखूनों वाले पैर खुरच रही हों। अजीब-सा कलोहल मचा था और उस कलोहल को चीरते हुए कड़कहों के धमाके पैदा हो रहे थे। वहाँ बैठे हुए लोग कितनी बे-तकल्फी से बातें कर रहे थे, चहक रहे थे और हँस रहे थे। कला और साहित्य पर विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिए जा रहे थे या उनके परखचे उड़ाए जा रहे थे। राजनीति पर गम्भीर विवेचन किया जा रहा था या इसका कचूमर निकाला जा रहा था। कई ऐसे लोग जो सिर्फ फब्तियाँ कसने या सुनने के लिए आए थे और कुछ ऐसे थे जो अपने को क्रांतिकारी घोषित करते थे लेकिन फ्रायड के सैक्सो दर्शन के इलावा उन्हें और कुछ नहीं आता था। कई ऐसे भी थे जिनकी जेब खाली थी लेकिन जो बिजेनिस की बड़ी-बड़ी योजनाएँ सुनाकर अपना शिकार फाँस लेते थे जो उन्हें अपनी जेब से काफी और सिग्रेट पिलाते। वहाँ हर तरह के लोग थे .. बिखरी २ जुल्फों वाले कवि और आलोचक, मोटे शीशों की ऐनक लगाए हुए जर्नलिस्ट, बारीक नफासत से कटी हुई मूछों और लैंडर-बैंग वाले इन्शोरेस एजेन्ट और खुली मोहरी की पैटों और स्टार्च कालरो वाले बिजेनिसमैन ...। और भी कई तरह के लोग थे। मगर आज इन्हे देखकर शरत को कोफ्त नहीं हुई जो पहले हुआ करती थी। वह सोचने लगा कि वे लोग उस की तरह

ही अपनी-अपनी समस्याओं में उलझे हुए होंगे और जहाँ इसलिए आए हैं कि उनकी उदासियां ज़रा बहल जाएं ... उनका मानसिक आक्रोश कुछ अंश तक ठण्ठा पड़ जाए ।

जब वे काफी पीने लगे तो कामरेड दीदी कहने लगा—“भई शरत अगर बुरा न लगे तो मैं तेरी थोड़ी-सी तारीफ़ कर लूँ ?”

“क्या ?”

“तू बहुत ही कड़ाकेदार व्यंग्य लिखने लगा है । मैं तो समझा करता था तू बाहर से जितना भोला दिखाई देता है वैसा ही अन्दर से है । परसों जो तू ने अपना लेख भेजा था, भई सच कहता हूँ, पढ़कर मज़ा आ गया । उस से ज्यादा करारी चोट मध्यवर्ग के नैतिक खोखलेपन पर नहीं लगाई जा सकती थी ।

शरत ने उसके कथन को चुपचाप स्वीकार कर लिया और कुछ बोला नहीं । कामरेड दीदी उसे उकसाता हुआ कहने लगा—

“भई कुछ बोलो भी ?”

“तुमने तारीफ़ की, मैंने सुन ली ।” शरत ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया ।

कामरेड ने ज़रा स्थिर भाव से कहा—“मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि तू न जो साहित्य का मार्ग चुना है, बहुत ही ठीक चुना है और आज के युग की ‘डिमांड’ भी यही है कि व्यंग्य लिखा जाए और हमारे लोग जो बनावटी विश्वास लिए बैठे हैं, उनकी असलियत को उघाड़ कर रख दिया जाए । कविता तो नगरखाने में तूती की आवाज़ की तरह है, जिसे कोई सुनना नहीं चाहता । मैं तो चाहता हूँ कि व्यंग्य लिखने वालों की एक ऐसी पलटन तैयार की जाए जिस से क्रांति आ जाए !”

शरत ज़रा विकृत ढंग से मुस्कराता हुआ बोला—“तेरी यह बात ठीक है, कविता नगरखाने में बस एक तूती की आवाज़ बन कर रह गई है ।”

“ऐसा होना था शरत” कामरेड उसके उत्तर में कहने लगा—“आज का सामाजिक यथार्थ कुछ ऐसा विकृत हो चुका है कि उसे कविता में व्यक्त करने की चेष्टा करना परले दर्जे की कमबख्ती होगी । जो ऐसा करते हैं कितनी बाधें

ढुलमुल और छिलछिली है उनकी कविता ! मैं समझता हूँ वह कविता नहीं गद्य का नया रूप है जिसे वे अलकारों और रूपकों से सजाकर हमारे सामने लाते हैं। मगर उसमें ऐसी आत्मानुभूति नहीं जो हमारे दिलों को नये-नये सत्यों के प्रकाश से चींका सके...उसमें कुछ भी नहीं।”

शरत सोचने लगा, कामरेड दीदी का तर्क कहाँ तक उसके निजी यथार्थ के साथ सम्बन्ध रखता है। कुछ अंशों तक वह उस तर्क में अपने विकृत यथार्थ की तस्वीर देख सकता था। उसे गहरी टीस-सी हुई। वह उस टीस से कुलबुलाता हुआ बोला—“मैंने अब फंसला कर लिया है कि व्यंग्य ही लिखूंगा। इसके लिये मुझे कोई प्रयास भी करना नहीं पड़ता। मैं जिस परिस्थिति में हूँ, खैर छोड़ो इस किस्से को।” वह कुछ और भी कहने जा रहा था मगर जैसे एक भीतरी भटके के साथ वह कहते-कहते रुक गया।

कामरेड दीदी अपनी हाँकने पर तुला हुआ था। वह बोला—“मगर एक बात है जो तुझे ध्यान में रखनी होगी।”

“क्या ?”

“व्यंग्य दोधारी तलवार की तरह है। दूसरों को ज़रब लगाते समय ऐसा होता है कि चलाने वाले का हाथ खुद चल जाये।”

शरत विचलित होकर बोला—“मैं जानता हूँ मेरे हाथ बहुत कच्चे हैं लेकिन मैं इससे डरता नहीं कि मेरा हाथ छिल जाए या चल जाए। मैं यह भी जानता हूँ व्यंग्य करने वाला अपने बारे में बहुत ही संवेदनशील होता है। फिर भी कामरेड, मुझे लगता है, मैंने जो रास्ता चुना है, एक तरह से मेरी मजबूरी का रास्ता है। व्यंग्य कर चुकने के बाद मुझे गहरी अंतर्जलन-सी होने लगती है...एक उपेक्षा या नफरत का भाव मेरे भीतर बना रहता है जिसका समाधान नहीं हो पाता।”

“मुझे तो ऐसा नहीं होता।”

शरत चुप हो गया। थोड़ी देर बाद जब उसने कामरेड दीदी से विदा ली तो वह कैलाश से मिलने के लिए उसके फ्लैट पर गया। फ्लैट को ताला लगा था।

अगले रोज श्यामा ने भी उसे बताया कि वह बहुत कमजोर होता जा रहा है और उसे अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। उस समय वे नाश्ता करने के लिए मेज पर बैठे थे। शरत उसे कह देना चाहता था कि वह जिस अनुपात में कमजोर होता जा रहा है उसी अनुपात में वह मोटी होती जा रही है। वह यह भी कह देना चाहता था कि जो अर्न्तद्वंद्व उसकी आत्मा को विषमय बनाता रहा है और उसकी देह को तपन की भट्टी में भोंकता रहा है वह उसे ..श्यामा को ज़रा भी झभोड़ नहीं सका है। वह जैसे कोई जड़ या निर्जीव-सा पदार्थ हो जो तूफान में पड़े रह कर भी अपने भीतर किसी तूफानी भावना को पनपने न देता हो ..जिसकी पहचान उसकी स्थूलता से आंकी जा सकती है और जिसके सजीव होने का एक मात्र लक्षण यही है कि वे दूसरे सजीव पदार्थों की भाँति सांस ले सकते हैं, बोल सकते हैं, चल-फिर सकते हैं और उनका यह समस्त सजीवता का क्रिया-कलाप किसी भीतरी शक्ति से संचालित नहीं होता बल्कि एक बड़े ही मामूली सत्य से कि वे जड़ न होकर संप्राण हैं।...यकीनन् अगर वह यह सब कह देता तो श्यामा रोना शुरू कर देती मगर सुबह-सवेरे वह कोई फतंगड़ खड़ा करना नहीं चाहता था। दूसरे श्यामा ने जिस सहानुभूति-पूर्ण लहजे में उसके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिंता प्रकट की थी, यह ठीक है वह उसके दिल को छू नहीं सकी मगर इसका मतलब यह नहीं था कि शरत उसे कोई कड़वी बात कहे।

शरत मजे से चाय की चुस्क्रियाँ लेता रहा और सिप्रेट पीता रहा। श्यामा दूध वाला दलिया खा रही थी। उसने दोबारा चिंता प्रकट की। शरत ने पूछा—

बाहें

“तो इसका कोई उपचार ?”

श्यामा बोली—“उपचार तो है मगर तुम मेरी सुनते कब हो ? मैंने तो तुम्हें सौ बार कहा है, ज्यादा चाय न पिया करो । सिग्रेट भी कम पिया करो । खाने के समय ऐसी चीजें खाया करो जिनमें विटामिन और प्रोटीन हों...।”

“जैसा तुम खाती हो, है न ?”

“खाने-पीने के मुआमले में मुझे तुम से ज्यादा समझ है ।”

“बेशक ।”

“मैं यह भी जानती हूँ, ज्यादा चाय पीने से आदमी को यरकान हो जाता है ।”

“यरकान क्या ?”

श्यामा उत्तर में बोली—“तुम्हें यह भी पता नहीं ?”

“मैं डाक्टर नहीं हूँ ।”

“यह यरकान एक बीमारी है । इससे खून पीला हो जाता है ।”

शरत ने हल्का-सा परिहास करते हुए कहा—“खून पीला बेशक हो जाए सफेद नहीं होना चाहिए । मगर सुनो ज्यादा विटामिन और प्रोटीन खाने से भी एक बीमारी लग जाती है ।”

“क्या ?”

“इससे जीने की बीमारी लग जाती है और जब यह बीमारी लगती है आदमी मरने से पहले ही मर जाता है ।”

श्यामा खीझ से भर कर बोली—“यह फ़िलासफ़ी रहने दो ।”

“तो फिर डाक्टरी राय क्या है ?”

श्यामा अपनी दिलिए वाली प्लेट खत्म कर बैठी थी । वह तौलिए से अपने ओंठ पोंछती हुई बोली—“अगर आदमी को पूरी मात्रा में विटामिन और प्रोटीन मिलते रहे तो वह सौ साल तक जी सकता है ।”

शरत ने तुरन्त विकृत ढंग से हँसते हुए कहा—“कौन कमबख्त सौ साल तक जीना चाहता है ?”

“सब जीना चाहते हैं ।”

“झूठ है” शरत बिना उत्तेजित हुए कहने लगा—“हम सिरफ जीने का स्वांग रचते हैं जीते नहीं। अगर मच पूछो तो हम अपनी मर्जी से एक दिन भी नहीं जीते। जब हमें जीने के लिए विवश कर दिया जाता है, तब जीने का भाव नहीं रहता...हम सिरफ मैकेनिकल ढंग से जीने वाली बातें किए जाते हैं। इस लम्बी मानवीय जिंदगी में बहुत थोड़े ही ऐसे क्षण होते हैं जो हमारे अपने होते हैं। बाकी क्षण, दिन, महीने और साल बिल्कुल निरर्थक और मिथ्या से होते हैं।...क्यों ?”

श्यामा क्षुब्ध होकर बोली—“तुम्हारे स्वास्थ्य गिर जाने की दूसरी वजह यह भी है कि तुम बहुत ज्यादा सोचते हो।”

“अब तुम ने ठीक बात कही है। मगर इसका उपचार ?”

“तुम मत सोचा करो !”

शरत दोबारा हँसने लगा। हँसते समय उसके चेहरे का पीलापन और गहरा हो गया था। वह बोला—“तुमने तो बिल्कुल सीधा-सा उपचार बता दिया कि मत सोचा करो। अब यह भी एक सोचने वाली समस्या है।... कितने बजे हैं ?”

“साढ़े नौ।”

“अब तक तो मुझे दफ्तर के लिए तैयार हो जाना चाहिए था।”

शरत मेज़ से उठा और वार्डरूम में आकर कपड़े बदलने लगा।

श्यामा इस बात को जान गई थी कि शरत उसके साथ हमेशा खिचा-खिचा नहीं रहता था। उसने देखा था दिन में कई मौके ऐसे आते थे जब वह ऊलजलूल बातें नहीं करता था और न ही उसका व्यवहार तनाव और खीझ से भरा हुआ होता था। उन क्षणों में वह बिल्कुल बच्चा-सा हो जाता और बच्चे की तरह लाड करने लगता, मचलने लगता और रूठने लगता। उन क्षणों में जब वह उसकी गुदाज कलाईयों पर चुटकियाँ काटने लगता था, श्यामा उसे मना नहीं करती थी। वह उस दर्द को चुपचाप पी जाती। वह भी तो बदले में उसके जिस्म पर कम चुटकियाँ नहीं काटती थी। उसके बालों से खेलते समय उन्हें खींचने लगती थी क्योंकि वे उसे बहुत प्यारे लगते थे। वे क्षण उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थे। उन क्षणों में उसके भीतर का क्षोभ पूरी तरह धुल जाता था और साथ ही उसका यह विश्वास भी बना रहता था कि शरत उसे उपेक्षा नहीं करता... वह उसे प्यार करता है।

एक शाम वह अपनी सहेलियों के साथ शापिग करके लौट रही थी। श्यामा की एक सहेली का नाम कुसुम था। उसकी उम्र तीस या बत्तीस साल की थी। उसकी शादी हुए दस साल से ऊपर हो गए थे। अपनी युवावस्था में वह निश्चय ही आकर्षक रही होगी, मगर अब उसके चेहरे का मांसल तनाव ढीला पड़ गया था और इसे बनाये रखने के लिये वह मैक-फैक्टर की सहायता लेती थी। अब वह अपनी आँखों पर टुकड़ीदार चश्मा लगाती थी। उसके तीन संतानें थी। श्यामा के ब्वार्टर के साथ तीसरा ब्वार्टर उसका था और उसका पति भी शरत की तरह और किसी दूसरे महकमे में ऊँचा कर्मचारी था। श्यामा की बाकी दो सहेलियाँ भी जो उसके

साथ थी ऊँचे कर्मचारियों की पत्नियाँ थी। दूसरी का नाम सरोज था और वह पहली की अपेक्षा दस साल बड़ी थी। वह काफी मोटी थी और तंग जम्पर पहनती थी। बालों का जूड़ा बांधने में उसे कमाल हासिल था। उसकी पाँच मन्ताने थीं। तीसरी जिसका नाम प्रेमो था, उम्र में पहली दोनों से छोटी थी मगर श्यामा से दो-तीन साल बड़ी थी। उसकी शादी हुए पाँच साल हो गये थे। उसके एक सन्तान हुई थी जो लडका था मगर पैदायश के चार महीनों बाद ही मर गया था। अब वह दूसरी सन्तान की प्रतीक्षा में थी और आने वाली सन्तान के लक्षण उसके पेट में प्रकट होने शुरू हो गए थे। इस कारण उमने पेट से खुला रहने वाला ब्लाऊज पहनना छोड़ दिया था। उस शाम उमने जितनी भी चीजें खरीदीं वे सब शरत के लिए ही थीं..... ओब्रलटीन, पालसन बटर, कराफ्ट चीज और न जाने क्या-क्या? कुसुम ने एतराज किया—

“श्यामा यह काम तुम्हारा नहीं।”

श्यामा ने जानते हुए भी पूछा—“क्या?”

“यही कि तुम शापिंग का काम करो और मर्द घर बैठा रहे।”

सरोज बोली—“इसका मर्द तो घोंघा है।”

प्रेमो ने पूछा—“वह कैसे?”

“वह तो घर में बोंबे की तरह छिपा हुआ बैठा रहता है। हमारे मर्द ऐसा करने लगे तो हम बोर हो जाएँ। वे अगर घर में हों तो ख्वामखाह नोक-भोंक करने लगते हैं। मैं सच कहती हूँ ऐसी हालत में हमारा जीना दूभर हो जाए और हम सांस भी न ले सकें।”

कुसुम ने उसका समर्थन करते हुए कहा—“बात तो ठीक है। श्यामा तुम भी बोलो, तुम क्या कहती हो?”

श्यामा ने उत्तर दिया—“उन्हे लिखना होता है।”

सरोज ने कहा—“भई तुम असली बात को छिपाना चाहती हो।”

श्यामा पहले तो कुछ सोचती रही। फिर वह ज़रा झेंपते हुए बोली—
“मे चाहती तो यही हूँ, वह घर पर ही रहें चाहे लिखें, चाहे न लिखें। वह बाहें

श्यामा इस बात को जान गई थी कि शरत उसके साथ हमेशा खिचा-खिचा नहीं रहता था। उसने देखा था दिन में कई मौकों ऐसे आते थे जब वह ऊलजलूल बातें नहीं करता था और न ही उसका व्यवहार तनाव और खीभ से भरा हुआ होता था। उन क्षणों में वह बिल्कुल बच्चा-सा हो जाता और बच्चे की तरह लाड करने लगता, मचलने लगता और रूठने लगता। उन क्षणों में जब वह उसकी गुदाज कलाईयों पर चुटकियाँ काटने लगता था, श्यामा उसे मना नहीं करती थी। वह उस दर्द को चुपचाप पी जाती। वह भी तो बदले में उसके जिस्म पर कम चुटकियाँ नहीं काटती थी। उसके बालों से खेलते समय उन्हें खींचने लगती थी क्योंकि वे उसे बहुत प्यारे लगते थे। वे क्षण उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थे। उन क्षणों में उसके भीतर का क्षोभ पूरी तरह धुल जाता था और साथ ही उसका यह विश्वास भी बना रहता था कि शरत उसे उपेक्षा नहीं करता... वह उसे प्यार करता है।

एक शाम वह अपनी सहेलियों के साथ शापिंग करके लौट रही थी। श्यामा की एक सहेली का नाम कुसुम था। उसकी उम्र तीस या बत्तीस साल की थी। उसकी शादी हुए दस साल से ऊपर हो गए थे। अपनी युवावस्था में वह निश्चय ही आकर्षक रही होगी, मगर अब उसके चेहरे का मांसल तनाव ढीला पड़ गया था और इसे बनाये रखने के लिये वह मैक-फैक्टर की सहायता लेती थी। अब वह अपनी आँखों पर टुकड़ीदार चश्मा लगाती थी। उसके तीन संतानें थीं। श्यामा के क्वार्टर के साथ तीसरा क्वार्टर उसका था और उसका पति भी शरत की तरह और किसी दूसरे महकमे में ऊँचा कर्मचारी था। श्यामा की बाकी दो सहेलियाँ भी जो उसके

माथ थीं ऊँचे कर्मचारियों की पत्नियाँ थी। दूसरी का नाम सरोज था और वह पहली की अपेक्षा दस साल बड़ी थी। वह काफी मोटी थी और तंग जम्पर पहनती थी। बालों का जूड़ा बाधने में उसे कमाल हासिल था। उसकी पाँच सन्तानें थी। तीसरी जिसका नाम प्रेमो था, उम्र में पहली दोनों से छोटी थी मगर श्यामा से दो-तीन साल बड़ी थी। उसकी शादी हुए पाँच साल हो गये थे। उसके एक सन्तान हुई थी जो लडका था मगर पैदायश के चार महीनों बाद ही मर गया था। अब वह दूसरी सन्तान की प्रतीक्षा में थी और आने वाली सन्तान के लक्षण उसके पेट में प्रकट होने शुरू हो गए थे। इस कारण उसने पेट से खुला रहने वाला ब्लाऊज पहनना छोड़ दिया था। उस शाम उसने जितनी भी चीजें खरीदी वे सब शरत के लिए ही थीं..... ओब्लटीन, पालसन बटर, कराफ्ट चीज और न जाने क्या-क्या? कुसुम ने एतराज किया—

“श्यामा यह काम तुम्हारा नहीं।”

श्यामा ने जानते हुए भी पूछा—“क्या?”

“यही कि तुम शापिंग का काम करो और मर्द घर बैठा रहे।”

सरोज बोली—“इसका मर्द तो घोंघा है।”

प्रेमो ने पूछा—“वह कैसे?”

“वह तो घर में बोंबे की तरह छिपा हुआ बैठा रहता है। हमारे मर्द ऐसा करने लगे तो हम बोर हो जाएँ। वे अगर घर में हों तो ख्वामखाह नोक-भोंक करने लगते हैं। मैं सच कहती हूँ ऐसी हालत में हमारा जीना दूभर हो जाए और हम सांस भी न ले सकें।”

कुसुम ने उसका समर्थन करते हुए कहा—“बात तो ठीक है। श्यामा तुम भी बोलो, तुम क्या कहती हो?”

श्यामा ने उत्तर दिया—“उन्हें लिखना होता है।”

सरोज ने कहा—“भई तुम असली बात को छिपाना चाहती हो।”

श्यामा पहले तो कुछ सोचती रही। फिर वह ज़रा झेंपते हुए बोली—
“मैं चाहती तो यही हूँ, वह घर पर ही रहें चाहे लिबें, चाहे न लिबें। वह बाहें

मेरी आँखों से कभी ओझल न हों और मैं उन्हें हर समय देखती रहूँ।”

उसकी सहेलियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं। सरोज ने ज़रा छेड़ने के लिए कहा—

“अब तो नई-नई शादी वाली बात भी नहीं रही श्यामा ! तुम्ही ने तो कहा था शादी को छः महीने हो गए।”

कुसुम ने सरोज से पूछते हुए कहा—“तो क्या छः महीने के बाद शादी फीकी हो जाती है।”

“मेरा अनुभव तो यही है और मेरा ख्याल है तुम्हारा अनुभव भी यही होना चाहिए।”

प्रेमो ने नया शोशा छेड़ दिया—“श्यामा का मद हमारे मदों से कितना भिन्न है !”

“क्या ?”

“देखो न” प्रेमो अपने मंतव्य को ज़रा स्पष्ट करती हुई बोली—“वह तो बिल्कुल कालेज का छोकरा दिखाई देता है। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि उसकी शादी भी हुई है। कितने तीखे-तीखे नख-शिख हैं और कमर कितनी पतली है ! हमारे तो बिल्कुल ढोल लगते हैं। उनके पेट निकल आए हैं और चधिया पर गिनती के बाल हैं।”

इसे सुन वे कितनी देर हँसती रहीं। श्यामा की अन्तर्चेतना की जैसे एक नई परत खुल गई थी। उसकी सहेलियाँ तो चटखारे ले-लेकर अपने मदों के सम्बन्ध में ऐसी बातें करती रही जिनका अधिकार उन्हें समाज नहीं देता मगर श्यामा सोच रही थी, वे शरत को किसी भी कीमत पर खोना पसंद नहीं करेगी। वह न तो उस पर किसी तरह की शर्तें बांधेगी और न ही उसे अपने आप को कचोचने का मौका देगी।

उसी रात उसने शरत से कहा—“शरत ! जो मैं कहूँ उस पर यकीन कर लोगे न ?”

शरत हतप्रभ-सा होकर पूछने लगा—“क्या ?”

श्यामा ने जरा स्थिर भाव में कहा—“मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूँगी कि तुम मुझे सैर वा सिनेमा ले जाओ। ये चीजें मैं तुम्हारी मर्जी पर छोड़ देना चाहती हूँ।”

शरत अचकचाया-सा होकर बोला—“सच ?”

“हाँ, सच।”

उस समय शरत स्टडीरूम से उठकर अपने बिस्तर में आ लेटा था। श्यामा उसके पैताने बैठकर स्वेटर बुन रही थी और स्वेटर बुनते समय उसकी अँगुलियाँ तेज-तेज हिल रही थी। उसकी अँगुलियों के नीचे छोटे-छोटे मास के गड्ढे थे जो ऊपर-नीचे थिरक रहे थे। शरत कुछ क्षणों तक उन गड्ढों का थिरकना देखता रहा। फिर उसने पूछा—

“मैं जान सकता हूँ यह एकाएक परिवर्तन कैसे हुआ ?”

श्यामा ऐसे प्रश्न के लिए तैयार नहीं थी। वह निःश्वास लेकर बोली—“यह परिवर्तन एकाएक तो नहीं हुआ, कई दिनों से मैं सोच रही थी कि मुझे तुम्हारे ऊपर अनावश्यक शर्तें नहीं लगानी चाहिएँ। मुझे वही करना चाहिए जिससे तुम्हारी खुशी बनी रहे।”

शरत ने फझूल-सा प्रश्न किया—“तुम वाकई सोच रही थी ?”

“क्यों ? क्या मैं सोच नहीं सकती ?”

“मुझे ऐसा ख्याल था कि तुम सोचना जानती ही नहीं। तुम बिल्कुल जड़ हो !”

बाहे

“मुझे अपने अपराधों के लिए गहरा पश्चाताप है । मुझे क्षमा कर दो ।”

शरत का दिल पसीज गया । वह बोला—“मुझे तुम से नफरत नहीं है शमी ! मुझे अपने वातावरण से अपनी परिस्थितियों से नफरत है । तुम इतनी दूर क्यों बैठी हो ? यहाँ मेरे पास आ जाओ ।”

श्यामा शरत के पास आ बैठी । शरत ने धीमे से कहा—“याद है हमारा पहला भगड़ा कब हुआ था ?”

पूछे जाने वाले प्रश्न में भर्त्सना या शिकवे का भाव नहीं था । फिर भी श्यामा सुनना नहीं चाहती थी । वह उसे मना करती हुई बोली—“जाने दो शरत ! बीती हुई बातों को याद करने से क्या फायदा ?”

शरत ने कहना शुरू किया—“हम डलहौजी गए थे । शायद वह हमारे मधुचन्द्र का तीसरा दिन था । उस दिन मैं अकेला ही भटकने के लिए होटल के कमरे से चल पड़ा था । तुम थकी हुई थीं और बिस्तर में लेटे रहना चाहती थीं । तुमने मुझे कहा था, एक घंटे के भीतर आ जाना क्योंकि हमारा मैटनी शो देखने का प्रोग्राम था । मगर जब मैं बकरोटा की ढलवानी सड़क पर लम्बे-लम्बे डग भारता हुआ उतर रहा था, तब रात पड़ चुकी थी और मैं खुश था.....बेहद खुश । मैं भूल चुका था उस बात को कि मुझे एक घंटे के भीतर तुमने लौटने के लिए कहा था । स्नोडिन की पहाड़ी पर मैंने जो दृश्य देखा था वह कितना भव्य और रोमांचकारी था...मेरे मस्तिष्क का कोना-कोना उस दिव्य दृश्य की अनुभूति से रोमांचित हो उठा था । जब मैं कमरे में लौटा तुम मेरी तरफ पीठ किए बिस्तर में लेटी थीं । मेरे छूते ही तुम तड़प उठी थीं और तुम्हारे आँसुओं का रुका हुआ बांध खुल पड़ा था । मैं हतबुद्धि-सा तुम्हारा रोना देखता रहा । तुम संभवतः अकेले में बहुत डर गई थीं । तुम ने मेरे देर से आने का कारण पूछा था और फिर मैंने तुम्हें बताया था कि मैंने स्नोडिन की पहाड़ी पर सूर्यास्त का दृश्य देखा था । मुझे लगा था कि वहाँ जैसे सूर्य नहीं था, बल्कि वह एक सुर्ख आग्नेय गेंद थी जिसे पर्वतराज ने किसी पहाड़ी की तर्जनी पर उठा रखा था । मैं उसका घूमना देख सकता था,

उसकी तड़पन...उसकी तरलता...उसके बदलते हुए रंग कभी ऊनाबी, कभी लाल, कभी नीले और कभी श्वेत।...मुझे लगा था कि मैं उसके प्रकाश को अपने हाथों से छू सकता था। यह सब सुनकर भी तुम ने कहा था कि तुम मुझ से नाराज़ हो। तुमने और भी बहुत कुछ कहा था जो मेरे दिल को झुलसने लगा था। मैंने भी तुम्हें न जाने कितना कुछ कह दिया था। इस भगड़े के बाद मैं बाहर बरामदे में आकर कई घंटे सोचता रहा। मेरी चेतना विषण्ण हो गई थी और मेरी भावुकता जल्मी परिदे की तरह कुलबुलाने लगी थी।...मैं कहता हूँ शमी, अगर तुम में उस अनुभूति को समझ सकने की समर्थ होती तो हमारा पहला भगड़ा कभी न होता ?”

“अब सो जाओ शरत” बोलते समय श्यामा की आवाज में तड़प थी—
“अब सो जाओ। लाओ मैं तुम्हारा सिर दबा दूँ।”

श्यामा ने स्वेटर बुनना छोड़ कर उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। उसके माथे पर हाथ रखते ही उसने कहा—“तुम्हारा माथा बहुत गरम है ?”

शरत ने उत्तर दिया—“होगा। मगर मुझे बुखार नहीं।”

श्यामा बहुत देर उसका सिर दबाती रही। जब शरत सो गया तो वह भी उसके साथ लेट गई।

श्यामा एक दिन के लिए अपने पिता के घर चली गई। जाने से पहले उसने कहा था—“मेरे पीछे उदास न होना शरत ! और देखो, तुम्हें मेरी कसम अगर खाने-पीने में लापरवाही की।”

उसे कश्मीरी गेट जाने वाली बस में बैठा कर शरत कई मिन्ट कुछ सोचता हुआ पटरी पर टहलता रहा। फिर वह भी बस में जा बैठा जो कनाटप्लेस की तरफ जा रही थी। अभी-अभी वर्षा होकर हटी थी और बादलों की चादर नन्हे-नन्हे चीथड़ों में विभक्त होकर जोरदार आंधी के थपेड़ों पर उड़ने लगी थी। ढलती दोपहर की पीली-पीली धूप वर्षा से भीग जाने के कारण उदास आकृतियों वाले मकानों पर बड़ी विरूप लग रही थी। सड़कों पर छोटे उड़ाती हुई कारें और बसे इधर-उधर दौड़ रही थी और पटरियों पर चलने वाला जन-समूह जो थोड़ी देर पहले दुकानों के छज्जों और बाल-कोनियों के नीचे खड़ा हो गया था, अब फिर गतिमान हो चला। उनके रूखे-सूखे चेहरों पर वैसी ही रूखी-सूखी भगिमाएँ थीं। यद्यपि वे चल रहे थे, आज फिर शरत को लगा कि वे चल नहीं रहे बल्कि किसी अज्ञात शक्ति से धक्का खाकर आगे को लुडक रहे हों और वह स्वयं भी उसी अज्ञात शक्ति से धक्का खाकर कनाटप्लेस की तरफ जा रहा था। ..यद्यपि वह बस में बैठा था और बस चल रही थी।

आज फिर उसे महसूस हुआ कि वह इस शहर में अजनबी है। उसे लगा कि ये दैत्यों के आकार सी इमारतें उसे अपनी भुजाओं में लपेट लेने के लिए आगे बढ़ रही हैं। ये कोलतार की काली सड़कें, आंधी और निष्प्राण जिनका कोई आदि नहीं, अन्त नहीं, मकड़ी के जाल की तरह चारों तरफ फैली हैं

और वह एक निरीह कीटाणु की तरह उसमें उलझ गया है और जाल की मकड़ी अपनी लम्बी-लम्बी टाँगों पर फलागती हुई उसकी तरफ बढ़ी चली आ रही है। उसने सोचा यदि इस गीली सड़क पर बस फिसल जाए.....! फिर क्या होगा ? ...क़ैश...! समाचार-पत्रों के लिए एक मजेदार टिप्पणी... दस हलाक, पन्द्रह जख्मी। अगले दिन बस में बैठे हुए लोग अपना-अपना अस्त्रबार खोलकर इस समाचार को पढ़ेंगे, वे अपने को सुरक्षित समझ कहने लगेंगे...अच्छा हुआ वे उस कनाटप्लेस को जाने वाली बस में नहीं थे जो लोदी रोड के बस स्टॉप से शाम के चार बजकर पन्द्रह मिनट पर चली थी। शरत अपना नाम उन मरने वालों की सूची में पढ़कर मुस्करा दिया और तब कोई भी जान नहीं सकेगा कि वह एक लेखक था ! उसकी मौत के बाद श्यामा दूसरी शादी कर लेगी ..

तभी एक भटके के साथ उसके विचारों की कड़ी टूट गई...बस ठहर गई। सामने सिधिया हाऊस था।

स्टॉप पर उतरते ही उसे ख्याल आया कि काफी हाऊस चला जाए। वहाँ दोस्त होंगे, शौर होगा और कहकहे...। वह अपने दोस्तों से कहेगा कि पिछले दिनों उसने बहुत कुछ लिखा है और यह भी कहेगा 'तुम जो मेरी साहित्यिक अंत्येष्टी करने की सोचा करते थे, देख लो मैं जिन्दा हूँ। मरा नहीं जिन्दा हूँ।' फिर उसने सोचा यह तो "छोटे मुह बड़ी बात" वाली कहावत होगी। मुमकिन है वे उसका उपहास करे और, कहे कि वह मूलतः एक कवि है जो जिन्दगी के तर्तमान यथार्थ में फंस कर भटक गया मालूम होता है। कविता से गद्य की तरफ आकर निश्चय ही उसका पतन हो चुका है। यह सोचते-सोचते वह काफी हाऊस जाने की बजाए दूसरी तरफ मुड़ गया। सोचा वोल्गा में बैठकर बीयर पिए, जिस से मन की तल्वी कड़वाहट को मेजा जा सके। बरामदे में चलते समय वह सहसा किसी युवती से टकरा गया। इस आकस्मिक टक्कर की प्रतिक्रिया देखने के लिए उसने अपराधी नज़रों से युवती की तरफ देखा। युवती के मुह से निकला—"सिल्ली !" और वह मुस्करा रही थी। शरत बरामदे से उतर कर पटरी पर चलने लगा।

बाहें

वह बोल्गा में आ बैठा । बैरा आया । उसने कहा—“बीयर ।” फिर उसने सिग्रेट जला ली और कुर्सी में आराम से पीठ सटा कर धूँयाँ छोड़ने लगा और सोचने लगा...

श्यामा अपने पिता के घर पहुँच गई होगी । उसका पिता मझे कोस रहा होगा—‘हमने कितनी बड़ी भूल की जो उसके साथ तुम्हारी शादी कर दी ! मैं तो उसे भला आदमी समझा करता था ।’ तब श्यामा मेरे सम्मान की रक्षा करने के लिए कहने लगेगी—‘अब वह बहुत अच्छे हैं बाबू जी । वह कहीं बाहर नहीं जाते और लिखते रहते हैं ।’ इतने में बैरा बीयर ले आया । शरत ने गिलास भरा और मुँह को लगाकर घूँट-घूँट पीने लगा ।

तभी अकस्मात् कैलाश वहाँ आ पहुँचा । वह आते ही बोला—“अकेले-अकेले ही पीने लगे हो ? क्या शराबी हो जाना चाहते हो ?”

शरत ने उत्तर दिया—“अपने से भागने की चेष्टा कर रहा हूँ ।”

“भूठ मत बोला करो दोस्त ! अपने से कोई नहीं भाग सकता । यह स्वत्व का मोह ! जब तक हम जिन्दा है कभी छूट नहीं सकता ।...हाँ, सुनाओ भाभी जी कैसी हैं ?

“अच्छी हैं । कुशलपूर्वक है । अब वह मेरे ऊपर ज्यादा शर्तें नहीं लगाती । भई, तुम भी कुछ पियो ।”

कैलाश ने बैरे से गिलास मगवा कर बोतल में जितनी बीयर अवशेष थी, वह अपने गिलास में डाल ली और इसे एक घूँट में खाली कर दिया । फिर वह हँसता हुआ बोला—“यह शर्तें लगाने वाली बात भी तुमने खूब कही है !”

शरत ने पूछा—“क्यों ?”

कैलाश बोला—“भई असल बात तो यह है कि ब्याह एक खूँटी है और इस खूँटी से जो एक बार बंध गया सो बंध गया । यदि उन में अपने गले में पड़े हुए रस्से को तोड़ सकने की सामर्थ्य हो तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि सौ में से निन्नावे लोग स्वच्छंद होकर फिरने लगे, क्योंकि उनमें कोई भी अपने वैवाहिक जीवन से खुश नहीं होता । उनके गले की रस्सी की लम्बाई जहाँ तक होती है वे उसकी परिधि में रहकर घूमते हैं, विचरते हैं, खेलते हैं और

हँसते हैं मगर यह एहसास कि वह एक खूँटी के साथ बंधे हैं उनकी चेतना को कभी छोड़ नहीं सकता। तुम जरा दूसरी किस्म के आदमी हो, तुम्हारे गले की रस्सी अपेक्षितयः लम्बी हो सकती है मगर तुम इस तथ्य को भूल नहीं सकते कि यह रस्सी एक खूँटी के साथ बंधी है।

शरत अन्तर्चुम्भन-सी महसूस करता हुआ पूछने लगा—“तुम उपहास तो नहीं कर रहे हो?”

“क्यों?”

“मेरी मानसिक स्थिति ऐसी है कि मे नहीं चाहता कि कोई मेरे साथ उपहास करे।”

कैलाश फटी-फटी आँखों से उसकी तरफ देखने लगा और बोला—
“सिनिक कही का ! चलो मैट्रो में चल कर बैठे। आज वहा कैब्रे है।”

शरत कैलाश के साथ मैट्रो में आ गया। वहाँ एक टेबल पर तीन आदमी और दो युवतियाँ पास-पास सटे हुए बैठे थे। उन में से एक आदमी कैलाश को जानता था। वह उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और उसे कहने लगा कि उसे वही बैठना होगा। उसके प्रस्ताव को कैलाश ने हँसते-हँसते मंजूर कर लिया। शरत चाहता था कि वह अकेला ही किमी दूरी मेज़ पर चला जाए मगर कैलाश ने उसका हाथ दबा दिया और उसे विवश होकर वही बैठ जाना पड़ा। फिर परिचय हुआ। वह आदमी जिसे कैलाश जानता था, कनाटप्लेस में किसी ट्रेनिंग कम्पनी का मैनेजर था और उसका नाम केशव था। उसकी नोकदार मूँछें बड़ी सफाई से कटी हुई थी। उसका रंग गोरा था, थोड़ा मोटे और मुस्कराते वक्त उसका सोने का दात चमक उठता था। दूसरे दोनों आदमी बम्बई के व्यापारी थे जो इम्पोर्ट का परमिट लेने के लिए दिल्ली आए थे। वे दोनों युवतियाँ केशव के दफ्तर में स्टैनो थी और देखने में काफी अच्छी थीं। वह जिसका नाम संतोष मल्लिक था, सांवले रंग की होने पर भी अपने व्यक्तित्व में एक ऐसा आकर्षण लिए थी जो शरत को चौंका देने वाला था। कैलाश ने बताया कि शरत लेखक है। अच्छा ही हुआ कि उसने यह नहीं कहा कि वह एक गेजेटिड आफिसर है। तब शरत सचमुच ही उसके कथन को खंडित करने के लिए बोल पड़ता कि वह गेजेटिड आफिसर बिल्कुल नहीं, कैलाश यों ही बेनुकी हाक रहा है। तब कैलाश शर्म से पानी-पानी हो जाता। कैलाश ने उसका जितना परिचय दिया था वह भी उसे स्वीकृत नहीं था। मगर वह चुप रहा। वह युवती जिसका नाम संतोष था यह सुन लेने पर कि वह सांवले रंग का और बिलखी-बिलखी हुई लटों वाला व्यक्ति लेखक

है, वह कुछ क्षणों तक उसे एकटक देखती रह गई और शरत उसकी नज़रों की ताब न लाकर बुरी तरह भेंपने लगा था। उसके चेहरे में सरसराहट-सी हुई जैसे वहाँ चींटियों ने रेंगना शुरू कर दिया हो। फिर वे लोग बातें करने लगे। कई मिन्ट गुजर गए। शरत ने दोबारा युवती की तरफ़ नहीं देखा। वह जानबूझ कर दूसरी दिशा में देखने लगा था और आस-पास बैठे हुए लोगों के बारे में सोच रहा था। करीब-करीब वही बातें जो उसने पहले भी अवसरों पर सोची थी... इनके व्यक्तित्व अलग-अलग दिखाई देने पर भी अलग नहीं! इनका सविनय बात करने का ढंग, शिष्ट हाव-भाव, साबुन धुले शरीर और खड़खड़ाती पोशाकों से उठती हुई स्वच्छता की खुशबू... इस बाहरी छद्म के पीछे वही लोलुप भूख। ..सोचते समय कभी-कभी उसके चेहरे में सरसराहट-सी होने लगती थी। सम्भवतः वह लड़की उसकी तरफ़ देखने लगती थी।

जब केशव बैरे को बुलाकर ड्रिंक का आर्डर देने लगा तो शरत ने अपने लिए मना कर दिया। पीकर वह बहक जाता था और वह नहीं चाहता था कि वे अपरिचितों के सामने अपने अवचेतन का तमाशा करे। केशव द्वारा दोबारा पूछे जाने पर उसने इतना ही कहा—“थैंक्स ! आप शौक कीजिए।”

केशव ने मज़ाक किया—“आप लेखक हैं आपको जरूर पीनी चाहिए।”

शरत तीखा होकर बोला—“आप का तर्क मुझे पसंद नहीं आया। आप मेरे हिस्से की पी लीजिएगा।”

“हम पीएँ और आप न पीएँ, यह कबाब में हड्डी वाली बात होगी।”

शरत ने उत्तर दिया—“मैं किसी दूसरी जगह चला जाता हूँ।”

वह उठने लगा। कैलाश ने उसे जाने से रोक लिया। शरत ने उसके दोस्त को सुनाने के लिए कहा—“भई ! मेरी वजह से आपकी महफ़िल फीकी हो जाएगी। मैं कबाब में हड्डी बनना नहीं चाहता।”

केशव सफ़ाई देता हुआ बोला—“आप नाराज़ न हों। मेरे लिए आप उतने ही आदरणीय हैं, जितने कि आपके दोस्त हैं। जब आप यहाँ आए थे मैंने उसी वक्त ताड़ लिया था कि आपने बीयर पी रखी है। इसी लिए आप से

बाहें

पूछने की घृष्टता की । अब ज़रा हमारी तरफ से भी.....?”

शरत को लगा वह इन्कार करने में स्वतन्त्र नहीं । वह बैठ गया । ट्रिक्स मँगाए गए । शरत जिस डीठता से पहले इन्कार करता रहा था, उससे दुगनी डीठता से पीने लगा । पीते समय वह युवती अजीब नज़रों से देखने लगती थी और तब खुद-ब-खुद शरत के ओंठ व्यंग्य से फँल जाते थे । फिर कैंब्रे शुरू हो गया । संतोष के साथ वाली युवती भी चली गई मगर संतोष वहाँ बैठी रही । उसे सम्भवतः डांस नहीं आता था । शरत अपने भीतर एक कठिन विक्षिप्तता-सी अनुभव करता हुआ चुपचाप पीता रहा । युवती ने पूछा । उसकी आवाज़ बहुत ही मुलायम और कोयल की-सी मिठास लिए थी—

“आप गलत जगह पर आ गए हैं ।”

शरत चौंक गया । उसे लगा जैसे यह आवाज़ उसके भीतर से आई हो । मगर उसने इतना अवश्य देखा था कि उस युवती के ओंठ हिले थे । कुछ धुंधला-धुंधला उसकी आँखों के सामने फँल चुका था । वह उस धुंध में उस युवती का चेहरा तलाश करता हुआ बोला—

“अभी-अभी आपने कुछ पूछा था ?”

युवती के ओंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गई । वह बोली—“हाँ मैंने ही पूछा था ।”

शरत जैसे धुंध से पूछ रहा हो—“क्यों ?”

युवती बोली—“आप पीना नहीं चाहते थे और उन्होंने आपके साथ ज्यादाती की ! आप नशे में अच्छे नहीं लगते !”

शरत को लगा जैसे यह आवाज़ भी उसके भीतर से आ रही हो । वह कठिन होकर बोला—“लगता है आप मेरा उपहास कर रही हैं । मैं आपको बिल्कुल नहीं जानता । इसलिए यह आपकी भी कम ज्यादाती नहीं कि आप मेरा उपहास करने लगें । आप मेरे पास बैठी हुई क्या कर रही हैं ? वहाँ फ्लोर पुर जाइए और नाचिए । मैं जानता हूँ, जब मैं यह सब कह रहा हूँ आप की आँखें व्यंग्य से चमक रही होंगी और आपके ओंठों पर उपहास की

जहरीली मुस्कराहट होगी । मेरे आगे धुंध है और मैं आपका चेहरा नहीं देख सकता हूँ, वरना... । देखिए मेरा सिर घूम रहा है ।”

इतना कह कर शरत ने अपने सामने रखा हुआ गिलास उठा लिया और इसे घटाघट पी गया । फिर जैसे एक भटके के साथ आकृतियाँ बुझ गईं । आर्कस्ट्रा के स्वर चीख कर और टूट-टूट कर बिखर गए और शरत का सिर छाती पर झुककर झूलने लगा था.....

अगली सुबह जब शरत ने आँख खोली वह अपने बिस्तर में था। गत रात्रि की मूर्छा अभी पूरी तरह टूटी नहीं थी मगर थोड़ा-थोड़ा होश आ रहा था। उसका जिस्म तप रहा था और सिर पर लगता था जैसे मनो बोझ आ पड़ा हो और उसकी आँखें भी जल रही थीं। एक ग्लानिजनक बू भी थी जो उसे अपने कपड़ों से निकलती हुई प्रतीत हो रही थी और इस बू ने भी उसे सचेत करने में कुछ अंश तक योग दिया था। वह सामने नज़र आ रही चीजों को पहचानने की कोशिश कर रहा था। उसके सामने दाईं तरफ़ शीशे वाली मेज़ थी जिस पर मैक-अप की चीज़ें बिखरी पड़ी थीं। पास खूँटी पर उसका सोला हैट लटक रहा था। दूसरी खूँटी पर श्यामा की लाल रंग की सलवार थी जिस पर कोई-कोई मटमैली-सी चीज़ चिपक गई थी। शायद छिपकली। फिर वह चीज़ अपनी टाँगों को फैलाकर आहिस्ता-आहिस्ता आगे रेंगने लगी। शायद वह अपने शिकार की तरफ़ जा रही थी।...उस समय शरत की मनस्थली पर पिछली रात वाली घटना की बहुत ही धुँधली-धुँधली स्मृति थी और उस धुँधली स्मृति में एक युवती का चेहरा साफ़-साफ़ देख सकता था और जब उस युवती के ओंठ हिलने लगते थे तब उसका चेहरा किसी गहरी धुँध के पीछे जा छिपता और शरत के मस्तिष्क की खंडित शिराएँ उस चेहरे को बटोरने के लिए गतिमान हो जातीं, फिर सहसा धुँध छा जाती थी और शरत अपनी आँखों को बन्द कर लेता। ज़रा खटका-सा हुआ और शरत ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा—“शमी !”

उसे आवाज़ आई—“शुक्र है तुम्हें होश तो आई ! भई में कैलाश हूँ।

स्यामा अभी नहीं आई, मैंने उसे टेलीफोन कर दिया है। अब तबीयत कैसी है ?”

शरत ने उत्तर में सिर्फ हँ-हाँ कहा। कैलाश कुर्सी से उठकर उसके पैताने आ बैठा। वह मुस्कराता हुआ बोला—“रात तुमने इतनी पी कि अपने होश-हवाश भी पी बैठे। मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में लाद कर लाया था और तब से यहीं हूँ। तुमने वमन कर दी थी याद है ?”

शरत मुन रहा था मगर वह उसके शब्दों के क्रम को जोड़ नहीं पाता था। कैलाश ने कहा—“भई तुम कुछ बोलो तो। मुझे अपनी करतूत पर पछतावा हो रहा है कि मैंने तुम्हें पीने से रोका नहीं। आदमी उतनी पीए जितनी हज़म कर सके। तुम्हारे ऊपर तो पहले न पीने का फतूर था और फिर पीने का फतूर सवार हुआ। पता नहीं तुम किस चीज़ से भागने पर तुले हुए थे। हम तुम्हारे दोस्त हैं मगर ईश्वर जानता है हम तुम्हें आज तक समझ नहीं सके हैं। मैं तुम्हें पहले ही कहा करता था कि मौलिक होकर सोचो मगर इतनी शिद्दत से मत सोचो कि तुम्हारा दिमाग अपनी घुरी से खिसक कर जा पड़े। अच्छा भई ! यह बताओ, उस युवती ने तुम्हें कुछ कहा था ?” वह तुम्हारे बेहोश होते ही चीख पड़ी थी। पता नहीं यह क्या गोलमाल है ?”

कैलाश बोलता गया। शरत कभी अपनी आँखें बन्द कर लेता और कभी खोल लेता। वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था। उसने पानी मांगा।

जब कैलाश उसे पानी पिलाने लगा उसका माथा छूते समय उसका हाथ मानों भुलस गया। वह फिर बोला—“तुम्हें तो तेज़ बुझार भी है ? ठहरो मे किसी डाक्टर को बुलाता हूँ।”

शरत ने धीमे से बुदबुदाया—“नहीं !”

“मगर क्यों ?”

पानी के दो-चार घूँट लेने के बाद शरत की संज्ञा ज़रा लीट आई थी। वह धीरे-धीरे कहने लगा—“मेरा माथा यों ही जला करता है। मुझे ज्वर नहीं।”

बाहें

कैलाश ने उसके चेहरे को छू कर देखा, उसकी गरदन को, उसके हाथों को। इन सब से सेंक आ रहा था। वह उसे झिड़कते हुए बोला—“तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो या अपने आप को। मैं सच कहता हूँ तुम्हें तेज़ बुखार है। अब आराम से पड़े रहो। मैं डाक्टर बुलाने जा रहा हूँ।”

शरत ने दोबारा हुज्जत नहीं की। वह अपने जिस्म को तपते हुए महसूस कर सकता था।

उसी रात शरत का ज्वर उतर गया। मगर कमजोरी इतनी ज्यादा हो गई थी कि वह दो दिन तक बिस्तर से उठ न सका। वह मामूली ज्वर नहीं था। उसे महसूस हुआ वह जैसे अंधड़ का एक प्रबल भोंका था जो उसके जिस्म को वहशत से भंभोड़ कर चला गया था। दो दिन उसका जोड़-जोड़ दुखता रहा और उसका अणु-अणु जैसे मूसल से कूटा गया हो। एक हफ्ते बाद वह क्नाटप्लेस गया। प्लाज़ा के करीब गुजरते समय उसने देखा कि जो युवती कुछ क्षण पहले सामने से चली आ रही थी वह उसे एकटक देखते-देखते उसके दाईं तरफ हट कर ठिठक गई है। शरत भी चलते-चलते रुक गया। उसने मुड़ कर देखा वह युवती अनायास मुस्कराये जा रही थी, यह बात जरूर थी कि शरत भी उसे थोड़ा-थोड़ा पहचान गया मगर वह उसे अपनी स्मृति में बसा सकने में असमर्थ था। शरत उसके करीब आकर बोला—
“आप मुझ से कुछ कहना चाहती हैं !”

वह युवती उत्तर में सिरफ मुस्कराती रही। शरत कहने लगा—“मैंने आपको कहीं देखा जरूर है लेकिन कहाँ देखा है यह मुझे बिल्कुल याद नहीं ! इस मुआमले में आप मेरी कुछ सहायता कर सकती हैं अगर वाकई आप समझती हैं कि आपने मुझे कहीं देखा है या मैंने आप को ? और सुनिये... पिछले दिनों में एक जगह बेहोश हो गया था और दूसरे दिन जब मुझे थोड़ी-थोड़ी होश आने लगी थी तो एक चेहरा मेरी चेतना पर बार-बार उतरने लगता था और मुझे ख्याल आता है वह चेहरा आपके चेहरे से काफ़ी मिलता-जुलता था। फिर धुंध-सी आ जाती थी और वह चेहरा बिल्कुल विलीन हो जाता था। बहुत मुमकिन है मैंने आपको उन लोगों के साथ देखा था

जिन्होंने मुझे शराब पिलाई थी। क्यों ?”

“हाँ।” युवती ने बस इतना ही कहा।

“आपका नाम ?”

“संतोष।”

“आप क्या काम करती हैं ?”

“स्टैनो हूँ।”

शरत कुछ क्षण उसे देख कर अपने मन में विमर्ष करता रहा ! फिर बोला—“आपके चेहरे को देखकर मैं बता सकता हूँ आप भी मेरी तरह भटकी हुई मालूम होती हैं और बहुत मुमकिन है आप भी मेरी तरह अकेली ही हों। देखिये मैं इस मन्हूस जगह पर दूसरे चौथे रोज आता रहता हूँ। कभी देखा नहीं आपको। आप शायद यहाँ नई-नई आई हैं।”

“हाँ।”

‘मुझे याद आता है मैंने आपको कुछ कड़वे शब्द कह दिए थे। वास्तव में उस समय मैं होश में नहीं था ..मैं बेवकूफ हो गया था। मुझे इतनी पीनी नहीं चाहिए थी। मुझे उस कटी हुई मूछों वाले आदमी ने छेड़ दिया था। मेरा ख्याल है अब मुझे चलना चाहिए।’

मगर वह गया नहीं। उस युवती के व्यक्तित्व में कुछ ऐसा संवेदनशील, उच्छल और आग्रहयुक्त था कि वह वहाँ खड़ा रहा। वह इस प्रतीक्षा में था कि वह कुछ कहेगी। कुछ मिन्ट गए और उसे लगा, इस दौरान में उन्होंने एक-दूसरे का बहुत कुछ जान लिया है जो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने एक-दूसरे के दुःख को समझ लिया था।.....

सहसा संतोष ने पूछा—“अब कब मुलाकात होगी !”

“किसी समय हो सकती है जैसे आज।” कहते समय शरत मुस्करा रहा था।

“यानी एक दम ऐक्सीडेंटल ?”

“हाँ ऐक्सीडेंटल। मेरा ख्याल है, हम कभी-कभार जरूर मिला करेंगे

और हमें मिलना ही चाहिए । इतने सारे लोगों के बीच मैं समझता हूँ हमें एक दूसरे को ढूँढ लेने में परेशानी नहीं होगी ।”

संतोष चली गई । शरत कुछ क्षण वहीं खड़े-खड़े उसे जाता हुआ देखता रहा । फिर वह बिल्कुल नज़र न आई । पटरियों पर चलने वाले लोगों के उमड़ते सैलाब में वह विलीन हो चुकी थी

शरत को लगा जैसे बहार का एक भोंका आया हो या नन्हीं-नन्हीं फुहार गिरी हो या फूलों ने सुगन्ध बिखेर दी हो ! उसके भीतर के तपते हुआ बंजर पर किसी भटकते हुए बरसाती बादल ने अपनी समस्त जल-राशि उँडेल दी हो...। संतोष से मिलकर उसे सचमुच शीतलता का एहसास हुआ था । वह न मालूम कितनी देर पटरी पर खड़ा रहा . बहार का भोंका आता रहा ! नन्ही फुहार गिरती रही ! फूल अपनी सुगन्ध बिखेरते रहे और वह उस नवानुभूति की शीतलता में भीजता रहा.....

तीसरे दिन वह दफ्तर से फारिग होकर घर नहीं गया बल्कि क्नाटप्लेस में आ गया। उस समय सूर्यास्त हो रहा था और आसमान पर बादलों के छोटे-बड़े बैलून स्थिर हो गए थे। वातावरण में चहक थी। स्फूर्ति थी। मादकता थी। थोड़ी देर बाद ठण्डी हवा के रेले चलने शुरू हो गये जिन्होंने समूचे वातावरण में आनन्द की एक लहर-सी पैदा कर दी। वह कितनी ही देर बरामदों के चक्कर लगाता रहा। पहले अवसरों पर उसके ओंठों पर वहाँ घूमते समय व्यंग्य का उभर आना अनिवार्य-सा होता था। मगर आज वह नहीं था। उसके भीतर वह विजडता की तलखी भी नहीं थी जो उसकी कृतित्व-चेतना को अब तक कचोचती रही थी। इस समय वहाँ एक हल्की-हल्की संवेदना-सी थी जो उसके आसपास बिखरी असंख्य जीवनानुभूतियों में समाविष्ट हो जाना चाहती थी। आज भी चारों तरफ चिलचिलाता-सा शोर उठ रहा था, नपी-तुली मुस्कराहटों वाले चेहरे थे, खोखली हँसियों के क़हक़हे थे और काली पथरीली सड़कों पर फरटते भरती हुई कारों का हंगामा-सा मचा था...शरत इन सब को उस वातावरण में स्वतः सिद्ध मानकर एक चेहरे की तलाश में था। वह संतोष को ढूँढ रहा था और यह अनुभव उसके लिए सचमुच एक अजीब-सा अनुभव था जैसे उसने अपने आप को अपनी स्थिति से ऊपर उठा लिया हो...अपनी सीमाओं को तोड़ देना चाहता हो। इस अनुभव में एक आनन्दमयी कसक थी जो उसके वैवाहिक जीवन की उदास थकन से कहीं ज्यादा मीठी प्रतीत हो रही थी। उसे लगा कि वह उस चेहरे की एक मुद्रत से तलाश में था और यदि वह चेहरा उसे पहले मिल गया होता तो सम्भवतः वह अपने वर्तमान यथार्थ के हाथों, अपनी परिस्थितियों के हाथों

यों अपमानित वा खंडित नहीं हो सकता था । उसे यकीन था वह इस तरह इतने सारे लोगों के बीच भटकते-भटकते अभी या थोड़ी देर बाद उस चेहरे को जरूर ढूंढ लेगा . ।

सर्दियों की शाम का अंधेरा जल्दी-जल्दी फैलने लगा था । उसने देखा डूबते हुए सूर्य की लाली आकाश में भटक रहे एक छोटे से एकाकी बादल पर अवशेष रह गई थी । वह टिकटिकी बाँधे उस लाली को विलुप्त होता देखता रहा । उसे मायूसी-सी होने लगी कि शायद वह चेहरा जिसका वह तलाश में है उसे न मिले, अगर मिल भी जाए तो मुमकिन है वह उसे पहचान भी न सके । बरामदों में बिजली के तेज कमक़मे रोशन थे । उसने सोचा बिजली की रोशनी में वस्तुओं के वास्तविक रंग दिखाई नहीं देते । वह उस एकाकी बादल को देखने के लिए ठिठक गया था । वह फिर चलने लगा ।

थोड़ा आगे जाकर जहाँ बरामदे की एक पाल खत्म होती थी उसे विवश होकर रुक जाना पड़ा । आगे सड़क थी जहाँ कारों की एक लम्बी-सी कतार उसका रास्ता काटकर धीरे-धीरे सरक रही थी । सहसा उसने देखा संतोष सामने बरामदे से निकल कर दाईं दिशा में घूम गई है । उसने उसे यकीनन् पहचान लिया था, वह संतोष ही थी । वह सड़क को पार कर लेना चाहता था मगर कारों की पक्ति अभी खत्म नहीं हुई थी । वह बहुत ही धीरे-धीरे सरक रही थी । उसने चाहा कि वह संतोष को आवाज़ देकर रोक ले मगर वह इतनी दूर जा चुकी थी कि उसकी आवाज़ वहाँ तक दूर नहीं जा सकती थी और वहाँ ट्रैफिक और लोगों का शोर भी कितना था ! सड़क के साफ होते ही वह भागता हुआ दूसरी तरफ चला गया और जिस दिशा में संतोष गई थी वह कोई दो फर्लांग उसके पीछे जाकर तेज-तेज चलता गया । मगर वह उसे नहीं मिली । वह कहीं भीड़ में खो गई थी ! वह एक जगह ठिठक कर स्तम्भित-सा खड़ा हो गया । अकस्मात् उसे एक आवाज़ ने चौंका दिया । यह आवाज़ उसकी पत्नी श्यामा की थी—

“शरत ! बात तो सुनो कहाँ भागे जा रहे थे ?”

शरत सकपका कर उसकी तरफ देखने लगा । श्यामा की सांस चढ़ी हुई

थी और उसकी मुखाकृति चिंतित और घबराई हुई सी थी। शरत कुछ बोला नहीं। उसके चेहरे पर भाङ्ग-सी पुती हुई थी और श्यामा के आकस्मिक आघमकने से उसका स्पन्दन जोर-जोर से बजने लगा था जैसे पुलिस के संतरी ने उसे अपराध करते समय पकड़ लिया हो। श्यामा बोली—“मैं वहाँ स्टाल के पास खड़ी थी और तुम मेरे पास से भागते-भागते गुज़रे थे। तुमने मुझे देखा नहीं था ?”

“नहीं ?”

“तुम भाग क्यों रहे थे ?”

“मैं एक चीज की तलाश में था जो मैं जानता था यहाँ नहीं है फिर मैं उसका पीछा करने से तस्कीन होती थी। . तुम यहाँ कैसे हो ?”

“मैं अपनी सहेलियों के साथ शॉपिंग करने आई थी। तुम तो दफ्तर में सीधे इधर चले आए और मेरे साथ चाय भी न पी। मैंने तुम्हारे लिए खस बेसन के पूए बनाये थे। अब चलो।”

शरत श्यामा के साथ लौट आया। स्टाल के पास श्यामा की सहेलियाँ खड़ी थीं। वे शरत को देखकर दबी-दबी मुस्कराने लगी क्योंकि उन्होंने भी उसे भागते हुए देखा था। कुसुम ने परिहास किया—“इन्हें पकड़ कर ले आई हो श्यामा ? हम तो तुम लोगों की रेस देखकर खूब हँस रही थीं !”

श्यामा ने उत्तर दिया—“मुझे ज्यादा नहीं भागना पड़ा। वह अपने आप ठहर गए थे।”

“तुम्हें देखकर ?”

“इन्होंने तो मुझे नहीं देखा था।” श्यामा ने उत्तर दिया।

शरत के मन का आतक अब उतर गया था। श्यामा जिस ढंग से उसके सम्मान की रक्षा कर रही थी इसे देख-देख कर उसे बहुत मज़ा आ रहा था। यह भी उसी अनुभूति का अंश था जो उसे संतोष के चेहरे को तलाश करते समय हो रही थी। श्यामा की दूसरी सहेली प्रेमो बोल पड़ी—

“आर्टिस्ट लोगों के बारे में सुना था कि वे ज़रा अजीब-से व्यक्ति होते हैं। अब तो प्रमाण की भी जरूरत नहीं। हमने अपनी आँखों से देख लिया है।”

इस पर वे खिलखिलाकर हँस पड़ी। शरत मुस्कराता हुआ श्यामा की तरफ़ ऐसी नज़रों से देखने लगा कि अपनी सहेली के कटाक्ष का उत्तर उसे ही देना होगा। श्यामा की भवें कुछ तन गई थीं। वह सम्भवतः कुछ सोच रही थी। कुछ क्षणों बाद वह जैसे स्वस्थ होकर शरत से कहने लगी—
 “तुम्हारे लिए मैंने कुछ मोज़े खरीदे हैं। इस लिफाफे में पड़े हैं। इन्हें देख लो। अगर पसन्द हों तो इन्हें रख लो। नापसन्द होने पर अभी-अभी बदलवाए जा सकते हैं।”

शरत को ख्याल आया उसके पहले मोज़े सचमुच फट चुके थे। श्यामा उसकी आवश्यकताओं का कितना ख्याल रखती है ! श्यामा ने जो नए मोज़े खरीदे थे वे सचमुच उसे पसन्द आए। शरत वहाँ अधिक देर खड़ा नहीं रहा। श्यामा को कह कर कि वह सीधा घर जा रहा है वह बस-स्टॉप की तरफ़ चला आया। श्यामा रोज़मर्रा काम आने वाली दूसरी चीज़ें खरीदने में जुट गई।

जब श्यामा अपनी सहेलियों के साथ क्नाटप्लेस से चली तो कुसुम ने कहा—

“श्यामा ! एक बात कहूँ बुरा तो नहीं मनाएगी ?”

“क्या ?”

“तुम्हारे पति को भागता हुआ देखकर मुझे शक हुआ था कि शायद वह किसी लड़की के पीछे भाग रहे हों ।”

श्यामा के दिल में अन्तर्चुभन-सी हुई जो उसने अपनी भंगिमा में प्रकट न होने दी । वह स्थिर भाव से बोली—“तुम्हें ऐसा शक नहीं करना चाहिए । मैं जानती हूँ वह जरा भावुक है । मगर उनका हृदय स्वच्छ है ।”

कुसुम बोली—“तुम इन पति लोगों के फलसफ़े को नहीं जानती । वे बहुत ही ऊटपटाँग होते हैं ।”

कुसुम ने पतियों के ऊटपटाँग होने के बारे में जो फतवा दिया था इसे सुनकर सरोज और प्रेमो बहुत देर तक हँसती रही । फिर प्रेमो ने मचलते हुए कहा—

“आर्टिस्ट की बीबी तो हँसी ही नहीं । उसकी राय भी तो सुन लेनी चाहिए ।”

कुसुम ने उत्तर दिया—“मेरे ख्याल में वह सोच रही है कि मैंने कितनी सच्ची बात कही है ।”

श्यामा ने तमक कर कहा—“मैं दूसरों के पतियों के बारे में कुछ नहीं कहती । मुझे मेरे अपने पर पूरा भरोसा है ।”

सरोज ने कहा—“हम स्त्रियाँ सिवाए भरोसा रखने के और कर ही क्या सकती हैं ? फिर भी दाल में काला बता देना हमारा फर्ज हो जाता है ।”

वे चारों टांगों में बैठी थीं और अब उनका टांगा बारहखंभा रोड से होता हुआ इंडिया गेट को जाने वाली सड़क पर मुड़ गया था। श्यामा बीती घटनाओं को याद करके व्यथित-सी हो गई थी और यह व्यथा उस क्लेश की थी जो उसने किन्हीं थोथे मनोविकारों के वश में आकर शरत को दिया था। हालांकि वह ब्याह के दिन से उस से मुहब्बत करने लगी थी और आज तक करती आई थी। उसे चुप पाकर कुसुम ने कहा—

“माझूम होता है तुम उसी बात को सोच रही हो जो मैंने कही थी। तुम्हें सोच नहीं करनी चाहिए। आज उन्हें अच्छी तरह खुश कर देना, उनके दिमाग पर अगर किसी लड़की-वड़की का भूत हुआ तो भाग जाएगा।”

श्यामा उत्तर में बोली—“मैं यह नहीं सोच रही थी कुसुम ! मैं कुछ और सोच रही थी। मैंने उन्हें बहुत दुःख दिया है।”

“दुःख दिया है। किस बात का ?”

कुसुम के पूछने पर सरोज और प्रेमो भी श्यामा की तरफ देखने लगी। श्यामा कहने लगी—

“मैं उनके आदर्शों को तोड़-फोड़ देना चाहती थी और मैं बता नहीं सकती मैंने कैसे-कैसे कड़वे शब्दों में उनके आदर्शों का उपहास किया था क्योंकि उन आदर्शों की महानता के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। मेरी बुद्धि पर अपने समाज के कुछ ऐसे संस्कार पड़ गए थे कि मैं समझने लगी थी कि वह भटक गए हैं और उन्हें सीधी राह पर लाना मेरा फर्ज है। यह फर्ज-वर्ज कुछ नहीं था सिर्फ मेरी बेसमझी थी और यह मेरी बेसमझी कभी-कभी बड़ी ही उध्रुंखल-सी हो जाती थी.....।”

श्यामा ने अपने अंतिम वाक्य को स्पष्ट करना नहीं चाहा। एक क्षण के लिए उसकी मनस्थली पर अतीत के वे संस्मरण उभर आए जब उसकी वासना प्रतिहिंसक होकर शरत के अभिसान को तोड़-फोड़ देने के लिए उन्मत्त हो जाती थी। सरोज बोली—

“पति-पत्नी में भगड़े-फसाद तो होते ही रहते हैं। मगर यह जो तुम
बाहें।

तह रही हो, हमें तो बिल्कुल समझ नहीं आया। क्यों कुसुम ! तुम्हें कुछ समझ आया ?”

कुसुम ने अपनी राय प्रकट की—“मुझे भी कुछ समझ नहीं आया। मेरा ख्याल है श्यामा फिलासफर हो गई है।”

प्रेमो ने अपनी तरफ से कहा—“आर्टिस्ट की पत्नी जो ठहरी।”

कुसुम ने मजाक करने की चेष्टा से कहा—“आर्टिस्ट की पत्नी होना एक मुसीबत है।”

श्यामा बोली—“यह एक जिम्मेवारी है।”

उसकी सहेलियाँ हँसने लगी। श्यामा को लगा कि वे उसे कभी समझ नहीं सकतीं। वह भी कभी इन्हीं औरतों की तरह थी मगर अब वह इन से कितनी दूर जा चुकी है !

जब श्यामा टांगे से उतर कर अपने क्वार्टर में आई, तो उसने देखा कि शरत के स्टडीरूम की बत्ती जल रही थी।

शरत कनाटप्लेल से आकर अपने स्टडीरूम में आ बैठा था और अब उसे लिखते-लिखते दो घण्टे हो गए थे। उसके कमरे की वह खिड़की खुली थी, जहाँ से वह बाहर का दृश्य देखा करता था। उस रोज़ आसमान में चाँद भी था और उसके सामने चाँदनी दूधिया आबशार सदृश्य चुपचाप गिर रही थी। समूचा दृश्य इन्द्रजालिक और अलौकिक-सा दिखाई दे रहा था। शरत वास्तव में रोजमर्रा की तरह व्यंग्य लिखने के लिए बैठा था लेकिन थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वह व्यंग्य नहीं कविता लिख रहा था। वह उसी अनुभूति की शीतलता में भीज रहा था जो तीन दिन पहले उसे संतोष से मिल कर हुई थी। लिखते समय उसे महसूस हो रहा था, जैसे बहार का भोंका आ गया हो...नन्हीं-नन्ही फुहार गिर रही हो और फूल अपनी सुगंध बखेर रहे हों। इस समय उसकी पेंसिल की नोक पर जो शब्द उतर रहे थे वे लावे की तरह आग्नेय नहीं थे और न ही वे बिच्छू के डंक की तरह ज़हरीले थे। वे बहुत ही मुलायम और मासूम शब्द थे जिनमें मिलन की तड़प थी और विछोह की निराशा..उनमें सपनों की मिठास थी, रौशनी थी और खुशबू थी, उसमें एक विचित्र तरह का उद्बोधन था जिसके एहसास से रोम-रोम में कलियाँ-सी चटकने लगती हैं और सृजन की चाहे बेताब होने लगती हैं। शरत प्रयास के बावजूद भी व्यंग्य न लिख सका।

वह अपनी कविता वाले पन्ने को लेकर श्यामा के पास आ गया। श्यामा अभी जाग रही थी और मुँह में कुछ गुनगुनाती हुई स्विटर बुन रही थी।

बाहें

[६७

कह रही हो, हमें तो बिल्कुल समझ नहीं आया। क्यों कुसुम ! तुम्हें कुछ समझ आया ?”

कुसुम ने अपनी राय प्रकट की—“मुझे भी कुछ समझ नहीं आया। मेरा ख्याल है श्यामा फिलासफर हो गई है।”

प्रेमो ने अपनी तरफ से कहा—“आर्टिस्ट की पत्नी जो ठहरी।”

कुसुम ने मजाक करने की चेष्टा से कहा—“आर्टिस्ट की पत्नी होना एक मुसीबत है।”

श्यामा बोली—“यह एक जिम्मेवारी है।”

उसकी सहेलियाँ हँसने लगी। श्यामा को लगा कि वे उसे कभी समझ नहीं सकती। वह भी कभी इन्हीं औरतों की तरह थी मगर अब वह इन से कितनी दूर जा चुकी है !

जब श्यामा टाँगों से उतर कर अपने क्वार्टर में आई, तो उसने देखा कि शरत के स्टडीरूम की बत्ती जल रही थी।

शरत क्नाटप्लेल से आकर अपने स्टडीरूम में आ बैठा था और अब उसे लिखते-लिखते दो घण्टे हो गए थे। उसके कमरे की वह खिड़की खुली थी, जहाँ से वह बाहर का दृश्य देखा करता था। उस रोज़ आसमान में चाँद भी था और उसके सामने चाँदनी दूधिया आबशार सदृश्य चुपचाप गिर रही थी। समूचा दृश्य इन्द्रजालिक और अलौकिक-सा दिखाई दे रहा था। शरत वास्तव में रोजमर्रा की तरह व्यंग्य लिखने के लिए बैठा था लेकिन थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वह व्यंग्य नहीं कविता लिख रहा था। वह उसी अनुभूति की शीतलता में भीज रहा था जो तीन दिन पहले उसे संतोष से मिल कर हुई थी। लिखते समय उसे महसूस हो रहा था, जैसे बहार का भोंका आ गया हो...नन्ही-नन्ही फुहार गिर रही हो और फूल अपनी सुगंध बखेर रहे हों। इस समय उसकी पेंसिल की नोक पर जो शब्द उतर रहे थे वे लावे की तरह आग्नेय नहीं थे और न ही वे बिच्छू के डंक की तरह जहरीले थे। वे बहुत ही मुलायम और मासूम शब्द थे। जिनमें मिलन की तड़प थी और विद्योह की निराशा..उनमें सपनों की मिठास थी, रौशनी थी और खुशबू थी, उसमें एक विचित्र तरह का उद्बोधन था जिसके एहसास से रोम-रोम में कलियाँ-सी चटकने लगती हैं और सृजन की चाहे बेताब होने लगती हैं। शरत प्रयास के बावजूद भी व्यंग्य न लिख सका।

वह अपनी कविता वाले पन्ने को लेकर श्यामा के पास आ गया। श्यामा अभी जाग रही थी और मुँह में कुछ गुनगुनाती हुई स्विंटर बुन रही थी।

बाहें

शरत कमरे की दलीज पर आकर कुछ क्षण ठिठका रहा, फिर बीला—

“श्यामा आज मैं बहुत खुश हूँ ।”

“सच ?”

“तुम भी खुश हो न ?”

“बहुत !”

सुनो ! शादी के बाद आज पहला अवसर है, जब मैंने कविता लिखी है ।

श्यामा उत्तर में बोली नहीं, चुप रही । शरत ने पूछा—

“ तुमने सुना है जो मैंने कहा ?”

“हाँ ।”

“इसका मतलब यह है, शमी ! मैं मरते-मरते बच गया हूँ । वह जो विजड़ता का बोझ मेरी चेतना पर कुण्डली मारे पड़ा था, मेरा ख्याल है वह हट गया है । अब मुझे तलखी भी नहीं होती । वह कफ़स भी नहीं रहा जिसकी तीलियों को तोड़ देने की कोशिश में मैं अपने पंखों को लहलहाकर लेता था !”

श्यामा ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—“वह कफ़स स्वयं ही टूट चुका है ।”

शरत ने भट से उत्तर दिया—“ऐसा होता है शमी ! परिदे की दुर्दशा को देखकर कभी-कभी कफ़स का दिल भी दया से भर जाता है ।”

“दया वाली बात नहीं । शायद टूटने में...अपनी तीलियों को बिखरा देने में कफ़स को ऐसा सुख मिला हो जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था । खैर छोड़ो इस बहस को...आओ अब खाना खा लें ।”

“तुमने अभी खाना नहीं खाया ?”

“नहीं ।”

“क्यों ?”

श्यामा को शरत का प्रश्न कुछ अजीब-सा लगा । वह चुप रही । शरत बोला—

“शमी ! यह अच्छा नहीं कि तुम रोज़-बरोज़ मेरी प्रतीक्षा करती रहो और भूखी रहो । तुम्हें जब भूख लगे खा लिया करो । समझ नहीं आता तुम्हें यह क्या होता जा रहा है ? जब तुमने मेरे ऊपर शर्तें लगाना छोड़

दिया है तो मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि यह सहन कर सकूँ कि तुम मेरे कारण अपने ऊपर शर्ते लगा लो ।”

सुनते समय श्यामा की आँखों में आँसू आ गए । शरत ने देख लिया, वह रो रही है, वह उसे झिड़कता हुआ बोला—“ये आँसू दिखाने की क्या जरूरत है ? मैं वैसे भी समझ सकता हूँ, तुम बहुत कृतव्यप्रायणा हो गई हो !”

शरत व्यंग्य करके रसोई की तरफ चला आया ।

कल शाम वाली अनुभूति के बावजूद भी अगली सुबह शरत की मानसिक स्थिति कुछ ठीक नहीं थी। कुछ ही घंटों में बहुत बड़ा अन्तर पड़ चुका था। वह अनुभूति जिसने उसके दिल में कवित्व की उमंगें उठाई थी और उसे नई-नई भावनाओं से गुदगुदाया था, उस अनुभूति के साथ और भी कई चीजें संश्लिष्ट हो गई थीं, जिन्होंने उसके उल्लास को फीका कर दिया था। सुबह आठ बजे जब वह अभी बिस्तर में ही पड़ा था और वह गरम-गरम चाय की प्याली पी रहा था जो श्यामा उसे दे गई थी, वह अपने दिल ही दिल में बेहद लज्जित था और इस लज्जा से पीछा छुड़ाने की कोशिश में वह खीभ रहा था। वह खीभ श्यामा की वजह से हो रही थी। श्यामा ने उसे अपनी तरफ से कुछ भी नहीं कहा था। जब से वे जागे थे, श्यामा ने उसे मुश्किल से तीन-चार वाक्य कहे होंगे, जो बहुत ही साधारण किस्म के थे। श्यामा चुपचाप अपना काम करती रही। उसने चुपचाप ही पहले शरत की कमीजें निकाल कर जहाँ-तहाँ बटन उखड़ गए थे वहाँ नए बटन लगा दिए। फिर उसने उसकी टाईयों को बटोरा जो इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं और उन्हें पेपर के बक्से में सुचारू रूप से तैह करके रख दिया। फिर वह बिजली का प्रैस लगाकर उसकी पैंट प्रैस करने लगी। उसकी ऐसी क्रियाओं को देखकर शरत को खीभ हो रही थी और वह छटपटा रहा था। वह नहीं चाहता था श्यामा इतनी उदार होने लगे। वह यह भी नहीं चाहता था कि वह इसनी कृतव्यपरायणा हो। उसे लगा कि वह उसे चिढ़ाने पर तुली है और शरत की इस खीभ के नीचे थोड़ी-बहुत उस घटना की कड़वाहट भी थी जब श्यामा ने सहसा आकर उसके अपराध को नंगा कर दिया था जब वह संतोष के पीछे भाग

१००] बाहें

रहा था। वह यह भी चाहता था कि श्यामा पहले जैसी श्यामा होकर उस घटना की सफाई मांगे और उसके साथ भगड़ा करे। वह उसे पूछे, उसका रंग फक क्यों हो गया था और वह सब गोलमाल क्या था ! वह उसे बदमाश कहे ..हरजाई कहे ! मगर श्यामा चुप थी। उसे उसकी चुप्पी से खौफ आ रहा था। श्यामा के चेहरे पर सौम्यता जैसी कोई चीज प्रकट हो गई थी। शरत चाहता था वह चेहरा सौम्य न होकर क्रोध और उपहास की रेखाओं से विकृत हो जाए और उसके ओंठ चुप्पी से सिये न जाकर तिरस्कार उगल रहे हों और उसकी जुबान कैवी की तरह कटकटाती हुई चल रही हो। वह यही चाहता था। अपनी लज्जा और खीझ से छुटकारा उसे इसी सूरत में मिल सकता था।

जब श्यामा उसकी पेंट प्रैस कर चुकने के उपरांत उसे हैंगर में टाँग रही थी, शरत खीझ से भरा-भरा बोला—

“श्यामा ! सुनो !” बोलते वमय उसकी आवाज़ असाधारण रूप से कठिन थी, जिसे सुनकर श्यामा सकपका गई। यह पाकर भी उसे दुःख हुआ कि शरत उसे शमी कहने के बजाए श्यामा कह कर सम्बंधित कर रहा था। श्यामा ने स्थिर भाव से पूछा—

“क्या ?”

“तुम मेरे लिए एक मुसीबत बनती जा रही हो ?”

“मुसीबत ? मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी ?”

“मतलब साफ़ है। तुम...तुम खुद सोच सकती हो।”

“मेने तो तुम्हें कुछ नहीं कहा।”

शरत के दिल में खटका हुआ। उसने सोचा, वह कल वाली घटना का जिक्र करेगी। उसने उसके मन का चोर पकड़ लिया है और शरत ने इसी ढंग से पूछा कि वह उसके मन का चोर पकड़ ले—

“किस बात के लिए कुछ नहीं कहा ?”

“किसी भी बात के लिए।”

श्यामा का उत्तर उसे जँचा नहीं। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा आया।

वह आदेश में आकर बोला—“यही तो मुसीबत है, तुम मुझे कुछ नहीं कहतीं । तुम कभी कुछ नहीं कहतीं और तुमने एक मुद्दत से कहना छोड़ दिया है । मैं चाहता हूँ तुम अपना स्वभाव मत बदलो । तुम मुझ से उलझती रहो । मेरे साथ बकबक करो, जो तुम घंटों किया करती थी और जिस में तुमने खास महारत हासिल कर ली थी । तुम मेरे साथ नर्मी से पेश मत आओ । मुझे जलाओ और मैं उस जलन से छुटकारा पाने की तरकीबें सोचता रहूँ । तुम्हारी यह नर्मी, यह उदारता, यह कृतव्यपरायणता मुझे लज्जित करने लगी है । यह तुम्हारा स्वार्थ है श्यामा !”

श्यामा की आँखों में आँसू भर रहे थे । वह अपने भीतर एक दारुण टीस-सी अनुभव करती हुई पूछने लगी—“स्वार्थ ? वह कैसे ?”

“यह तुम्हारा स्वार्थ है...बेशक !” शरत अपनी अपराधी चेतना से जैसे विचलित होकर बोला—“मेरा ख्याल है तुम अपनी उच्चता प्रमाणित करना चाहती हो ताकि मैं यह समझ लेने में विवश हो जाऊँ कि मैं बहुत ही नीच हूँ । तुम शायद यह घोषित करना चाहती हो कि तुम अपनी कृतव्यपरायणता में महान् हो और मैं कपटी हूँ । मैं जब भी तुम्हारे समक्ष...तुम्हारी कृतव्यपरायणता के समक्ष खड़ा होऊँ, मैं तुम्हारी सच्चाई देखूँ और तुम मेरा झूठ देखो...”

श्यामा सिसकती हुई उसे टोक कर बोली—“ऐसा मत कहो शरत ! तुम कितने अच्छे हो...”

“मैं अच्छा नहीं हूँ । मैं था अब नहीं हूँ ।”

“नहीं शरत ! तुम्हें अपने को लांछित नहीं करना चाहिए । मैं बाहर चली जाती हूँ ।”

वह बाहर चली गई । शरत नहीं चाहता था वह जाए । श्यामा के चले जाने के बावजूद भी उसकी खीझ कम नहीं हुई थी । जिन आदर्शों में वह श्यामा को गढ़ देना चाहता था वह उन्हीं के सामने लज्जित और निडाल होकर पड़ा था और उसके भीतर उस समय उन आदर्शों से बदला लेने की प्रतिहिंसा का भाव उफन रहा था ।

उस शाम भी शरत क्नाटप्लेस गया । यह संयोग की बात थी कि संतोष को हूँदने के लिए उसे मारा-मारा नहीं फिरना पडा । वह उसे जल्दी ही मिल गई । वह बस से उतरा ही था कि ओडियन सिनेमा के करीब पहुँच कर संतोष सामने आती हुई दिखाई दी । वह उसके पास आकर हँसते हुए बोली—

“कितनी अजीब बात है, आज भी उसी अवस्था में मिलाप हुआ है जैसे उस दिन हुआ था ।”

शरत उसकी मीठी स्वच्छ हँसी को गुंज को अपने अणु-अणु में महसूस करता हुआ पूछने लगा—“कैसी अवस्था में ?”

“भूल गए आर्टिस्ट, तुम्ही ने तो कहा था ऐक्सीडेंटल...?”

“वाकई बिल्कुल ऐक्सीडेंटल !”

“मगर आर्टिस्ट” संतोष कहने लगी—“ऐक्सीडेंटल क्या वह नहीं होता जिसकी हम पूर्वधारणा किए होते हैं ? थोड़ी देर पहले दफ्तर में बैठे हुए मैं आपके सम्बन्ध में ही सोच रही थी । मुझे यकीन था कि आप मुझे आज किसी समय जरूर मिलेंगे ।”

शरत को आर्टिस्ट का सम्बोधन अच्छा नहीं लगा । वह इस पर आपत्ति करता हुआ बोला—“आप मुझे आर्टिस्ट क्यों कहती हैं । मेरा नाम आर्टिस्ट नहीं शरत है ।”

संतोष ने उत्तर दिया—“मुझे आपका नाम याद है भूला नहीं । फिर भी मुझे आपको आर्टिस्ट कहते समय एक मीठी-सी अनुभूति होती है । आर्टिस्ट का सम्बोधन कितनी सूक्ष्म संवेदनाओं को अपने अन्दर छिपाये हुए है । मेरा

बाहें

मंगेतर भी एक आर्टिस्ट था। वह बहुत ही खूबसूरत कहानियाँ लिखता था। उसकी आँखें बिल्कुल तुम्हारी तरह थी।”

“वह कहाँ है ?”

“वह मर गया था लड़ाई में।”

शरत खोया-सा बोला—“तुम्हारा वह मंगेतर बिल्कुल मेरी तरह दिखाई देता था ?”

“हाँ ! और उसकी बातें करने का अंदाज़ भी आपकी ही तरह था। चलिए वहाँ बैठें।”

वह पार्क की तरफ संकेत कर रही थी। वे पार्क की तरफ चले आए। रास्ते में शरत ने कहा—“तब मैंने उस दिन ठीक कहा था आप भी मेरी तरह भटकी हुई हैं।”

“सो तो हूँ मगर मेरी जीने की अभिलाषा कभी परास्त नहीं हुई। देखिए मेरे गरम कोट को देखकर आप यह न समझ लें कि मैं कोई अमीर घराने की हूँ। मेरे पिता भी मर चुके हैं। मेरे दो भाई हैं और दो बहनें हैं जो स्कूल में पढ़ते हैं। उनकी खातिर मुझे नौकरी करनी पड़ती है और देखिए नौकरी के दौरान मैं मुझे बहुत ही नीच किस्म के आदमियों से दो-चार होना पड़ा है... इतने नीच कि मुझे बताते समय जुगुप्सा-सी होती है। वे समझते हैं कि मुझे नौकरी में रखकर वे मेरे ऊपर एहसान कर रहे हैं। उनका व्यवहार बहुत ही कुचेष्टपूर्ण होता था और तब मुझे बार-बार अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता था। ऐसे नीच होते हुए भी वे लोग अपने को भद्र समाज का कहते हैं।”

शरत बोला—“मैं इस समाज से नफ़रत करता हूँ। इसकी भद्रता पाखंड है और इसकी नैतिकता बिल्कुल खोखली है। वह बहुत ही धिनौनी हो चुकी है।”

संतोष ने कहा—“आर्टिस्ट हो। आपको तो सब मालूम है।”

“मगर सभी आर्टिस्ट ऐसा नहीं सोचते।”

“नहीं सोचते तो उन्हें अवश्य सोचना चाहिए। मैं आर्टिस्ट नहीं हूँ मगर

इतना अवश्य जानती हूँ कि साहित्य चाहे वह किसी भी युग में रहा हो उसे हमेशा ही वर्तमान की नैतिकता के उस ग्रंथ से लोहा लिया है जो अतीत की बर्बरता के साथ बँधा हो, जो हमें भविष्य की तरफ ले जाने की बजाए पीछे की तरफ ढकेल देना चाहता हो।”

“मैं आपके साथ पूर्णतयः सहमत हूँ। आप बहुत ही अच्छी बातें करती हैं। उस दिन तो आप कुछ भी नहीं बोली थी केवल मुस्कराती रही थी। उन मुस्कराहटों का महत्व भी मेरे लिए कम नहीं था। ऐसा लगा था कि जैसे पहली बार मेरी जिदगी के धुधलको को चीर कर एक तेजस्वी मूल्यवान किरन फूट पड़ी हो...लगा था जैसे एक लहर ने आकर मेरी चेतना की कोरों पर जमे हुए कीचड़ को परे ढकेल दिया हो और आज आपकी बातें सुनते समय महमूस होता है जैसे आप मेरी व्यथा को लेकर बोल रही हैं। मैं भी संघर्ष में बुरी तरह पिसा हूँ। आज के युग में कवि की चेतना पर लाखों बंदिशें हैं, नियमन हैं जब कि वह स्वतन्त्र रह कर समूची मानवीयता में तिरोहित हो जाना चाहती है। वह अपनी रोटी के लिए भी विवश है...फिर समाज की विडम्बनाएँ हैं जो उसके चहेते आदर्शों को व्यंग्य करने के लिए जगह-जगह खड़ी हो जाती है...।”

“हमें निराश नहीं होना चाहिए।”

वे बेंच पर बैठे थे। शरत ने उसका चेहरा देखना चाहा मगर रौशनी कम होने के कारण वह उसके चेहरे की धूमिल आकृति ही देख सका। दूर परे क्नाटप्लेस की बत्तियाँ लश-लश कर रही थी मगर यहाँ अँधेरा था, उनके अपने ही दुःखों की मानंद घना और रहस्यमय ! इसमें शालीनता थी...दिल के घावों पर अपनी स्नेहल मरहम लगा सकने की क्षमता थी इसमें ! और इसकी शरण में वही संरक्षक आत्मीयता का-सा भाव था जो कि एक व्यक्ति को बाहर गरजते हुए तूफान से डर कर अपने लिहाफ में दुबक कर महसूस होता है।...

संतोष ने पूछा—“आप कुछ सोच रहे हैं ?”

“हाँ।”

बाहें

[१०१]

“क्या ?”

“यह अंधेरा जिसकी शरण में हम बैठे हैं कितना आत्मीय है !”

संतोष कुछ क्षणों तक विमर्ष करती रही, फिर बोली—“वहाँ जो रौशनी है, उससे डरते हो ?”

“हाँ और उस शोर से भी। वहाँ जो इतना ट्रैफिक है...बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, मुझे उनसे भी डर आता है। उस शोर में एक तलखी है जो मेरी रूह को बेचैन-सा कर देती है। वे सड़कें मुझे मकड़ी के जाल की तरह फैली हुई दिखाई देती हैं और उन इमारतों को देखकर मुझे लगता है, जैसे वह शैतान की बाहें हों जो मेरी चेतना को जकड़ लेना चाहती हों। वहाँ हजारों लाखों लोग हैं जो मुझे समझ सकने की न तो समर्थ रखते हैं और न ही उन्हें आवश्यकता है। वे बहुत सभ्य हो गये हैं और वे अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं को मेटने के लिये दिन-रात संघर्ष करते हैं, झूठ बोलते हैं, छल करते हैं और उनकी आँखों में ऐसी नफरत है जैसे वे एक-दूसरे के दुश्मन हों। वे जीना चाहते हैं मगर नहीं जानते, जिया कैसे जाए और वे अपने ग्लानिजनक वर्तमान के साथ बुरी तरह चिमट गए हैं ..। यहाँ इस अंधेरे में आपके साथ बैठे हुए मुझे ऐसा लगता है जैसे हमारा एक नन्हा-सा द्वीप हो, जिसके चारों तरफ तूफानी लहरें डोल रही हैं ..शोर कर रही हैं।”

“संतोष ने कहा—“लगता है आप बहुत निराश हैं।”

“हाँ।”

.. “आर्टिस्ट को निराश नहीं होना चाहिए, भले ही वह कितना उदास क्यों न हो। उसे अपने भीतर के विश्वास से जीना चाहिए। उसके अन्दर मानवीयता की अद्भुत शक्ति रहती है और यदि वह निराश हो जाए तो वह दुनिया का क्या उपकार कर सकता है ? फिर वह भटक जाता है। उसकी चेतना खड-खड होकर टूट जाती है ..बिखर जाती है।”

शरत उतावला-सा होकर बोला—“आप बिल्कुल ठीक कहती हैं, जैसे आपने मेरे भीतर का सत्य जान लिया हो। आज के विकृत यथार्थ में मेरी चेतना सचमुच खंड-खंड होकर टूटी है और मैं टूट जाने की वेदना में निरन्तर

जला हूँ । मेरा ख्याल है अब संभवतः पहले जैसी अवस्था नहीं रहेगी और उसे नहीं रहना चाहिए...।”

वे कुछ देर और वहाँ बैठे रहे । फिर वे उठे और पटरी पर आ गए जिसके समक्ष कितने ही लाल और नीले मरकरी ट्यूबों के साईनबोर्ड थे जो कभी जल पड़ते और कभी बुझ जाते थे । नीचे बरामदों में जन-समूह बदस्तूर चला जा रहा था । संतोष ने ओडियन के पास आकर शरत से विदा ली ।

शरत बरामदे के स्तून के साथ आकर खड़ा हो गया। अब वह कुछ देख नहीं रहा था बल्कि कुछ महसूस कर रहा था। उसे लगा ..संतोष हाड-मांस की स्थूल आकृति न होकर कल्पना की एक रंगीन डोर है जो उसे बुलदियों पर ले गई हो। वह जैसे कल-कल करता हुआ भावनाओं का शीतल भरना हो। वह ऐसी खूबसूरत भी नहीं थी। वह युवा भी नहीं थी। उसकी कलाइयाँ रूखी-सूखी टहनियों की तरह थी। उसका चेहरा मुरझाया हुआ और पीला था मगर उसकी आँखों में बला की कशकश थी, जैसे वे उसके अतःकरण के मानसरोवर हों, जिनमें लहरों का कंपन हो, फूल भाँकते हो और आकाश की नीलिमा का अक्स दिखाई देता हो। उसकी नाक लम्बी और तीक्ष्ण थी, जैसे वह उसकी बौद्धिक सजगता की प्रतीक हो। उसके पतले-पतले ओठ उत्तेजक और आर्द्र थे। उसका स्मरण करते समय.. विशेषतया उसकी बातों का स्मरण करते समय उसे एक ऐसी मर्म-पीड़ा-सी हो रही थी जो एक बीज को मिट्टी की कारा से बाहर फूटते समय होती है, राख की तहों में सिमटी हुई चिगारी को अपनापन दिखाने में होती है...और वह बीज या चिगारी वास्तव में वह विश्वास था जो उसके अन्दर पैदा होने लगा था। अब वह जिएगा और कुछ करेगा।

चाय पीने के निमित्त वह वोल्गा में आ बैठा। उसे बैठे अभी चन्द मिनट ही हुए थे कि उसका पड़ोसी मि० गुप्ता अकारण हँसता हुआ उसकी तरफ चला आया और उसके पास आ बैठा। शरत ने आज तक उसके सत्संग को जरा भी पसन्द नहीं किया था और श्यामा की सहेली कुसुम उसी की पत्नी थी। शरत ने पूछा—

“आप यहाँ कैसे ?”

“मैं अपने बाम के साथ आया हूँ और उसे प्रमोशन के लिए मक्खन लगा रहा हूँ।”

शरत ने व्यग्य से अपने ओंठों को काट कर कहा—“खूब !”

“भई ! आज के जमाने में यही चलता है । अगर आप किसी की खुशामद करने का आर्ट समझ जाएँ तो तरक्की का रास्ता बिल्कुल साफ हो जाता है और किसी तरह की अडचन भी नहीं पड़ती । यह तत्व मैंने नौकरी में दस सालों तक भ्रम मार कर निकाला है ।”

शरत ने अपने भीतर कहा—“कितना बड़ा अध्यात्मिक तत्व निकाल लिया इसने ।” वह खीभ के मारे अपना दाढ़ी वाला हिस्सा खुजलाने लगा । मि० गुप्ता अपना गला साफ करते हुए कहने लगा—“मेरा ख्याल है मुझे प्रमोशन मिल जाएगा ।”

“कनग्रैचूलेयंज ।”

शरत का ख्याल था कि वह अपने मतलब का कनग्रैचूलेयंज पाकर चला जाएगा मगर वह गया नहीं और वह जैसे उत्साहित होकर बोला—“बहुत-बहुत शुक्रिया । मैं कहना चाहता हूँ शरत साहब, आप भी मेरे नक्शे-कदम पर चल कर देखिए । आप दिनों में और भी अच्छे हो जाएँगे ।”

“मैं जहाँ हूँ वहीं रहना चाहता हूँ और शायद यह भी न रहूँ । आपके नक्शे-कदम जरा ऊटपटांग हैं ।”

उसका रूखा-सा उत्तर पाकर मि० गुप्ता जरा भीकता हुआ बोला—“जैसी आपकी मर्जी । मैं तो आपको गुड-लक देने आया था ।”

“गुड-लक कैसी ?”

“आप बन रहे हैं । हो ! हो ! हो !” मि० गुप्ता बेहूदा ढंग से हँसने लगा ।

शरत को बहुत गुस्सा आया मगर वह इसे जब्त कर गया । वह कठिन-से लहजे में बोला—“आप कुछ बताएँगे भी या नहीं ।”

मि० गुप्ता कुर्सी छोड़कर उठता हुआ बोला—“थोड़ी देर पहले मैंने
बाहेँ

आपको एक स्त्री के साथ पार्क से निकलते हुए देखा था और वह स्त्री आपकी पत्नी नहीं थी। इसलिए मैं कहने आया था—गुड लक टु यू।”

इतना कह कर वह अपनी ऐड़ियों पर घूम गया और अपनी टेबल की तरफ चला गया।

शरत के मुंह से निकला—‘स्वाइन’। वह गुस्से से कुलकुलाता हुआ उठा, काउंटर पर चाय का बिल देकर वह बाहर चला आया।

अपने क्वार्टर में दाखिल होते वक्त वह सोच रहा था कि वह नई परिस्थिति का साहस के साथ सामना कर सकता है। अगर वह अपराधी है तो उसकी पत्नी श्यामा उस से कहीं ज्यादा अपराधी है जो कई महीने छोट-छोटी व्यवहारिक चीजों में उसे उलझा कर और बात-बात में अड़ंगा पैदा करके उसके मन के विश्वास और कृतित्व-चेतना को तहस-नहस करने पर तुली रही। कितनी विचित्र बात है कि अब वह नैतिक, सच्ची और कृतव्यपरायणा हो गई है। वह जिस घृणित परिस्थिति में पड़ा है वह इसका और अधिक खिलवाड़ नहीं कर सकता। आखिर वह भी एक जीव है...मनुष्य है। सहसा उसके जहन पर संतोष का चित्र उभर आया और उसे महसूस हुआ कि उसके संस्मरण में एक ऐसा भाव है जिस से वह अपनी परिस्थितियों के छल से बहुत ऊपर उठ सकता है...और श्वास ले सकता है।

अगले दिन दफ्तर जाने के समय तक शरत अन्यमनस्क रहा। वह श्यामा के सामने नहीं आया, जैसे वह उस से बच रहा हो। पाँच बजे जब वह लौटा तो उसने बरामदे में आकर सुना कि उसके ड्रायंगरूम से बहुत-सी आवाजें आ रही थीं। वह आगे जाते-जाते ठिठक गया। उसने सुना मि० गुप्ता की पत्नी कुसुम बोल रही थी—

“तुम कैसी फूहड़ हो श्यामा !”

“क्यों ?”

“पहले तुम मुझे यह बताओ कि तुमने कल वाली बात काय कीन किया है या नहीं कि तुम्हारे पति किसी औरत के साथ क्नाटप्लेस में धूम रहे थे ?”

शरत दो कदम पीछे हटकर और दरवाजे की ओट लेकर खड़ा हो गया। श्यामा ने लम्बी चुप्पी के बाद उत्तर दिया—“आखिर यह तुम मुझे क्यों सुना रही हो ?”

कुसुम कह रही थी—“देखा सरोज, श्यामा कैसी ऊटपटांग बातें कर रही है ?”

सरोज बोली—“मैं खुद हैरान हूँ। मेरा ख्याल है कुसुम उसने तुम्हारी बात का यकीन नहीं किया है। वह शायद यह चाहती है कि अपने पति से पूछे। बिल्कुल मूर्ख है न ? कभी पति लोग भी ऐसी बातें अपनी पत्नियों को बताया करते हैं।”

श्यामा ने उत्तर दिया—“मैं माने लेती हूँ ऐसी बात हुई होगी...।”

“फिर ?”

“मैंने शरत जी को अच्छी तरह देखा है, उनके दिल में किसी तरह का भी कपट नहीं। वह न तो बहक सकते हैं और न ही उन्हें बहकाया जा सकता है।”

कुसुम उसे भिडकती हुई बोली—“इसलिए तो मैंने कहा था कि तुम फूहड़ हो ! तुम्हारा पति तुम से विश्वास-घात करने लगे और तुम...।”

सरोज कुसुम से कहने लगी—“कुसुम जाने दे बहस को जब वह अपना स्याह-सफेद नहीं देख सकती, तुम बोल-बोल कर अपना गला क्यों खराब करती हो ? सुनो श्यामा मैं तुम से बीस साल बड़ी हूँ। यह परिस्थिति ऐसी नहीं कि तुम इस से आँखें मीच लो। आदमी को उतनी लगाम देनी चाहिए कि जिस से वह आसानी से चल सके। तुम ने तो बिल्कुल लगामें ही छोड़ दी हैं और तुम्हारा आदमी बदक न जाए तो और क्या करे ? जब मैंने उसे पहले-पहल यहाँ देखा था उसकी अजीब-सी शक्ल-सूरत को देख कर मुझे ख्याल आया था कि यह व्यक्ति जरा रोमांटिक किस्म का है। वह किसी पर भी रीझ सकता है और कोई भी उसे फुसला सकता है।”

प्रेमो जो अभी तक चुप बैठी थी बोली—“आर्टिस्ट जो हैं। उन्हें तो कोई भी खूबसूरत लड़की मिल जाए उस से प्रेम करने लगते हैं। अब देख लो कल शाम वाली बात...?”

शरत गुस्से के पेचोताप खाता हुआ सुन रहा था। श्यामा ने जो उत्तर दिया वह उसे विचित्र-सा लगा—“मैं जानती हूँ वह उस लड़की से प्रेम नहीं करते। वह किसी स्त्री से प्रेम नहीं करते।”

कुसुम ने हँसते हुए पूछा—“तुम से भी नहीं ?”

“नहीं ! वह अपने आदर्श को छोड़ और किसी से प्रेम नहीं करते। उन्हें मेरी आवश्यकता हो सकती हो और मुमकिन है उस लड़की की भी हो..।”

“उस लड़की की ! वह क्यों ?”

“हो सकता है वह मुझ से ज्यादा खूबसूरत हो...या मुझ से ज्यादा अच्छी

बातें कर सकती हो । मैं ठीक नहीं जानती मगर यह बात मैं जान चुकी हूँ कि उनके भीतर स्वच्छता है और वह कपट नहीं कर सकते ।”

शरत इतना सुनकर वहाँ से खिसक गया ।

श्यामा की सहेलियाँ बितर-बितर आँखों से उसकी तरफ देखती हुई, विचित्र-सी बातें सुनती रही । उनके चले जाने के बाद श्यामा बिस्तर में आकर फूट-फूट कर रो पड़ी ।

शरत जब लौटा शाम पड़ गई थी। उसके आने के कुछ देर पहले ही श्यामा बिस्तर से उठी थी और वह खूब रोई थी जितना वह रो सकती थी। रुलाई के चिल्लों को पोंछ डालने के लिए उसने पानी डाल कर अपना चेहरा खूब अच्छी तरह धो लिया था। मगर उसकी आँखों की सुर्खी अभी तक अवशेष थी। उसकी आँखों को देखकर शरत ने ताड़ लिया कि वह रोती रही है, वह बोला—“मालूम होता है बहुत रोती रही हो? मैं जानता हूँ .. कृतव्यपरायणता? यही बात थी न?”

श्यामा उठकर बाहर जाने लगी। शरत ने उसे रोकते हुए कहा—“कहाँ जा रही हो?”

“.....”

“अब तो तुम अपनी जुबान को कण्ठ भी नहीं देना चाहती जो किसी जमाने में सुपारी काटने वाली मशीन की तरह चला करती थी...कटकट-कटाकट! अयी लड़की, यह तुम्हे क्या होता जा रहा है?”

प्रकट था शरत परिहास कर रहा था। श्यामा ने पलकें उठाकर उसकी तरफ देखा। उसकी आँखें आँसूओं से छलक आना चाहती थीं। उसने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया और बहुत ही धीमे स्वर में बोली—

“तुम ने अभी चाय तो नहीं पी होगी?”

“जब देखो तुम्हें मेरी जरूरतों की फिक्र रहती है और इधर मैं हूँ... एक मुद्दत से मैंने तुम्हारी जरूरतों का ख्याल रखना छोड़ दिया है। मैं अपने मुँह से कहता हूँ कि मैं नीच हो गया हूँ मगर कितने लुप्त की बात है तुम्हें फिर भी विश्वास नहीं होता। कल सुबह मे तुम्हारे साथ कितना उलझ रहा

११४] बाहें

था। और मैंने तुम्हें कितना रुलाया था। अब तो तुम्हें विश्वास हो जाना चाहिए कि मैं . . .।”

श्यामा अपना हाथ उसके मुँह पर रखते हुए बोली—“क्यों कोसते हो अपने आप को?”

शरत ने उसका हाथ मुँह से हटाकर अपने हाथ में ले लिया और अपने दूसरे हाथ से इसे सहलाता हुआ बोला—“कल मेरी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं थी और जब मैं तुम्हारे साथ बातें कर रहा था उस समय मैं खीझ भी रहा था और शर्म से गढ़ा भी जा रहा था।”

श्यामा को लगा यह पूछने की आवश्यकता नहीं। शरत बदस्तूर उसके हाथ सहलाए जा रहा था। यों सहलाए जाने की अनुभूति उसे बहुत अर्से बाद हुई थी और उसके रोम-रोम में जैसे हल्का-हल्का नशा भर रहा था। वह चाहती थी कि वह उसके हाथों में बर्फ की तरह ढल जाए या मोम की तरह पिघल जाए। वह उस पुलक में आत्म-विभोर-सी होने लगी थी। तभी शरत की आवाज़ ने उसे जैसे झटका देकर चौंका दिया—

“शमी !”

“हूँ।”

“ . . . ”

श्यामा का स्पंदन जोर-जोर से बजने लगा था। वह इसकी आवाज़ को सुन सकती थी जो उसकी कनपटियों के पास शायं-शाय करने लगी थी। वह प्रतीक्षा में थी, शरत उसे जो कहने जा रहा था। एक कंपकंपी-सी उसके शरीर में दौड़ गई, जैसे उसने बिजली के नगे तार को छू दिया हो। उसका हाथ जिसे शरत सहलाते-सहलाते रुक गया था, ठण्डा पड़ता जा रहा था। शरत उसके हाथ को अपने से परे ठेलता हुआ बोला—

“यह तुम्हें एकाएक क्या हों गया है ? तुम्हारा हाथ ठण्डा क्यों पड़ गया है ? तुम काप क्यों रही हो ?”

“श्यामा ने साहस करके पूछा—“तुम कुछ कहने जा रहे थे ?”

बाहें

शरत ने उत्तर दिया—“मैं कुछ कहने नहीं . . . तुम्हें कुछ पूछने रहा था ।”

“पूछो ।”

शरत ने लम्बे विकल्प के बाद कहा—“मैं समझा करता था कि तु जड़ हो दुख देने में भी और दुख लेने में भी ! मगर जब तुम कांपने लगे और तुम्हारे हाथ का स्पर्श ठण्डा पड़ने लगा, मुझे सहसा लगा कि मैं तुम किस कदर गलत समझा था, जैसे तुम इन्सान ही न हो, जैसे तुम्हारे अन्दर प्रतिक्रियाएँ पैदा ही नहीं होतीं ।”

“मगर मैं जड़ हो जाना चाहती हूँ ! तब शायद मैं तुम्हारे लिए अघि आवश्यक हो सकूँ ।”

श्यामा ने ये शब्द बहुत ही साधारण ढंग से कहे थे मगर इनमें जो तीखी व्यंग्य था वह शरत के सीने में शूल की तरह जा चुभा । वह इसकी चुभन छटपटाता हुआ बोला—“श्यामा !”

वह कुछ सहम-सी गई । वह दबे से स्वर में कहने लगी—“पता ना क्यों तुम से कुछ सुनने की प्रतीक्षा मैं मुझे कंपकंपी-सी आने लगी । मेने ला चाहा कि यह कंपकंपी न आए, मेरा दिल न धड़के, मेरा हाथ सर्द न प जाए इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि मैं जड़ हो जाऊँ तो कितना अच्छा हो ।”

शरत मुस्कराता हुआ बोला—“और यह भी कहो न कि मेरे आने पहले तुम रों रही थीं और मैं जानता हूँ इसका सबब ।”

“क्या ?”

“तुम्हें यह सन्देह हुआ था कि मैं तुम्हारी चंगुल से बिसकता जा रहा हूँ यही बात थी न ?”

“तुम मुझ से चले जाओगे ऐसा सन्देह न हुआ था न होगा ।”

“और मेरा भी ख्याल है, मैं तुम्हारी चंगुल से छूट कर कहीं नहीं उ सकता ।” शरत ने यह वाक्य बहुत ही सीधे ढंग से कहा ।

थोड़े विकल्प के बाद फिर उसने कहा—“तुनो ! तुम्हें शायद पता नई जब तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हारे आगे मेरी दुश्चरित्रता की दोहाई दे रही थ

मैं वरामदे में खड़ा सुन रहा था। मुझे यह पाकर मर्मांतक दुःख हुआ कि तुम ने मुझे बुरा भला नहीं कहा। तुमने जो उत्तर दिए थे वे मुझे एकदम विचित्र-से लगे।”

“मैंने उनका मुँह बन्द कर दिया था।”

शरत हँसता हुआ बोला—“मेरा तो ख्याल है, वे तुम्हारा उपहास उड़ा रही थी और वाकई वैसी बातों को सुनकर वे उपहास ही तो उड़ा सकती थीं।”

“वे तुम्हारी महानता को कैसे समझ सकती हैं?”

सुनकर शरत जैसे तिलमिलाता हुआ कहने लगा—“शमी! मुझे तुम्हारी इन्हीं बातों से चिढ़-सी आने लगती है। जब मैं खुद समझता हूँ कि मैं अपराधी हूँ फिर तुम इसे महानता क्यों कहती हो?”

“क्या अपराध किया है?”

“एक ऐसी औरत के साथ जो मेरी पत्नी नहीं, उसके साथ मैं आत्मीयता की पीगें बड़ाऊँ और दिन-रात उसी के बारे में सोचता रहूँ। यह एक तरह का सामाजिक अपराध है जो मुझ से नहीं होना चाहिए था मगर मैं इसे करने के लिए विवश-सा हो गया था। यह मेरे लिए एक अजीब-सा अनुभव है। इसमें क्लेश भी है और उस क्लेश से सुख भी होता है..मेरी आत्मा में जैसे एक झरोखा खुल गया हो और अब मैं उन्मुक्त होकर कुछ सोच सकता हूँ... कुछ महसूस कर सकता हूँ।”

श्यामा उसके पास आ बैठी और उसके बालों में अंगुलियाँ फेरती हुई बोली—“और कहो चुप क्यों हो गए?”

“तुम्हें अच्छा लगता है?”

“अच्छा लग रहा है। इसीलिए तो कह रही हूँ।”

“मैंने शमी, तुम्हें एक दिन कहा था कि मेरे ऊपर जो विजड़ता का बोझ था वह हट गया है, वह उसी कारण हुआ था। मेरे भीतर जो व्यंग्य लिखते रहने से एक अंतर्जलन-सी रहती थी, वह भी अब नहीं। अब तो लगता है, मैं शीतलता में भीज रहा हूँ। मेरे ऊपर नन्ही-नन्हीं फुहार गिर रही हो, बहार के भोंके मदमस्त होकर बह रहे हैं और फूलों ने अपनी सुगंध बिखेर दी हो। इतना ही नहीं शमी, वह जैसे मेरे दुःख को समझती है क्योंकि बाहें

शरत ने उत्तर दिया—“मैं कुछ कहने नहीं . . . तुम्हें कुछ पूछने जा रहा था ।”

“पूछो ।”

शरत ने लम्बे विकल्प के बाद कहा—“मैं समझा करता था कि तुम जड़ हो दुख देने में भी और दुख लेने में भी ! मगर जब तुम कांपने लगीं और तुम्हारे हाथ का स्पर्श ठण्डा पड़ने लगा, मुझे सहसा लगा कि मैं तुम्हें किस कद्र गलत समझा था, जैसे तुम इन्सान ही न हो, जैसे तुम्हारे अन्दर प्रतिक्रियाएँ पैदा ही नहीं होतीं ।”

“मगर मैं जड़ हो जाना चाहती हूँ ! तब शायद मैं तुम्हारे लिए अधिक आवश्यक हो सकूँ ।”

श्यामा ने ये शब्द बहुत ही साधारण ढंग से कहे थे मगर इनमें जो तीखा व्यंग्य था वह शरत के सीने में शूल की तरह जा चुभा । वह इसकी चुभन से छटपटाता हुआ बोला—“श्यामा !”

वह कुछ सहम-सी गई । वह दबे से स्वर में कहने लगी—“पता नहीं क्यों तुम से कुछ सुनने की प्रतीक्षा में मुझे कपकंपी-सी आने लगी । मैंने लाख चाहा कि यह कंपकंपी न आए, मेरा दिल न धड़के, मेरा हाथ सदा न पड़ जाए इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि मैं जड़ हो जाऊँ तो कितना अच्छा हो ।”

शरत मुस्कराता हुआ बोला—“और यह भी कहो न कि मेरे आने से पहले तुम रों रही थीं और मैं जानता हूँ इसका सबब ।”

“क्या ?”

“तुम्हें यह सन्देह हुआ था कि मैं तुम्हारी चंगुल से खिसकता जा रहा हूँ । यही बात थी न ?”

“तुम मुझ से चले जाओगे ऐसा सन्देह न हुआ था न होगा ।”

“और मेरा भी ख्याल है, मैं तुम्हारी चंगुल से छूट कर कहीं नहीं जा सकता ।” शरत ने यह वाक्य बहुत ही सीधे ढंग से कहा ।

थोड़े विकल्प के बाद फिर उसने कहा—“तुनो ! तुम्हें शायद पता नहीं, जब तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हारे आगे मेरी दुश्चरित्रता की दोहाई दे रही थीं,

मैं वरामदे में खड़ा सुन रहा था। मुझे यह पाकर मर्मांतक दुःख हुआ कि तुम ने मुझे बुरा भला नहीं कहा। तुमने जो उत्तर दिए थे वे मुझे एकदम विचित्र-से लगे।”

“मैंने उनका मुँह बन्द कर दिया था।”

शरत हँसता हुआ बोला—“मेरा तो ख्याल है, वे तुम्हारा उपहास उड़ा रही थी और वाकई वैसी बातों को सुनकर वे उपहास ही तो उड़ा सकती थीं।”

“वे तुम्हारी महानता को कैसे समझ सकती हैं?”

सुनकर शरत जैसे तिलमिलाता हुआ कहने लगा—“शमी! मुझे तुम्हारी इन्हीं बातों से चिढ़-सी आने लगती है। जब मैं खुद समझता हूँ कि मैं अपराधी हूँ फिर तुम इसे महानता क्यों कहती हो?”

“क्या अपराध किया है?”

“एक ऐसी औरत के साथ जो मेरी पत्नी नहीं, उसके साथ मैं आत्मीयता की पीगें बढ़ाऊँ और दिन-रात उसी के बारे में सोचता रहूँ। यह एक तरह का सामाजिक अपराध है जो मुझ से नहीं होना चाहिए था मगर मैं इसे करने के लिए विवश-सा हो गया था। यह मेरे लिए एक अजीब-सा अनुभव है। इसमें क्लेश भी है और उस क्लेश से सुख भी होता है..मेरी आत्मा में जैसे एक झरोखा खुल गया हो और अब मैं उन्मुक्त होकर कुछ सोच सकता हूँ... कुछ महसूस कर सकता हूँ।”

श्यामा उसके पास आ बैठी और उसके बालों में अंगुलियाँ फेरती हुई बोली—“और कहो चुप क्यों हो गए?”

“तुम्हें अच्छा लगता है?”

“अच्छा लग रहा है। इसीलिए तो कह रही हूँ।”

“मैंने शमी, तुम्हें एक दिन कहा था कि मेरे ऊपर जो विजड़ता का बोझ था वह हट गया है, वह उसी कारण हुआ था। मेरे भीतर जो व्यंग्य लिखते रहने से एक अंतर्जलन-सी रहती थी, वह भी अब नहीं। अब तो लगता है, मैं शीतलता में भीज रहा हूँ। मेरे ऊपर नन्ही-नन्हीं फुहार गिर रही हो, बहार के झोंके मदमस्त होकर बह रहे हैं और फूलों ने अपनी सुगंध बिखेर दी हो। इतना ही नहीं शमी, वह जैसे मेरे दुःख को समझती है क्योंकि बाहें

शरत ने उत्तर दिया—“मैं कुछ कहने नहीं . . . तुम्हें कुछ पूछने जा रहा था ।”

“पूछो ।”

शरत ने लम्बे विकल्प के बाद कहा—“मैं समझा करता था कि तुम जड़ हो दुख देने में भी और दुख लेने में भी ! मगर जब तुम काँपने लगीं और तुम्हारे हाथ का स्पर्श ठण्डा पड़ने लगा, मुझे सहसा लगा कि मैं तुम्हें किस कद्र गलत समझा था, जैसे तुम इन्सान ही न हो, जैसे तुम्हारे अन्दर प्रतिक्रियाएँ पैदा ही नहीं होतीं ।”

“मगर मैं जड़ हो जाना चाहती हूँ ! तब शायद मैं तुम्हारे लिए अधिक आवश्यक हो सकूँ ।”

श्यामा ने ये शब्द बहुत ही साधारण ढंग से कहे थे मगर इनमें जो तीखा व्यंग्य था वह शरत के सीने में शूल की तरह जा चुभा । वह इसकी चुभन से छटपटाता हुआ बोला—“श्यामा !”

वह कुछ सहम-सी गई । वह दबे से स्वर में कहने लगी—“पता नहीं क्यों तुम से कुछ सुनने की प्रतीक्षा में मुझे कंपकंपी-सी आने लगी । मैंने लाख चाहा कि यह कंपकंपी न आए, मेरा दिल न धड़के, मेरा हाथ सदा न पड़ जाए इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि मैं जड़ हो जाऊँ तो कितना अच्छा हो ।”

शरत मुस्कराता हुआ बोला—“और यह भी कहो न कि मेरे आने से पहले तुम रों रही थीं और मैं जानता हूँ इसका सबब ।”

“क्या ?”

“तुम्हें यह सन्देह हुआ था कि मैं तुम्हारी चंगुल से खिसकता जा रहा हूँ । यही बात थी न ?”

“तुम मुझ से चले जाओगे ऐसा सन्देह न हुआ था न होगा ।”

“और मेरा भी ख्याल है, मैं तुम्हारी चंगुल से छूट कर कहीं नहीं जा सकता ।” शरत ने यह वाक्य बहुत ही सीधे ढंग से कहा ।

थोड़े विकल्प के बाद फिर उसने कहा—“तुनो ! तुम्हें शायद पता नहीं, जब तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हारे आगे मेरी दुश्चरित्रता की दोहाई दे रही थीं,

मैं वरामदे में खड़ा सुन रहा था। मुझे यह पाकर मर्मांतक दुःख हुआ कि तुमने मुझे बुरा भला नहीं कहा। तुमने जो उत्तर दिए थे वे मुझे एकदम विचित्र-से लगे।”

“मैंने उनका मुँह बन्द कर दिया था।”

शरत हँसता हुआ बोला—“मेरा तो ख्याल है, वे तुम्हारा उपहास उड़ा रही थी और वाकई वैसी बातों को सुनकर वे उपहास ही तो उड़ा सकती थीं।”

“वे तुम्हारी महानता को कैसे समझ सकती हैं?”

सुनकर शरत जैसे तिलमिलाता हुआ कहने लगा—“शमी! मुझे तुम्हारी इन्हीं बातों से चिढ़-सी आने लगती है। जब मैं खुद समझता हूँ कि मैं अपराधी हूँ फिर तुम इसे महानता क्यों कहती हो?”

“क्या अपराध किया है?”

“एक ऐसी औरत के साथ जो मेरी पत्नी नहीं, उसके साथ मैं आत्मीयता की पीछे बड़ाऊँ और दिन-रात उसी के बारे में सोचता रहूँ। यह एक तरह का सामाजिक अपराध है जो मुझ से नहीं होना चाहिए था मगर मैं इसे करने के लिए विवश-सा हो गया था। यह मेरे लिए एक अजीब-सा अनुभव है। इसमें क्लेश भी है और उस क्लेश से सुख भी होता है..मेरी आत्मा में जैसे एक झरोखा खुल गया हो और अब मैं उन्मुक्त होकर कुछ सोच सकता हूँ... कुछ महसूस कर सकता हूँ।”

श्यामा उसके पास आ बैठी और उसके बालों में अंगुलियाँ फेरती हुई बोली—“और कहो चुप क्यों हो गए?”

“तुम्हें अच्छा लगता है?”

“अच्छा लग रहा है। इसीलिए तो कह रही हूँ।”

“मैंने शमी, तुम्हें एक दिन कहा था कि मेरे ऊपर जो विजड़ता का बोझ था वह हट गया है, वह उसी कारण हुआ था। मेरे भीतर जो व्यंग्य लिखते रहने से एक अंतर्जलन-सी रहती थी, वह भी अब नहीं। अब तो लगता है, मैं शीतलता में भीज रहा हूँ। मेरे ऊपर नन्ही-नन्हीं फुहार गिर रही हो, बहार के झोंके मदमस्त होकर बह रहे हैं और फूलों ने अपनी सुगंध बिखेर दी हो। इतना ही नहीं शमी, वह जैसे मेरे दुःख को समझती है क्योंकि बाहें

उसने भी मेरी तरह बहुत दुख देखा है और तुम स्वयं देखो ऐसे व्यक्ति के सहवास में बैठे हुए हमें अपने भीतर कितनी सवेदना होने लगती है ! मैं सच कहता हूँ शमी, उसने मुझे जीने का विश्वास दिया है । उसने मुझे बताया था कि आर्टिस्ट को निराश नहीं होना चाहिए । उसे अपने विश्वास से जीना चाहिए ..उसके अन्दर मानवीयता की अद्भुत शक्ति रहती है, अगर आर्टिस्ट निराश हो जाए तो वह दुनिया का क्या उपकार कर सकता है । उसने कहा था कि निराश होकर आर्टिस्ट की चेतना खड-खंड होकर टूट जाती है और शमी, आज के विकृत यथार्थ में मेरी आत्मा सचमुच खड-खंड होकर टूटी है मगर अब मैं तुम्हें विश्वास से कहता हूँ, ऐसी बात नहीं होगी । उसने मेरी मुक्ति का द्वार खोल दिया है .. ।”

श्यामा मंत्र-मुग्ध सी मुन रही थी । उसकी अंगुलियाँ शरत के बालों में उलझ रही थी । फिर उसने उसे अपनी गोदी में लेटा लिया । उसने उसके माथे पर हाथ फेरा जो अब पहले की तरह तप नहीं रहा था । उसके स्पर्श में एक स्निग्ध शीतलता-सी थी । उसे गोदी में लेटाकर उसके रोम-रोम में उसी ममता का पुलक भर रहा था जो पहले अवसरों पर भी उसने महसूस किया था । उसने फिर पूछा—“वह काफी खूबसूरत भी होगी ?”

शरत ने उत्तर दिया—“साधारण अर्थों में खूबसूरती का जो मतलब लिया जाता है तब तो उसे खूबसूरत नहीं कहना चाहिए । उसमें आत्मा का सौंदर्य है । सच पूछो तो शमी, मैंने उसकी हाड-मांस की स्थूलता की तरफ कभी देखा ही नहीं । वह तो बस मेरे लिए एक छाया है...बस एक उद्बोधन है ! उसे मेरी आवश्यकता चाहे न हो ..मुझे उसकी है ।”

“बस इतने-से अपराध के लिए शर्म से गड़े जा रहे थे ? तुम भी बस . ।” श्यामा ताना देकर खिलखिला कर हँस पड़ी ।

शरत के बालों में निरन्तर अंगुलियाँ फेरी जाने के कारण उसे अब नींद आने लगी थी । श्यामा ने उसका सिर अपनी गोद से सरका कर साथ तकिए पर रख दिया । शरत की एक टाँग पलंग के ऊपर थी और दूसरी नीचे लटक रही थी । श्यामा ने वह टाँग ऊपर कर दी । फिर वह उसके बूटों के तश्में खोलने लगी ।

शरत एक हफ्ते बाद क्नाटप्लेस आया और आज वह पक्का निश्चय बनाकर आया था कि वह संतोष से मिलेगा। यहाँ आने से पहले उसने श्यामा को बता दिया था कि वह जिस अभिप्राय के लिए वहाँ जा रहा है और श्यामा ने हँसते-हँसते उसे स्वीकृति दे दी थी। वह तो इस बात के लिए भी अग्राह करने लगी थी कि उसे भी शरत अपने साथ ले जाए और उसका परिचय संतोष से करा दे मगर शरत ने उसे यह कह कर टाल दिया था कि वह संतोष के दफ़्तर का या उसके घर का पता नहीं जानता और ऐसी स्थिति में उसे ख़ाम-ख़ाह भटकना पड़ेगा और उसने यह भी कहा कि आज तक वह संतोष को जितनी बार मिल सका है वह सिर्फ़ ऐक्सीडेंट या चांस के सौजन्य से। उसने उसे हमेशा ही भीड़ में खोजा है और भीड़ में खो दिया है। मगर श्यामा की इतनी बात उसने ज़रूर मान ली थी कि अगर संतोष उसे आज मिल जाए तो वह उसे अपने साथ घर लाने की चेष्टा करे।...और उस समय वह यही बातें सोच रहा था जब वह सिंधिया-हाऊस के चौराहे पर खड़ा था और गोलाकार बरामदों के कई चक्कर लगाकर उसकी टाँगें और ज्यादा चलने से जवाब दे गई थीं...वे जैसे बिल्कुल काठ हो गई थी। उस समय रात भी उत्तर आई थी। वायुमंडल में सर्दी का प्रकोप भी बढ़ गया था, पश्चिमी हवा के रेले पागल कुत्तों की तरह दौड़ रहे थे। वह वैसे तो कुछ देर सुस्ताने के लिए आ खड़ा हुआ था और यों ही सुस्ता चुकने के बाद उसकी टाँगों का काठिण्य छँट जाता, उसका यह निश्चय था कि वह दोबारा चक्कर लगाएगा और संतोष को अपने सामने गुजरते हुए जन-समूह में से ढूँढ़ लेगा मगर साथ ही उसकी चेतना पर निराशा की पर्तें भी बैठने लगीं थी कि वह...यानी बाहें

संतोष उसे इतनी रात गए नहीं मिल सकेगी। वह यह भी जानता था कि क्नाटप्लेस की रौनक सिरफ़ आधे-पौने घंटे के लिए और थी। उसकी घड़ी में सवा आठ बजे थे और नौ बजते ही यह ट्रैफ़िक दूसरी सिमतों में चला जाएगा और ये लोग अपने बिलों में घुस जाएँगे। सिरफ़ वही लोग रह जाएँगे जो आमोद की तलाश में मारे-मारे फिर रहे होंगे। ..

थोड़ी देर बाद जब उसकी टाँगें चल सकने के काबिल हुईं, वह चौराहे से हटकर बरामदे में आ गया और चलने लगा। आध घंटा निरर्थक चलने के बाद भी संतोष उसे नहीं मिली। वह थक-टूट कर प्लाज़ा के पास आ खड़ा हुआ। उसकी मानसिक स्थिति ऐसे थी कि वह संतोष का नहीं मृग-छाया का पीछा कर रहा हो और छाया वस्तुतः अपने में कुछ नहीं थी...केवल एक छलना या भुलावे से अधिक भर नहीं थी मगर उसके आकर्षण में शरत के लिए अनुभूतियों के जो रंगीत संकेत छिपे थे, जिसने उसकी कल्पनाओं को अनजानी राहों पर दौड़ने के लिए उकसाया था और उसकी चेतना को गुलाबी उद्बोधन से सराबोर कर दिया था...यह सब भुलावा नहीं था बल्कि एक वास्तविकता थी ! सहसा चलते-चलते उसे एक परिचित-सी आवाज़ सुनाई दी। उसने मुड़ कर देखा...उसका मित्र कैलाश बोल्गा के दरवाज़े पर खड़ा था। संभवतः कैलाश पिए था। वह डगमगाता हुआ उसकी तरफ़ चला आया। उसने आते ही कहा—

“भई कहाँ भटक रहे हो ? मेने पी जरूर रखी है फिर भी तुम्हें पहचान सकता हूँ।”

“मैं एक चीज़ तलाश कर रहा हूँ और कितनी ही देर से भटक रहा हूँ।”

कैलाश ने परिहास किया—“बैसे भटकना तो तुम्हारी किस्मत में है। कई लोग हैं जिनके पैरों में चक्कर होता है और तुम्हारी तरह कई लोग ऐसे हैं जिनके दिमाग़ों में चक्कर होता है। तुम जिन्दगी भर भटकते रहोगे और जिस चीज़ की तुम्हें तलाश है वह शायद कभी न मिले।”

“यह तो मैं भी जानता हूँ” शरत कहने लगा—“मैं जिन्दगी भर भटकता रहूँगा और जिस चीज़ की मुझे तलाश है वह मुझे कभी नहीं मिलेगी।

मेरा कुछ बहुमूल्य ..कुछ कीमती इन्ही बड़ी-बड़ी इमारतों में खो गया है, इन मकड़ी के जाल की तरह फैली हुई सड़कों में उलझ गया है और इसे मुमकिन है ये लोग उठाकर ले गए हैं जिनके पास सिरफ़ पूंजी ही नहीं, एक खास तरह की व्यवस्था बनाए रखने की ताकत भी है ..।”

कैलाश ने उसे छेड़ते हुए कहा---“फिर शिद्दत से सोचने लगे ?”

“अच्छा सुनो ! तुम्हें याद होगा उस रात मैट्रो में वह जो लड़की मुझे बेहोश होता देखकर चीख पड़ी थी ..?”

“हाँ-हाँ ।”

“उसे मैं दो बार मिल चुका हूँ । वह भी मेरी तरह भटकी हुई है और हम अच्छी तरह एक दूसरे का दुःख समझते हैं । यकीनन् उसने मुझे नए सिरे से जिन्दा किया है । इस वजह से मेरी मानसिक स्थिति भी पहले से बहुत अच्छी है । इन दिनों मैं व्यंग्य नहीं, कविताएँ लिखता हूँ । श्यामा भी अच्छी हो गई है, वह इतनी अच्छी हो गई है कि वह ज़रा भी बुरा नहीं मनाती कि मैं उस लड़की से मिलकर दो-चार बातें कर लिया करूँ, क्योंकि जब वह मेरे लिए अपनी आवश्यकता समझती है तो यह भी समझ गई है कि वह लड़की मेरे लिए कितनी आवश्यक है ! ...भई मैं उसे कई घंटों से ढूँढ रहा हूँ । क्या तुम उसके बारे में कुछ बता सकते हो ?”

“हाँ मैं तुम्हें बता सकता हूँ । तुम जिसे ढूँढ रहे हो वह अब शायद तुम्हें न मिले ।”

शरत को धक्का-सा लगा । उसने फटी-फटी आँखों से उसे घूरते हुए पूछा—“क्यों ? क्या हुआ उसे ?”

“चार दिन हुए केशव मुझे बता रहा था कि वह उस लड़की को फुसलाना चाहता था मगर वह मानती नहीं थी । इस वजह से उसने उसे डिसमिस कर दिया है ।”

“हूँ ।”

सुनकर शरत को क्रोध नहीं आया और न ही उसने चाहा कि वह यहाँ से पागलों की तरह चीखता हुआ दौड़ जाए । उसके भीतर कोई चीज़ टूट रही बाहें

संतोष उसे इतनी रात गए नहीं मिल सकेगी। वह यह भी जानता था कि क्वाटप्लेस की रौनक सिरफ़ आधे-पौने घंटे के लिए और थी। उसकी घड़ी में सवा आठ बजे थे और नौ बजते ही यह ट्रैफ़िक दूसरी सिमतों में चला जाएगा और ये लोग अपने बिलों में घुस जाएँगे। सिरफ़ वही लोग रह जाएँगे जो आमोद की तलाश में मारे-मारे फिर रहे होंगे। ..

थोड़ी देर बाद जब उसकी टाँगें चल सकने के काबिल हुईं, वह चौराहे से हटकर बरामदे में आ गया और चलने लगा। आध घंटा निरर्थक चलने के बाद भी संतोष उसे नहीं मिली। वह थक-हूट कर प्लाज़ा के पास आ खड़ा हुआ। उसकी मानसिक स्थिति ऐसे थी कि वह संतोष का नहीं मृग-छाया का पीछा कर रहा हो और छाया वस्तुतः अपने में कुछ नहीं थी...केवल एक छलना या भुलावे से अधिक भर नहीं थी मगर उसके आकर्षण में शरत के लिए अनुभूतियों के जो रंगीत संकेत छिपे थे, जिसने उसकी कल्पनाओं को अनजानी राहों पर दौड़ने के लिए उकसाया था और उसकी चेतना को गुलाबी उद्बोधन से सराबोर कर दिया था ..यह सब भुलावा नहीं था बल्कि एक वास्तविकता थी ! सहसा चलते-चलते उसे एक परिचित-सी आवाज़ सुनाई दी। उसने मुड़ कर देखा...उसका मित्र कैलाश बोल्गा के दरवाज़े पर खड़ा था। संभवतः कैलाश पिए था। वह डगमगाता हुआ उसकी तरफ़ चला आया। उसने आते ही कहा—

“भई कहाँ भटक रहे हो ? मेने पी जरूर रखी है फिर भी तुम्हें पहचान सकता हूँ।”

“मैं एक चीज़ तलाश कर रहा हूँ और कितनी ही देर से भटक रहा हूँ।”

कैलाश ने परिहास किया—“बैसे भटकना तो तुम्हारी किस्मत में है। कई लोग हैं जिनके पैरों में चक्कर होता है और तुम्हारी तरह कई लोग ऐसे हैं जिनके दिमाग़ों में चक्कर होता है। तुम जिन्दगी भर भटकते रहोगे और जिस चीज़ की तुम्हें तलाश है वह शायद कभी न मिले।”

“यह तो मैं भी जानता हूँ” शरत कहने लगा—“मैं जिन्दगी भर भटकता रहूँगा और जिस चीज़ की मुझे तलाश है वह मुझे कभी नहीं मिलेगी।

मेरा कुछ बहुमूल्य ..कुछ कीमती इन्हीं बड़ी-बड़ी इमारतों में खो गया है, इन मकड़ी के जाल की तरह फैली हुई सड़कों में उलझ गया है और इसे मुमकिन है ये लोग उठाकर ले गए हैं जिनके पास सिरफ़ पूंजी ही नहीं, एक खास तरह की व्यवस्था बनाए रखने की ताकत भी है ..।”

कैलाश ने उसे छेड़ते हुए कहा ---“फिर शिद्दत से सोचने लगे ?”

“अच्छा सुनो ! तुम्हें याद होगा उस रात मैट्रो में वह जो लड़की मुझे बेहोश होता देखकर चीख पड़ी थी ..?”

“हाँ-हाँ ।”

“उसे मैं दो बार मिल चुका हूँ । वह भी मेरी तरह भटकी हुई है और हम अच्छी तरह एक दूसरे का दुःख समझते हैं । यकीनन् उसने मुझे नए सिरे से जिन्दा किया है । इस वजह से मेरी मानसिक स्थिति भी पहले से बहुत अच्छी है । इन दिनों में व्यंग्य नहीं, कविताएँ लिखता हूँ । श्यामा भी अच्छी हो गई है, वह इतनी अच्छी हो गई है कि वह ज़रा भी बुरा नहीं मनाती कि मैं उस लड़की से मिलकर दो-चार बातें कर लिया करूँ, क्योंकि जब वह मेरे लिए अपनी आवश्यकता समझती है तो यह भी समझ गई है कि वह लड़की मेरे लिए कितनी आवश्यक है ! ...भई मैं उसे कई घंटों से ढूँढ रहा हूँ । क्या तुम उसके बारे में कुछ बता सकते हो ?”

“हाँ मैं तुम्हें बता सकता हूँ । तुम जिसे ढूँढ रहे हो वह अब शायद तुम्हें न मिले ।”

शरत को धक्का-सा लगा । उसने फटी-फटी आँखों से उसे घूरते हुए पूछा—“क्यों ? क्या हुआ उसे ?”

“चार दिन हुए केशव मुझे बता रहा था कि वह उस लड़की को फुसलाना चाहता था मगर वह मानती नहीं थी । इस वजह से उसने उसे डिसमिस कर दिया है ।”

“हूँ ।”

सुनकर शरत को क्रोध नहीं आया और न ही उसने चाहा कि वह यहाँ से पागलों की तरह चीखता हुआ दौड़ जाए । उसके भीतर कोई चीज़ टूट रही बाहे

थी और इसे दृष्टते समय उसे गहरी मर्मांतक टीस-सी हो रही थी। वह कुछ भी कह सकने में असमर्थ था। समय जैसे थम गया हो और एकदम उसकी अन्तर्चेतना पर जैसे सन्नाटा-सा छा गया हो... वह जैसे धुंध से घिरा हुआ एक पत्थर हो ! ... कितने ही मिनट गुज़र गए।

कैलाश ने उसका कंधा झंझोड़ते हुए कहा—“मे तुम्हे बुला रहा हूँ... तुम सुनते क्यों नहीं हो ?”

“क्या ?”

“चलो, मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में छोड़ आऊँ।”

“कहाँ ?”

कैलाश ने मुस्कराते हुए कहा—“तुम्हारे घर ?”

वह उसके साथ चला आया। कार में बैठने से पहले उसकी अन्तर्चेतना पर जो सन्नाटा-सा छा गया था, वह कुछ कम हो गया था और वह दोबारा अपने वातावरण से सचेत होने लगा था। बरामदों के बाहर हरी-नीली बस्तियों के साए में दौड़ती हुई कारों के समूह, बिजली के कमकमे, उन्मत्त-सा शोर और गतिमान परछाईयाँ ! जब कार चली तो उसे लगा कि दैत्यों के आकार-सी इमारतें उसे अपनी बाहों में लपेट लेने के लिए आगे बढ़ रही हों और ये कोलतार की अंधी, निष्प्राण और काली सड़कें?
